● वर्ष-3
● अंक-68
रायपुर, शनिवार
28 अक्टूबर 2023
● पृष्ठ-8
● मूल्य-3 रु.
samacharpacheesa@gmail.com

।। संगच्छध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-6›› कटघोरा सामान्य सीट पर...

भाजपा ने आईयूएमएल को 'हमास समर्थक' बताया

थरूर की टिप्पणी हमास समर्थक समूहों और वामपंथी कार्यकर्ताओं सोशल मीडिया हमलों के बाद आई है

नईदिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की केरल इकाई ने फलस्तीन के समर्थन में निकाली गई इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग (आईयूएमएल) की रैली में शामिल होने के लिए कांग्रेस कार्य समिति (सीडब्लयूसी) के सदस्य और लोकसभा सांसद शशि थरूर की शुक्रवार को आलोचना की और इसे एक हमास समर्थक कार्यक्रम करार दिया। युद्ध ग्रस्त देश फलस्तीन के लोगों के साथ एकजुटता व्यक्त करने के लिए हजारों की तादाद में आईयूएमएल समर्थक बृहस्पतिवार को कोझिकोड की सड़कों पर उतरे थे, जिसके एक दिन बाद भाजपा की केरल इकाई के अध्यक्ष के. सुरेन्द्रन ने चिंता जताई कि संघर्ष का इस्तेमाल राज्य में सांप्रदायिक तनाव को भड़काने के लिए किया जा रहा है।उन्होंने यहां संवाददाताओं को संबोधित करते हुए आरोप लगाया कि कोझिकोड में आईयूएमएल की रैली हमास के समर्थन में थी और रैली के दौरान राष्ट्रविरोधी नारे भी लगाए गए। भाजपा नेता ने आरोप लगाया कि रैली में थरूर की भागीदारी, इस मुद्दे पर देश के रुख के खिलाफ है। उन्होंने कहा कि थरूर वैसे भी पूर्व में संयुक्त राष्ट्र के राजदूत की भूमिका निभा चुके हैं। सुरेन्द्रन ने दावा किया कि रैली में थरूर की मौजूदगी सांप्रदायिक समूहों से

वोट मांगने का एक प्रयास है। उन्होंने कहा, मेरा मानना है कि हमास का समर्थन करना देशद्रोह है। उन्होंने थरूर पर आगामी लोकसभा चुनाव से पहले सांप्रदायिक ध्रुवीकरण का लाभ उठाने का प्रयास करने का आरोप लगाया। सुरेन्द्रन ने कहा, अब यह स्पष्ट हो चुका है कि वे (कांग्रेस) क्या चाहते हैं।उन्हें शांति नहीं, वोट चाहिए। भाजपा नेता ने आईयूएमएल के वरिष्ठ नेता और विधायक एम.के. मुन्नेर पर 'हमास आतंकियों' की तुलना सुभाष चंद्र बोस और भगत सिंह जैसे स्वतंत्रता सेनानियों से करने का भी आरोप लगाया। इससे पहले, थरूर ने फलस्तीन के लोगों के लिए समर्थन पर अपना रुख स्पष्ट करते हुए कहा कि उनके भाषण से एक पंक्ति को निकालकर उसे तोड़-मरोड़कर पेश किया जा रहा है।

रैली में अपने संबोधन को लेकर थरूर को आलोचना का भी सामना करना पड़ रहा है। आईयूएमएल ने बृहस्पतिवार को कोझिकोड में एक विशाल रैली का आयोजन किया था, जिसमें ग़ाज़ा पर इजराइली हमले में बेगुनाह लोगों की हत्या की निंदा की गई थी। केरल में कांग्रेस नीत यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (यूडीएफ) में आईयूएमएल एक प्रमुख घटक है।रैली में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए थरूर ने ग़ाज़ा में जारी युद्ध की निंदा की थी और पिछले 19 दिनों से जारी युद्ध को सबसे दुखद मानवाधिकार आपदाओं में से एक करार दिया था।

शशि थरूर के बयान से विवाद

वरिष्ठ कांग्रेस नेता और लोकसभा सांसद शशि थरूर उस समय विवादों में घिर गए जब उन्होंने इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग (आईयूएमएल) की रैली में अपने भाषण के दौरान 7 अक्टूबर के हमास हमलावरों को आतंकवादी कहा। आईयूएमएल की रैली फिलिस्तीनियों के साथ एकजुटता दिखाने के लिए आयोजित की गई थी। सीपीआई (एम) नेता एम स्वराज ने कहा कि थरूर ने जो किया वह आईयूएमएल की कीमत पर इज़राइल एकजुटता बैठक थी।हमास समर्थक समूहों और वामपंथी कार्यकर्ताओं के एक वर्ग के हमलों का सामना करने के बाद, शशि थरूर ने शुक्रवार को कहा कि 27 अक्टूबर को फिलिस्तीन समर्थक रैली में उनकी टिप्पणियों के कारण हुए विवाद के बारे में जानकर वह हतप्रभ थे। उन्होंने कहा कि कुछ लोगों ने ऐसा करना चुना। इज़राइल-हमास संघर्ष पर उनके 32 मिनट के भाषण के एक छोटे से हिस्से पर ध्यान दें।शशि थरूर ने केरल के कोझिकोड हवाईअड्डे पर मलयालम में मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि मैं उन लोगों द्वारा मुझ पर किए गए हमलों के बारे में जानकर कुछ हद तक चकित हूं।

उन्होंने कहा कि अगर फ़िलिस्तीनी लोगों के मानवाधिकारों के प्रति मेरे समर्थन को नकारने के लिए बस इतना ही ज़रूरी है, तो मेरे पास कहने के लिए और कुछ नहीं है। थरूर की टिप्पणी हमास समर्थक समूहों और वामपंथी कार्यकर्ताओं के एक वर्ग के तीव्र सोशल मीडिया हमलों के बाद आई है। केरल में कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (यूडीएफ) की प्रमुख सहयोगी इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग (आईयूएमएल) ने कोझिकोड में फिलिस्तीन एकजुटता रैली का आयोजन किया था। यह रैली गाजा पर इजरायली हमलों के कारण महिलाओं और बच्चों सहित नागरिकों की कथित अंधाधुंध हत्याओं की निंदा करने के लिए आयोजित की गई थी।

इकोनॉमी ने दी आशा, चुनौतियों को अवसरों में बदला : मुर्मू

नईदिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शुक्रवार को कहा कि भारत को समुद्री क्षमता का पूर्ण दोहन करने से पहले देश के बंदरगाहों की ढांचागत और परिचालनगत चुनौतियों को दूर करने सहित कई चुनौतियों से पार पाने की जरूरत है। मुर्मू ने कहा कि समुद्र पार करने के बारे में रूढ़िवादी सोच और आशंकाएं हमें महंगी पड़ीं, लेकिन अंततः भारत 200 वर्षों के औपनिवेशिक शासन के चंगुल से बाहर आया। उन्होंने कहा कि यह महाद्वीपीय विकास पर अधिक केंद्रित हो गया और यह भूल गया कि महाद्वीपीय विकास और नौवहन विकास परस्पर पूरक हैं। भारतीय समुद्री विश्वविद्यालय (आईएमयू), चेन्नई के आठवें दीक्षांत समारोह में राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा, ''निसंदेह, हमारे पास पूरी तरह से एक मजबूत समुद्री उपस्थिति स्थापित करने के लिए आर्थिक और औद्योगिक संसाधनों की भी कमी थी।

उन्होंने कहा कि देश इस क्षेत्र की संभावनाओं का पूरी तरह से लाभ उठा पाए, उससे पहले भारत को कई चुनौतियों से पार पाना होगा। मुर्मू ने कहा, ''उदाहरण के लिए गहराई संबंधी प्रतिबंधों के कारण कई मालवाहक जहाजों को पास के विदेशी बंदरगाहों की ओर मोड़ दिया जाता है। व्यापारिक और नागरिक जहाज निर्माण उद्योग में हमें दक्षता, प्रभावशीलता और प्रतिस्पर्धा के उच्चतम मानकों का लक्ष्य रखना होगा। उन्होंने कहा कि भारतीय बंदरगाहों की परिचालन दक्षता और (जहाजों के) लौटने के समय के वैश्विक औसत मानक से मेल खाने की जरूरत है। उन्होंने यह भी कहा कि जब वार्षिक 'पोर्ट कॉल' की बात आती है तो देश शीर्ष 20 देशों में शामिल नहीं होता। उन्होंने कहा कि दुनिया भर के 50 सर्वश्रेष्ठ कंटेनर बंदरगाहों की सूची में भारत के केवल दो ही बंदरगाह हैं।

'पोर्ट कॉल' किसी जहाज के कार्गो परिचालन या सामान या ईंधन परिवहन के लिए निर्धारित यात्रा के दौरान बीच में रुकने को कहा जाता है। उन्होंने कहा कि भारतीय बंदरगाहों को अगले स्तर पर पहुंचने से पहले निश्चित रूप से बुनियादी ढांचा एवं संचालनगत चुनौतियों से निपटना होगा। ''हमारे मछली पकड़ने के अधिकतर जहाज अब भी मशीनीकृत किए जाने बाकी हैं। इस संदर्भ में ''बंदरगाह विकास से ''बंदरगाह आधारित विकास की दिशा में 'सागरमाला' कार्यक्रम उल्लेखनीय कदम है। उन्होंने कहा कि सागरमाला द्वारा परिकल्पित बंदरगाह-आधारित विकास के पांच स्तंभों में बंदरगाह आधुनिकीकरण, बंदरगाह कनेक्टिविटी, बंदरगाह-आधारित औद्योगीकरण, तटीय सामुदायिक विकास और तटीय शिपिंग या अंतर्देशीय जल परिवहन शामिल हैं।

शरद पूर्णिमा पर लगने जा रहे इस चंद्र ग्रहण के मौके पर काशी विश्वनाथ मंदिर में गर्भ गृह को निर्धारित समय के लिए बंद किया जाएगा। इसकी जानकारी मंदिर प्रशासन की ओर से दी गई है। चंद्र ग्रहण के बाद मंदिर में विधिवत पूजा होगी और मंगला आरती के बाद आम भक्तों के लिए मंदिरों के कपाट खोले जाएंगे।

तेलंगाना में पिछड़े वर्ग से मुख्यमंत्री बनेगा: अमित शाह

हैदराबाद। गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को वादा किया कि अगर भाजपा तेलंगाना में सत्ता में आई तो पिछड़े वर्ग से किसी नेता को मुख्यमंत्री बनाया जाएगा। सूर्यापेट में एक सार्वजनिक बैठक को संबोधित करते हुए, उन्होंने लोगों से भाजपा को सत्ता में लाने का आग्रह किया और घोषणा की कि पार्टी पिछड़े वर्ग से एक उम्मीदवार को मुख्यमंत्री बनाएगी।उन्होंने कहा कि न तो भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) और न ही कांग्रेस तेलंगाना का भला कर सकती है। केवल भाजपा ही तेलंगाना का समग्र विकास सुनिश्चित कर सकती है।केंद्रीय गृह मंत्री ने वंशवादी राजनीति को बढ़ावा देने के लिए दोनों विरोधी दलों की आलोचना की। उन्होंने कहा, दोनों पार्टियों का लक्ष्य एक ही है। केसीआर केटीआर को मुख्यमंत्री बनाना चाहते हैं और सोनिया गांधी राहुल गांधी को प्रधानमंत्री बनाना चाहती हैं।

यह दावा करते हुए कि भाजपा का उद्देश्य गरीबों का कल्याण है, उन्होंने आरोप लगाया कि बीआरएस और कांग्रेस दोनों का उद्देश्य अपने-अपने परिवारों का कल्याण है।

उन्होंने दावा किया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केवल भाजपा ही तेलंगाना को विकास के पथ पर आगे ले जा सकती है।भाजपा नेता ने

बीआरएस को गरीब विरोधी, दलित विरोधी और पिछड़ा वर्ग विरोधी करार दिया। उन्होंने कहा, केसीआर ने वादा किया था कि अगर वे सत्ता में आए तो एक दलित को मुख्यमंत्री बनाएंगे। मैं केसीआर से पूछना चाहता हूं कि आपके वादे का क्या हुआ।उन्होंने कहा कि केसीआर ने दलित परिवारों को तीन-तीन एकड़ जमीन और रुपये, अनुसूचित जाति के लिए 50 हजार करोड़ रुपये और पिछड़ा वर्ग के कल्याण के लिए हर साल 10 हजार करोड़ रुपये का बजट देने का भी वादा किया था।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी पिछड़ा वर्ग (बीसी) के लिए कई योजनाएं लाए। उन्होंने पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा दिया।शाह ने दावा किया कि केंद्र ने पिछले 10 साल में तेलंगाना के विकास के लिए 25 लाख करोड़ रुपये दिये। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने सम्मक्का सरक्का जनजातीय विश्वविद्यालय की स्थापना की घोषणा करके तेलंगाना की अनुसूचित जनजातियों को सम्मानित किया है।उन्होंने तेलंगाना में राष्ट्रीय हल्दी बोर्ड बनाने की प्रधानमंत्री की हालिया घोषणा का उल्लेख किया।उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने तेलंगाना के अधिकारों की रक्षा के लिए कृष्णा जल विवाद न्यायाधिकरण का भी गठन किया।

जनसभा को प्रदेश भाजपा अध्यक्ष जी. किशन रेड्डी और अन्य भाजपा नेताओं ने भी संबोधित किया।

प्रमुख समाचार

सत्ता विरोधी लहर से राजस्थान में भाजपा जीतेगी: पूनिया

नई दिल्ली। राजस्थान विधानसभा में प्रतिपक्ष के उपनेता सतीश पूनिया ने शुक्रवार को कहा कि बूथ स्तर पर मजबूत संगठन, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की छवि और कांग्रेस सरकार के खिलाफ सत्ता विरोधी

लहर से भाजपा को राज्य में 25 नवंबर को विधानसभा चुनाव में भारी जीत मिलेगी। उन्होंने कहा, ''भाजपा अपने मजबूत संगठनात्मक ढांचे, लोकप्रिय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की छवि और उनके कार्यों के कारण चुनाव जीतने जा रही है। राज्य के प्रमुख जाट नेता ने कहा, ''हर किसी को मोदी की छवि पर भरोसा है। अगर भरोसेमंद चेहरे पर चुनाव लड़ा जाता है तो इसमें कुछ भी गलत नहीं है। यह एक नैतिक निर्णय है क्योंकि मोदी पार्टी कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाते हैं। राजस्थान में भाजपा की जीत में मोदी एक बड़ा कारक होंगे। उन्होंने राज्य में चुनाव अभियान का नेतृत्व करने को लेकर प्रियंका गांधी पर निशाना साधते हुए कहा कि कांग्रेस कभी भी एक परिवार से बाहर नहीं आ सकती। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की महासचिव प्रियंका गांधी एक सप्ताह के भीतर दौसा और झुंझुनू में सार्वजनिक रैलियां कर चुकी हैं।

नायब सिंह सैनी बने हरियाणा बीजेपी के नए अध्यक्ष

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने शुक्रवार को हरियाणा के वरिष्ठ नेता नायब सिंह सैनी को पार्टी का नया प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया। भाजपा के कुरूक्षेत्र से सांसद सैनी, भगवा पार्टी के

नए हरियाणा प्रमुख के रूप में ओम प्रकाश धनखड़ की जगह लेंगे। इस बीच, धनखड़ को पार्टी का राष्ट्रीय सचिव नियुक्त किया गया है। गौरतलब है कि ये नियुक्तियां बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने शुक्रवार को कीं। पार्टी के एक संदेश में कहा गया है कि जाट धनखड़ को पार्टी का राष्ट्रीय सचिव नियुक्त किया गया है। सैनी (50) की नियुक्ति से पार्टी को ओबीसी समुदाय के बीच अपनी पकड़ मजबूत करने में मदद मिल सकती है क्योंकि राज्य में सबसे अधिक आबादी वाले समुदाय जाटों का समर्थन काफी हद तक कांग्रेस, जेजेपी और आईएनएलडी के बीच बंटा हुआ नजर आता है। भाजपा पहले से ही जननायक जनता पार्टी (जेजेपी) के साथ गठबंधन में है, जिसके नेता दुष्यंत चौटाला राज्य के उपमुख्यमंत्री हैं। धनखड़ को जुलाई 2020 में हरियाणा भाजपा प्रमुख नियुक्त किया गया था और इस साल जुलाई में उनका कार्यकाल पूरा हुआ।

बीएस-3 और 4 डीजल बसों की एंट्री पर रोक

नई दिल्ली। राजधानी में वायु गुणवत्ता खराब श्रेणी में पहुंच गया है। ऐसे में इससे निपटने के लिए अलग-अलग पाबंदियां लगाई जा रही हैं। इसी कड़ी में एक नवंबर से एनसीआर से दिल्ली आने वाले वाहनों में बीएस-तीन और बीएस- चार डीजल बसों की एंट्री पर रोक रहेगी। इसका असर यात्रियों की सुविधा पर दिखने को मिल सकता है। वायु प्रदूषण की रोकथाम के लिए दिल्ली में केवल इलेक्ट्रिक, सीएनजी और बीएस-छह के अनुपालक डीजल बसों को संचालित किया जाएगा। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने घोषणा करते हुए कहा है कि एक नवंबर से केवल इलेक्ट्रिक, सीएनजी और बीएस छह-अनुपालक डीजल बसों को संचालित करने की अनुमति दी जाएगी। बता दें यह नियम निजी बसों में भी लागू होगा। परिवहन विभाग के मुताबिक उत्तर प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, राजस्थान परिवहन विभाग की प्रतिदिन कई बसें चलती हैं। वहीं, निजी बसें भी रोजाना हजारों की संख्या में चलती है। ऐसे में निजी बस मालिकों ने इस नियमों को लेकर विरोध जताना शुरू कर दिया है। बस मालिकों का कहना है कि प्रदूषण में सबकी भागीदारी है, ऐसे में केवल बसों पर प्रतिबंध लगाना उचित नहीं है।

मेट्रो रेल नेटवर्क दो-तीन साल में अमेरिका को पछाड़ देगा: पुरी

नईदिल्ली। केंद्रीय आवास एवं शहरी मामलों के मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने शुक्रवार को कहा कि भारत के मेट्रो नेटवर्क की लंबाई अगले दो-तीन वर्षों में अमेरिका से अधिक हो जाएगी और दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा बन जाएगा। वर्तमान में देश का मेट्रो नेटवर्क दुनिया में तीसरा सबसे बड़ा है।यहां 16वें अर्बन मोबिलिटी इंडिया (यूएमआई) सम्मेलन सह एक्सपो 2023 के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए मंत्री ने कहा कि देश में मेट्रो नेटवर्क के विकास की गति में हाल के वर्षों में अभूतपूर्व वृद्धि देखी गई है।, 2014 में भारत में केवल 248 किमी मेट्रो रेल लाइन थी। केवल नौ साल में आज 20 अलग-अलग शहरों में 895 किलोमीटर मेट्रो लाइनें चालू हैं। मेट्रो नेटवर्क हमारे नागरिकों के जीवन में आराम, स्थिरता और सुरक्षा लाया है। उन्होंने कहा, मुझे यह जानकर खुशी हुई कि मेट्रो नेटवर्क में प्रतिदिन लगभग एक करोड़ यात्री सफर करते हैं। अंतिम कनेक्टिविटी में आसानी और अन्य कारकों से सवारियों की संख्या बढ़ने वाली है। कि शहरी परिवहन से संबंधित मुद्दों के प्रति सरकार के दृष्टिकोण में 2014 के बाद एक महत्वपूर्ण बदलाव देखा गया है। इस अवधि के दौरान तेजी से शहरीकरण को चुनौती की बजाय एक अवसर के रूप में अपनाया गया है।

नए भारत के भी शिल्पी हैं पीएम मोदी: सीएम योगी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को वरिष्ठ पत्रकार अजय कुमार सिंह की पुस्तक नई भाजपा के शिल्पकार के विमोचन कार्यक्रम को संबोधित किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कार्यशैली पर आधारित यह पुस्तक नई भाजपा के शिल्पकार मूल रूप से अंग्रेजी में लिखी गई कृति द आर्किटेक्ट ऑफ न्यू बीजेपी का अनुवाद है। हिन्दी संस्करण का अनुवाद सुनील त्रिवेदी ने किया है।इस दौरान सीएम योगी ने कहा कि 22 जनवरी 2024 को भव्य मंदिर में भगवान रामलला विराजमान होने जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा ही देश की इकलौती पार्टी है जो कहती है देश पहले, फिर पार्टी, उसके बाद परिवार और अंत में खुद के हित को रखना चाहिए।सीएम योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में नई भाजपा और देश का स्वर्णिम काल चल रहा है। भाजपा की कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं है। भाजपा जो कहती है वो करती है। अब कश्मीर कोई मुद्दा नहीं रह गया है। आज पीओके के लोग कहते हैं, हमें भी भारत का हिस्सा बनाइए। 2014 से पहले के पूर्वोत्तर भारत और आज के पूर्वोत्तर भारत में जमीन आसमान का अंतर था। देश में प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में सरकार बनने से वहां के लोगों को पहली बार अहसास हुआ है।

यदा-कदा

डर और क्षत्रप

डर बुरी चीज़ है । डरे हुए आदमी की बातें और काम अलग होते हैं, हालांकि डरा हुआ आदमी जोर-शोर से दिखाता है कि वह डरता नहीं। कभी-कभी डर को छिपाने की इतनी कोशिश होती है कि उससे ही डर झलकने लगता है। राजनीति में अक्सर ऐसा होता रहता है।

आजकल छत्तीसगढ़ में चुनावी माहौल है। इसकी गर्मी दिन-दिन बढ़ती जा रही है। पार्टियाँ ही श्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहती हैं, ऐसा नहीं है । नेता भी व्यक्तिगत रूप से अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहते हैं, लेकिन खराब परिणाम का डर साये की तरह साथ चलता है । छत्तीसगढ़ में दोनों मुख्य पार्टियाँ जनता को प्रभावित करने के साथ-साथ भ्रमित करने के लिए दाँव आजमा रही हैं।

दो माह पहले के दिन याद करें । यहाँ की हवा में 'भूपेश है, तो भरोसा है' के नारे गूंज रहे थे । इसी झोंक में काँग्रेस पार्टी ने 'भरोसे का सम्मेलन' किया और संभागीय बैठकों को भी ऐसा ही नाम दिया। काँग्रेस के 'फील गुड' वाले आत्मविश्वास को पहला झटका तब लगा, जब भारतीय जनता पार्टी ने चुनाव की घोषणा से बहुत पहले अचानक 23 प्रत्याशियों की घोषणा कर दी। काँग्रेस जिस शेड्यूल पर चल रही थी, उसे तत्काल रोका गया और प्रत्याशी चयन की प्रक्रिया शुरू की गयी - यह राजनीतिक रूप से पिछड़ने का डर था, जो राजनीति को पढ़ने वालों ने पढ़ लिया।

छत्तीसगढ़ में छह महीनों से काँग्रेसी खेमे के भीतर भय बैठ गया है केन्द्रीय जाँच एजेंसियों का। जब भूपेश बघेल उत्सवपूर्वक अपना जन्मदिन मना रहे थे, उनके बहुत विश्वासयोग्य साथी और राजनीतिक सलाहकार के बंगले पर प्रवर्तन निदेशालय का दल जाँच करने घुसा हुआ था । हर बार रायपुर से केन्द्रीय एजेंसियों को कोसने वाले भूपेश बघेल राष्ट्रीय स्तर पर ईडी की भर्त्सना करने के लिए नयी दिल्ली पहुँच गये । राजनीति के जानकार जान गये कि उनका डर बढ़ गया है।

पिछले 9 अक्टूबर को चुनाव कार्यक्रमों की घोषणा के साथ आचार सँहिता लागू हो गयी । मुख्यमंत्री केवल कार्यवाहक मुख्यमंत्री रह गये । बड़े नेताओं के दौरे पर दौरे हो रहे हैं । दोनों दलों के सर्वे अभियानों में तेजी आ गयी। दो बड़ी तथा पेशेवर सर्वे एजेंसियों ने पाया कि भारतीय जनता पार्टी का ग्राफ ऊपर जा रहा है । एक एजेंसी ने बताया कि भाजपा को 38 सीटें मिल रही हैं, तो दूसरी एजेंसी ने 45 सीटों का अनुमान जताया । काँग्रेस के असली संचालक भूपेश बघेल ही हैं, इसलिए उन्हें सत्ता खोने का डर सताने लगा । जब उन्होंने समय से पहले घोषणा-पत्र का ब्रम्हास्त्र चलाकर घोषणा की कि सरकार बनने के बाद वे पिछली बार की तरह किसानों का कर्ज माफ कर देंगे, तब राजनीति के पंडितों ने फिर से डर के स्तर को बढ़ते हुए महसूस किया।

कोविड महामारी के दो सालों के बाद उन्होंने 90 विधानसभा क्षेत्रों में जनता के बीच जाने के लिए 'भेंट-मुलाकात कार्यक्रम' शुरू किया । आम जनता से खुद को जोड़ने का हुनर उनमें बहुत है । उन्होंने अपनी न्याय योजनाओं को जनता तक पहुँचाया और जनता के बीच का आदमी होने की मजबूत छवि बनायी । अजीज जोगी एवं डॉ. रमन सिंह मुख्यमंत्री रहे, किन्तु क्षत्रप नहीं बन पाये । गत पाँच सालों में भूपेश बघेल शुक्ल बंधुओं के बाद छत्तीसगढ़ के नये क्षत्रप बनकर उभरे हैं । काँग्रेस के बड़े नेताओं का आना-जाना जारी है । उनकी सभाएँ हो रही हैं, लेकिन वे जनता में कितना प्रभाव छोड़ रहे हैं, यह बड़ा सवाल है । भूपेश बघेल के हाथों में काँग्रेस को जिताने की जिम्मेदारी इसलिए भी है, क्योंकि टिकिटों के वितरण में उनकी एकतरफा मानी गयी है । ऐसे में उनके राजनीतिक कौशल के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक समझ की भी परीक्षा है, क्योंकि सोशल मीडिया के बढ़ते हुए प्रभाव के कारण चुनाव अब 'परसेप्शन' (धारणा-निर्माण) का खेल हो गया है ।

इसी बीच एक दूसरे चुनावी राज्य राजस्थान में ईडी ने वहाँ के काँग्रेस अध्यक्ष के घर पर छापा मारा और मुख्यमंत्री के बेटे वैभव गहलोत को बुलावा-पत्र भेज दिया । इस खबर ने भूपेश बघेल को नये सिरे से डरा दिया । उन्होंने इधर तुरंत बयान दिया कि रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर और कोरबा में जितना कुत्ते नहीं घूमते, उससे ज्यादा ईडी और आईटी वाले घूमते हैं ... यहाँ के लोग भी फैलादी हैं, किसी से डरने और झुकने वाले नहीं हैं - राजनीति को समझने वालों ने मुख्यमंत्री के निडरता भरे बयान को उलटकर पढ़ा ।

डर के खेल में मुख्य पक्ष दो होते हैं । एक डराता है, दूसरा डरता है । फिर पलटवार में दूसरा अपने को निडर साबित करते हुए पहले को डराने की कोशिश करता है । डर मनोविज्ञान का बड़ा सूत्र है, यह राजनीति का भी उतना ही बड़ा सूत्र है और अब तो वैश्विक राजनीति का भी सबसे असरदार सूत्र डर ही है । छत्तीसगढ़ में डर भाजपा और उसके नेताओं में भी है, लेकिन उनके पास खोने के लिए सत्ता नहीं है, इसलिए उनका डर बुलबुले की तरह बनता-बिगड़ता है । मतदान की तारीखें अभी दूर हैं । तब तक डररूपी ऊँट कई करवटें लेगा, हो सकता है कि 'भूपेश है, तो भरोसा है' का गुमशुदा नारा लौट आये । डर की ग्रंथि काँग्रेस और उसके क्षत्रप में कैसा विस्तार पाती है।

छत्तीसगढ़ में भाजपा चुनाव नहीं लड़ रही है, यहां रमन सिंह के लोग चुनाव लड़ रहे हैं: बघेल

■ रायगढ़ की जनसभा में बोले मुख्यमंत्री, भाजपा लाती है काले कृषि कानून, हम करते हैं कर्जमाफ़ी

रायगढ़। बीजेपी किसान विरोधी है। केंद्र की मोदी सरकार तीन काले कृषि कानून लागू करती है, जिसके खिलाफ आंदोलन में 800 किसानों की जान चली गई। हमारी कांग्रेस की सरकार किसानों का कर्ज माफ करती है, तो बीजेपी के पेट में दर्द होता है। यह बात मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने आज रायगढ़ में हुई जनसभा में कही।

बघेल ने कहा कि छत्तीसगढ़ में 15 साल तक बीजेपी सरकार ने किसानों को ठगने का काम किया। 2014 से 2018 तक यहां भी डबल इंजन की सरकार थी। उस डबल इंजन की सरकार में किसानों पर अत्याचार कर कहर बरपा दिया गया था। बीजेपी बोनस के वादे से मुकर गई। 15 क्विंटल धान खरीदी को 10 क्विंटल कर दिया गया। जब केंद्र में यूपीए की सरकार थी, तो धान खरीदी पर किसानों को 50 से 60 रुपये बोनस मिलता था। 80 लाख मीट्रिक टन धान खरीदी होती थी। मोदी जी के आते ही बोनस मिलना बंद हो गया और धान खरीदी भी घटकर 56 मीट्रिक टन हो गई। मुख्यमंत्री ने कहा कि छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार में आम जनता की आय बढ़ी है। हम बटन दबाते हैं तो किसानों, भूमिहीन मजदूरों, गोबर विक्रेताओं की जेब में पैसा जाता है। कोरोना के समय में कांग्रेस की सरकार ने तीन महीने का राशन एडवांस में जरूरतमंदों को पहुंचाया। 26 लाख लोगों को मनरेगा से काम दिया। जबकि रमन सिंह और बीजेपी की सरकार में हर वर्ग को ठगने का काम किया गया। चिटफंड कंपनी के पैसे खाए, नान घोटाला, चावल घोटाला किया। यहां तक कि टिफिन, चप्पल, मोबाइल वितरण तक में कमीशन खाया।

मुख्यमंत्री श्री बघेल ने कहा कि मोदी जी कहते हैं कि छत्तीसगढ़ में धान खरीदी केंद्र सरकार करती है। मोदी जी झूठ बोलते हैं। मोदी जी बताएं कि बनारस में किसान 1200 रुपये में धान बेचने को क्यों मजबूर हैं, जबकि वहां डबल इंजन की सरकार है। हम जैसे ही किसानों के कर्जमाफी की घोषणा करते हैं बीजेपी के पेट में दर्द होने लगता है, वह सवाल खड़े करने लगती है। बीजेपी की केंद्र सरकार भी कर्ज माफ करती है लेकिन सिर्फ उद्योगपतियों का। वो उद्योगपतियों का साढ़े 14 लाख करोड़ रुपये रुपये का कर्ज माफ कर देते हैं, हम किसानों का कर्ज माफ करते हैं तो सवाल खड़े करते हैं। विपक्ष में होने के बाद भी बीजेपी के नेताओं ने अभी तक कोई घोषणा नहीं की है। मुख्यमंत्री ने कहा कि छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी चुनाव नहीं लड़ रही है। यहां रमन सिंह के लोग चुनाव लड़ रहे हैं। वह लोग किसके लिए काम करते हैं आप जानते हैं। अगर कमल छाप वाले धोखे से जीत गए तो सबसे ज्यादा लाभ अडानी को होगा। आज खदान, रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट, फैक्ट्री सब अडानी के पास जा रही है इसलिए इस चुनाव में सावधान रहने की जरूरत है। मुख्यमंत्री श्री बघेल ने कहा कि हमारी लड़ाई झूठ बोलने और अफवाह फैलाने वालों से है। हमें डराया जा रहा है, लेकिन हम न डरे हैं न झुके हैं। हमने अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी है, तो ईडी और आईटी से क्या डरेंगे। हम छत्तीसगढ़ की संस्कृति और परंपरा को बचाने के लिए काम कर रहे हैं। हमारी सरकार ने राम वनगमन पर्यटन परिपथ बनाने का काम किया। हर ब्लाक में जैतखाम का निर्माण किया जा रहा है। मुख्यमंत्री श्री बघेल ने कहा कि कहा कि बीजेपी की आदिवासियों से पता नहीं क्या दुश्मनी है। उनकी सरकार में आदिवासियों की जमीन छीन ली गई। आदिवासियों से जर्सी गाय देने का वादा कर रमन सिंह मुकर गए। जबकि कांग्रेस की सरकार में आदिवासियों को जमीन लौटाई गई। उनके विकास के लिए काम हुआ है।

देवेंद्र यादव ने पांच साल में कमाएं पांच करोड़ 11 किस्त में लिया पैसा : प्रेमप्रकाश पाण्डेय

भिलाई। भिलाई नगर विधानसभा से बीजेपी प्रत्याशी प्रेमप्रकाश पाण्डेय ने अपना नामांकन दाखिल किया। इस दौरान वैशाली नगर से बीजेपी प्रत्याशी रिकेश सेन भी मौजूद थे। प्रेमप्रकाश पाण्डेय ने नामांकन के दौरान अपने प्रतिद्वंदी कांग्रेस के मौजूदा विधायक और भिलाई नगर से प्रत्याशी देवेंद्र यादव पर जमकर निशाना साधा। प्रेम प्रकाश पाण्डेय ने ईडी की चार्जशीट का जिक्र करते हुए कहा कि विधायक ने पांच साल में पांच करोड़ रुपए कमाए हैं।आखिर कहां से आया इतना पैसा।

प्रेमप्रकाश पाण्डेय ने कांग्रेस पर पांच साल में भ्रष्टाचार,अत्याचार, घूसखोरी,अपराध और नशाखोरी जैसे अपराध बढ़ाने के आरोप लगाए।प्रेम प्रकाश पाण्डेय ने कहा कि 75000 में हम गरीबों को आवास मुहैया करेंगे। पहले भी हमने कैनाल रोड से बेघर होने वाले लोगों को आवास मुहैया करवाया था। लेकिन कांग्रेस की सरकार में आवास के लिए तीन लाख 25 हजार रुपए मांगे जा रहे हैं। वहीं प्रेम प्रकाश पांडे ने कांग्रेस प्रत्याशी देवेंद्र यादव पर निशाना साधा।

प्रेमप्रकाश पाण्डेय ने कहा ईडी ने चार्जशीट पेश किया है।उसमें 5 करोड़ रुपए में विधायक का एक्सटेंशन मनी का कोयला घोटाला आरोप लिखा हुआ है। 5 करोड़ 11 किस्तों में लिया है। विधायक का इतना भी साहस नहीं की दो पेशी में नहीं गए। जिस दिन विधायक के घर ईडी का छापा पड़ा था, विधायक ने कहा था कि मेरे पास एक भी पैसा नहीं है। कल उन्होंने 5 करोड़ का राशि डिक्लेयर किया है। कहां से आया इतना पैसा?

नामांकन रैली के दौरान प्रेमप्रकाश पाण्डेय ने खुली जीप में बैठकर रैली की।इससे पहले प्रेमप्रकाश पाण्डेय छावनी मंदिर पहुंचे।जहां उन्होंने मंदिर में देवी देवताओं के सामने मत्था टेका। पूजा अर्चना के बाद शक्ति प्रदर्शन करके प्रेमप्रकाश पाण्डेय नामांकन दाखिल करने निकले। इस रैली में हजारों की संख्या में बीजेपी कार्यकर्ता मौजूद थे। नामांकन दाखिल करने के बाद प्रेमप्रकाश पाण्डेय ने भारी बहुमत से जीत की बात की।

इसी कड़ी में वैशाली नगर से बीजेपी प्रत्याशी रिकेश सेन ने नामांकन दाखिल करने से पहले महा रैली निकाली। इस रैली में सैकड़ों की संख्या में लोग उनका समर्थन करने पहुंचे । वहीं इस पूरे रैली में छत्तीसगढ़ के लोक नृत्य आकर्षण का केंद्र रही। आपको बता दें रिकेश पहले ऐसे प्रत्याशी हैं जिन्होंने अपने नामांकन रैली में छत्तीसगढ़ के लोक नृत्य को जगह दी है।

सिंहदेव को घेरने भाजपा ने बनाई रणनीति

सरगुजा। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2023 के लिए बीजेपी ने अपने सभी प्रत्याशी घोषित कर दिये हैं। सरगुजा संभाग के हाईप्रोफाइल सीट अंबिकापुर से बीजेपी ने राजेश अग्रवाल को उप मुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव चुनावी मैदान में उतारा है। अब जब अंबिकापुर विधानसभा सीट से बीजेपी और कांग्रेस दोनों के प्रत्याशी तय हो गए हैं, तो मीडिया ने बीजेपी प्रत्याशी राजेश अग्रवाल से खास बातचीत की है।

राजेश अग्रवाल ने कहा कोई चुनौती नहीं है। भाजपा को पहले से ही पता था कि टीएस सिंहदेव से सामना होना है। पूरा भाजपा का संगठन मिलकर चुनाव लड़ेगा। सब साथ हैं, बगावत के सवाल पर उन्होंने कहा, कहीं ऐसी स्थिति नहीं है। सभी दावेदार योग्य थे, सभी मेरे सीनियर हैं, पार्टी ने मुझ पर भरोसा जताया है। सब मेरा साथ देंगे। पार्टी जिसे भी प्रत्याशी बनाती है, पूरा संगठन उसके लिये काम करता है।

पिछले चुनाव में टीएस सिंहदेव ने भाजपा के लोकप्रिय नेता अनुराग सिंहदेव को करीब 40 हजार वोटों से हराया था। इस खाई को कैसे पाटेंगे? इस सवाल पर राजेश अग्रवाल का मानना है कि पिछली बार सिंहदेव विपक्ष में थे, इसलिए जनता का साथ उन्हें मिला। इस बार वो मंत्री हैं और जनता से दूर रहे हैं। उनके पास जो मंत्रालय थे, उनमें भी काम नहीं होने के चलते जनता में घोर निराशा है। उनका मानना है कि इस बार जनता बीजेपी का साथ देगी। राजेश अग्रवाल ने बताया कि जब वह भाजपा में आए हैं, तब से

उनका किसी प्रकार का सम्पर्क सिंहदेव से नहीं है।

कर्ज माफी के घोषणा पर राजेश अग्रवाल का कहना है कि पिछले बार भी इन्होंने ठग वादे किए थे, इसलिए इनको ठगेस सरकार कहा जाता है। जनता को इन्होंने ठगा है, युवाओं को बेरोजगारी भत्ता नहीं दिया गया, पेंशन की रकम नहीं बढ़ाई गई। स्वयं सहायता समूह को कर्ज माफी का वादा किया था, नही हुआ। जनता इनके ठग वादे को जान गई है।

सिंचाई की समस्या को लेकर राजेश अग्रवाल ने कहा, बहोत से काम हैं। मैं ग्रामीण क्षेत्र से जुड़ा हुआ हूं। खुद भी किसान हूं। सिंचाई परियोजना चालू होना बहोत जरूरी है। घुनघुट्टा श्याम परियोजना और कुंवरपुर डेम दोनों का पानी टेल तक नही पहुंचता है। 15 साल की रमन सिंह सरकार में बहोत से डैम बनाये गए, जिसका मेंटेनेंस भी इस सरकार में नहीं किया गया। इसका हम समाधान करेंगे। लोगों के बिजली का बिल बेतहाशा आ रहा है, इसका समाधान करेंगे और जनता के सुख दुख में खड़े रहेंगे।

राजेश अग्रवाल पहले कांग्रेसी नेता थे और टीएस सिंहदेव के काफी करीबी रहे हैं। इसके साथ ही राजेश अग्रवाल लखनपुर नगर पंचायत के अध्यक्ष रहे हैं। राजेश अग्रवाल लखनपुर क्षेत्र के रहने वाले हैं। इसके साथ ही उनकी अंबिकापुर के ग्रमीण क्षेत्र में काफी पकड़ है। लेकिन राजेश अग्रवाल पहली बार विधानसभा चुनाव में उतरे हैं और उनका मुकाबला सीधे 3 बार के विधायक और डिप्टी सीएम टीएस सिंह से होने जा रहा है।

सरगुजा संभाग के हाईप्रोफाइल सीट अंबिकापुर से बीजेपी ने राकेश अग्रवाल को चुनावी मैदान में उतारा है। अंबिकापुर विधानसभा सीट बेहद खास मानी जाती है, क्योंकि अंबिकापुर सिंहदेव का गढ़ है, इस सीट से प्रदेश के उप मुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव तीन दफा चुनाव जीतते आ रहे हैं। यहां से चुनाव जीतने के लिये भाजपा बेहतर विकल्प तलाश रही थी, लेकिन अंत में भाजपा ने राजेश अग्रवाल को मैदान में उतार दिया है। भाजपा को उम्मीद है कि राजेश अम्बिकापुर के ग्रामीणों का वोट हासिल करने में सफल होंगे। इसी फार्मूले के तहत भाजपा जीत दर्ज करने की कोशिश कर रही है।

रोड नहीं तो वोट नहीं का नारा ग्रामीणों ने किया बुलंद, तहसीलदार के भी समझाने से नहीं बनीं बात

जांजगीर चांपा। एक कहावत काफी समय से चली आ रही है वो ये है कि नेता जीतने के बाद अक्सर अपने वादों से मुकरते हैं और पांच साल में एक बार ही चेहरा दिखाते हैं।लेकिन ये कहावत सच होती दिखी जांजगीर चांपा जिले में।जहां के पामगढ़ विधानसभा में आज भी कई गांव मूलभूत सुविधाओं के लिए तरस रहे हैं।आज हम बात उस गांव की करेंगे,जहां आजादी के बाद से ही सड़क नहीं बनीं।कई नेता आए और गए।लेकिन इस गांव में सड़क का लोकार्पण ना हो सका।लिहाजा अबकी बार गांव में रहने वाले ग्रामीणों ने तय कर लिया है कि वो वोट नहीं डालेंगे।क्योंकि जो वादे उनके किए गए वो अब तक पूरे नहीं हुए।और जब सरकार को ही जनता से कोई मतलब नहीं तो जनता सरकार बनाने में भागीदार क्यों बने।

पामगढ़ विधानसभा के अंतर्गत पनगांव आता है।इस गांव में रहने वालों का दुख चुनाव के वक्त फूट पड़ा है।गांव के अंदर रहने वाले लोग बिना सड़क के ही अपनी जिंदगी गुजार रहे हैं। ग्रामीणों की माने तो आजादी के बाद से ही गांव को मुख्यालय तक जोड़ने वाली सड़क की मांग होती आ

रही है।लेकिन मजाल है किसी नेता या जनप्रतिनिधि की गांव की दुर्दशा की ओर थोड़ा ध्यान दे दे।अब चुनाव करीब है तो जिला प्रशासन शत प्रतिशत मतदान करने का राग अलाप रहा है।लेकिन इस राग से भी ग्रामीणों को कोई मतलब नहीं।इसलिए सभी ग्रामीणों ने तय किया है कि चाहे जो हो जाए बिना सड़क बने तो वोट नहीं डालेंगे। ग्रामीण शत्रुध्न ने कहा हमें पीडब्ल्यूडी ने एक किलोमीटर रोड बनने का कागज दिखाया है। लेकिन मांग तीन किलोमीटर तक की है। अधूरा रोड बनाने से क्या फायदा, इसलिए हम चुनाव बहिष्कार कर रहे हैं।

तहसीलदार भी उलटे पांव लौटे- गांव के मतदान बहिष्कार की बात जब जिला प्रशासन तक पहुंची तो सभी के कान खड़े हो गए।तहसीलदार दल बल के साथ ग्रामीणों को समझाने के लिए पहुंचे। लेकिन तहसीलदार को देखते ही ग्रामीणों ने उन्हें घेर लिया।इस दौरान सभी के जुबान पर यही सवाल था कि सड़क क्यों नहीं बनीं।लेकिन जब तहसीलदार के पास से जवाब नहीं मिला तो ग्रामीणों ने भी अपनी बात सामने रख दी।आखिरकार तहसीलदार को भी उल्टे पाव वापस लौटना पड़ा। तहसीलदार ने कहा कुछ ग्रामीणों के चुनाव बहिष्कार की शिकायत मिली थी।जिसके बाद संबंधित विभाग के अधिकारियों से बात करके उन्हें समझाया गया है।लोकतंत्र है इसलिए चुनाव का हिस्सा बनें। आपको बता दें कि पामगढ़ विधानसभा सभा अनुसूचित जाति वर्ग के लिए आरक्षित है। इस सीट में दो महिला और एक पुरुष प्रत्याशी राष्ट्रीय दल से चुनाव लड़ रहे हैं। लेकिन पनगांव में अनुसूचित जाति वर्ग बाहुल्य गांव के मतदाताओं ने इस बार मतदान नहीं करने की चेतावनी दे दी है ।जिन्हें मनाना प्रशासन के लिए चुनौती है।

छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

आलाकमान के निर्देश के बाद गुरमुख ने रद्द की नामांकन रैली

धमतरी। धमतरी से कांग्रेस के पूर्व विधायक गुरमुख सिंह होरा ने आज आलाकमान से मिले निर्देश पर अपने बगावती तेवर अंकुश लगाते हुए फिलहाल नामांकन दाखिला नहीं करने का फैसला लिया। उल्लेखनीय है कि धमतरी से कांग्रेस के पूर्व विधायक गुरुमख सिंह होरा की टिकिट कटने के बाद उन्होंने निर्दलीय चुनाव लडने का मन बना लिया था। गुरमुख सिंह होरा शुक्रवार को अपने सर्मथन के साथ रैली लेकर नामांकन भरने जाने की तैयारी कर रहे थे।इससे पूर्व कि वे अपने समर्थकों के रैली लेकर निकलते कांग्रेस आलाकमान कमान से फोन आया कि वे नामांकन दाखिल न करें गुरमुख सिंह होरा ने एक अनुशासित कांग्रेसी की तरह अपनी नामांकन रैली को रद्द कर दिया और कहा कि हाई कमान की मीटिंग में तय होगा कि प्रत्याशी बदला जाएगा अथवा नहीं।

बागी अंतागढ़ विधायक अनूप नाग कांग्रेस से निष्कासित

कांकेर। अंतागढ़ विधायक अनूप नाग को कांग्रेस ने पार्टी से बाहर निकाल दिया है। बड़ा एक्शन लेते हुए कांग्रेस ने अनूप नाग को 6 साल के लिए पार्टी से निष्कासित कर दिया है। अनूप नाग पिछले कुछ दिनों से नाराज चल रहे थे और कांग्रेस पर छल करने का आरोप लगा रहे थे। जिसके बाद कांग्रेस ने यह कार्रवाई की है। कांग्रेस ने अंतागढ़ विधानसभा सीट पर सिटिंग एमएलए अनूप नाग का टिकट काट दिया है।। जिसके बाद अनूप नाग ने बगावत शुरू कर दी और निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में नामांकन भर दिया है। जिसके बाद कांग्रेस ने अनूप नाग पर अनुशासनात्मक कार्रवाई की है। अनूप नाग का कहना है कि 5 साल तक अपने विधानसभा क्षेत्र में विकास कार्य करने के बाद भी उन्हें टिकट नहीं दी गई। उनका दावा है कि क्षेत्र की जनता उनके साथ है लिहाजा बतौर निर्दलीय प्रत्याशी चुनाव मैदान में हैं। अनूप नाग कांग्रेस की टिकट पर 2018 में पहली बार विधायक चुने गए थे।

केंद्रीय राज्यमंत्री रेणुका सिंह के खिलाफ एफआईआर दर्ज

मनेन्द्रगढ़ चिरमिरी भरतपुर। केंद्रीय राज्यमंत्री रेणुका सिंह के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव से पहले भरतपुर सोनहत की बीजेपी प्रत्याशी और केंद्रीय मंत्री रेणुका सिंह को बड़ा झटका लगा है। चुनाव आयोग के नोटिस का जवाब नहीं देने पर उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज हुई है। आचार संहिता का उल्लंघन करने पर सोनहत थाने में धारा 188 के तहत मामला दर्ज किया गया । इसके बाद निर्वाचन आयोग ने रेणुका सिंह को तीन नोटिस जारी किया। भाजपा प्रत्याशी रेणुका सिंह को एमसीबी जिला निर्वाचन अधिकारी नरेंद्र दुग्गा ने आचार संहिता के उल्लंघन का नोटिस थमाया है। लेकिन रेणुका सिंह ने एक का भी जवाब नहीं दिया। जिसके बाद उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई। बिना अनुमति रैली निकालने पर कोरिया जिले के निर्वाचन अधिकारी ने केंद्रीय मंत्री और भरतपुर सोनहत से भाजपा प्रत्याशी को पहला नोटिस दिया था।

दयाल दास बघेल ने गुरु रुद्र का पैर छूकर लिया आशीर्वाद

बेमेतरा। छत्तीसगढ़ के पीएचई मंत्री गुरु रुद्र कुमार नवागढ़ विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के प्रत्याशी बनाए गए हैं। बतौर प्रत्याशी अपने परिवार और प्रस्तावकों के साथ रुद्र कुमार बेमेतरा कलेक्ट्रेट पहुंचे और अपने नामांकन का अंतिम सेट भरा। शुभ मुहूर्त में नामांकन दाखिल करने की बात कही। इसी दौरान नवागढ़ विधानसभा से भाजपा प्रत्याशी और पूर्व मंत्री दयाल दास बघेल भी वहां पहुंच गए। उन्होंने गुरु रुद्र कुमार के पहले पैर छुए और उनका आशीर्वाद लिया। नवागढ़ के कांग्रेस प्रत्याशी गुरु रुद्र कुमार ने कहा कि भाजपा प्रत्याशी दयाल दास बघेल ने उनका पैर छुआ तो उन्हें आशीर्वाद दिया है। वहीं मीडिया के चटपटे सवाल विजयी भव या खुश रहो, क्या आशीर्वाद दिए के जवाब में रुद्र कुमार ने कहा कि यह तो मैंने बाबा जी पर छोड़ दिया है। कांग्रेसी कार्यकर्ताओं के जेसीसीजे या अन्य पार्टी ज्वाइन करने पर रुद्र गुरु ने कहा कि उनमें काबिलियत होती तो पार्टी उन्हें टिकट जरूर देदी। कुछ लोगों के पार्टी छोड़ से कोई फर्क नहीं पड़ता।

76 अति संवेदनशील मतदान केंद्रों तक हेलीकाप्टर से जायेंगे मतदान कर्मी

बीजापुर। बस्तर संभाग के 12 विधानसभा क्षेत्रों में एक बीजापुर विधानसभा अति नक्सल संवेदनशील है, जो नक्सल घटनाओं के कारण हमेशा सुर्खियों में रहता है। जिले में 76 ऐसे मतदान केंद्र है जो संवेदनशील, अति संवेदनशील और पहुंच विहीन है। इन 76 मतदान केंद्रों में निर्वाचन आयोग मतदान कर्मियों को मतदान कराने हवाई मार्ग से भेजेगा। यह विकल्प नक्सली समस्या को देखते हुए निकाला गया है। मतदान कर्मियों को वोटिंग कराने के लिए कहीं 2 दिन तो कहीं 3 दिन पहले हेलीकाप्टर से भेजा जायेगा। मतदान कर्मियों के साथ सुरक्षाबल के जवान भी मौजूद रहेंगे ताकि इन मतदान केंद्रों में चुनाव शांतिपूर्ण तरीकेसंपन्न हो सके। उल्लेखनिय है कि नक्सली चुनाव का बहिष्कार करते हुए लगातार बैनर-पर्चा जारी कर रहे हैं। इसी बीच नक्सली मुठभेड़ में इसी इलाके के इनामी कमांडर नक्सली नागेश पदम के मारे जाने के बाद नक्सली संगठन ने गुरूवार 26 अक्टूबर को बीजापुर बंद बुलाया, जिसका अच्छा खासा असर देखने को मिला।

झूठी-भ्रष्टाचारी कांग्रेस के कुशासन का होगा अंत: रुपसिंह

जगदलपुर। भाजपा जिला कार्यालय में आहूत पत्रवार्ता में भाजपा जिला अध्यक्ष रूपसिंह मण्डावी ने कहा कि छत्तीसगढ़ में बदलाव की बयार चल रही है। बस्तर से परिवर्तन का शुभाारंभ होकर पूरे प्रदेश में फैल रही है। उन्होने कहा कि कांग्रेस के कुशासन का अंत निश्चित हो गया है। जनता ने घोटालेबाज कांग्रेस सरकार को जवाब देने का प्रण कर लिया है और जनता जनार्दन के आशीर्वाद से भाजपा पूर्ण बहुमत से छत्तीसगढ़ में सरकार बनाने जा रही है। विधानसभा चुनाव में भयभीत कांग्रेस को समझ में नहीं आ रहा है कि किस मुंह से जनता के बीच जाये। झूठी व भ्रष्टाचारी कांग्रेस की सच्चाई जनता समझ चुकी है और जनता की नाराजगी को कांग्रेस महसूस कर रही है। इसी डर से कांग्रेस ने अपने 22 सीटिंग विधायकों का टिकट काटा है, जो कांग्रेस की विफलता को उजागर करता है।

रुपसिंह मण्डावी ने कहा कि भाजपा के मण्डल अध्यक्ष से कांग्रेस घबरायी हुई है। भाजपा के एक-एक कार्यकर्ता का समर्पण भाव कांग्रेस को भारी पड़ रहा है। चित्रकोट विधानसभा सीट में भाजपा के प्रत्याशी

विनायक गोयल मण्डल अध्यक्ष भी है, जिनकी टिकट की घोषणा के बाद कांग्रेस को अपने सीटिंग विधायक राजमन बेंजाम को हटाने मजबूर होना पड़ा और कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष बस्तर से सांसद दीपक बैज को विधायक प्रत्याशी बनाकर मैदान में उतारने विवश होना पड़ा। कांग्रेस बैकफुट में है और भाजपा चित्रकोट, जगदलपुर, बस्तर विधानसभा सहित बस्तर संभाग की सभी 12 सीटों में जीत का परचम लहरायेगी।

उन्होने कहा कि झूठी घोषणायें करने में माहिर कांग्रेस ने फिर से किसानों की कर्ज माफी का झूठा वादा दोहराया है। पिछले विधानसभा चुनाव में 36 झूठे वादे कांग्रेस ने किये थे, जो पांच साल में पूरे नहीं हुये। मेहनतकश किसानों को छलने का काम बार-बार कांग्रेस करती आयी है, भत्ता देने के नाम पर युवा बेरोजगारों को, कर्जमाफी के नाम पर महिला स्व समूहों को, पेंशन देने के नाम पर प्रदेश के बुजुर्गो तक से झूठ बोलने का काम कांग्रेस ने किया है। भाजपा के 15 साल के विकास कार्य को जनता याद कर रही है व केंद्र की मोदी सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ भी प्रदेश की जनता को मिल रहा है। जिन्हें भी रोकने का दुष्टता पूर्ण प्रयास कांग्रेस करती रही है। कांग्रेस सरकार के कर्मों ने कांग्रेस की पराजय निश्चित कर दी है। इस दौरान विद्याशरण तिवारी, वेदप्रकाश पाण्डेय, संजय पाण्डेय, आलोक अवस्थी, दिनेश पाणिग्रही, जयप्रकाश पाढ़ी आदि उपस्थित थे।

कांग्रेस प्रत्याशी केके ध्रुव ने चरणदास महंत की मौजूदगी में भरा नामांकन

गौरेला पेंड्रा मरवाही। मरवाही विधानसभा क्षेत्र से लगातार हो रहे विरोध के बीच कांग्रेस प्रत्याशी केके ध्रुव ने शुक्रवार को अपना नामांकन भरा। केके ध्रुव ने विधानसभा अध्यक्ष चरण दास महंत की मौजूदगी में नामांकन किया। इस दौरान कोरबा सांसद ज्योत्सना महंत, कोटा विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी अटल श्रीवास्तव और जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष उत्तम वासुदेव भी मौजूद थे। नामांकन भरने के बाद कांग्रेस ने कार्यकर्ता सम्मेलन के साथ बाइक रैली निकालकर बड़ा शक्ति प्रदर्शन किया। छत्तीसगढ़ कांग्रेस इस विधानसभा चुनाव में अबकी बार 75 पार का नारा लेकर निकाली है। केके ध्रुव का नामांकन दाखिल करने के बाद विधानसभा अध्यक्ष ने पत्रकारों से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने कहा कि, कांग्रेस से बागी विधायकों और कार्यकर्ताओं को मनाने की पूरी कोशिश की जा रही है। सरकार बनने के बाद सभी कांग्रेस कार्यकर्ता मिलकर पार्टी के लिए काम करेंगे। वहीं, कांग्रेस छोड़कर दूसरी पार्टियों से चुनाव लड़ रहे पूर्व विधायक और कांग्रेस नेताओं से चुनावी समीकरण बिगड़ने के सवाल पर महंत ने कहा कि, चुनाव के समय इस तरह की घटनाएं होती रहती है। पर सभी भाइयों को मनाने का सिलसिला लगातार जारी है। कुमारी शैलजा और राहुल गांधी की मौजूदगी में सभी कार्यकर्ताओं को एक बार फिर से समझाया जाएगा। इसके साथ ही बीते दिन कांग्रेस के बागी नेता मरवाही से जेसीसीजे में शामिल हो गए। इस पर चरणदास महंत ने कहा कि, गौरेला पेंड्रा मरवाही क्षेत्र राजनीतिक रूप से काफी संवेदनशील रहा है। पर उन सभी को मानने का सिलसिला लगातार जारी है। बता दें कि मरवाही विधानसभा में पिछले कुछ दिनों से लगातार केके ध्रुव का विरोध देखने को मिल रहा है। इन विरोधों के बीच कांग्रेस ने एक बार भी मरवाही विधायक केके ध्रुव पर भरोसा जताया और मरवाही क्षेत्र से उम्मीदवार बनाया। ध्रुव को टिकट मिलने के बाद से लगातार क्षेत्र में कांग्रेस के ही नेता उन्हें बाहरी बताते हुए विरोध कर रहे हैं। इस बीच शुक्रवार को विधानसभा अध्यक्ष के के ध्रुव की मौजूदगी में कांग्रेस प्रत्याशी केके ध्रुव ने अपना नामांकन दाखिल किया है।

संक्षिप्त समाचार

16 विधानसभा क्षेत्रों के लिए भाजपा ने नियुक्त किए संचालक व सहसंचालक

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष अरुण साव ने 16 विधानसभा क्षेत्रों में दो समितियों का गठन किया है। जिसमें सांसद सुनील सोनी को चुनाव प्रबंध समिति और सांसद संतोष पांडे को चुनाव अभियान समिति का संयोजक नियुक्ति किया है। 16 चुनाव संचालकों में रायपुर ग्रामीण के लिए दो पूर्व विधायक नंदे साहू, श्रीचंद सुंदरानी, ओम प्रकाश देवांगन को बनाया है और श्रीचंद सुंदरानी को उत्तर से दूर किया गया है। इसी तरह से रायपुर दक्षिण के लिए चार संचालक बनाए है जिनमें डॉ. विमल चोपड़ा के साथ केदार गुप्ता, पूर्व भाजपा पार्षद प्रेम बिरनानी, सुभाष तिवारी को सहसंचालक बनाया है। वहीं रायपुर पश्चिम की जिम्मेदारी राज्यपाल रमेश बैस के भाई महेश बैस को संचालक बनाया गया है। पार्टी ने रामपुर विधानसभा से चुनाव लड़ रहे पूर्व मंत्री ननकीराम कंवर के चुनाव संचालन की जिम्मेदारी राइस मिलर गोपाल मोदी को दी है। मोदी हाल में ईडी के छापेमारी के जाल में फंसे थे। इसी तरह से पत्थलगांव के लिए सालिक साय, लैलूंगा-अरूण राय, सारंगढ़-गुरुपाल सिंह भल्ला, बिलाईगढ़-डॉ. गुलाब सिंह, मुंगेली-चोवादास खांडेकर, महासमुंद -संदीप दीवान, राजिम - नेहरू लाल साहू, सिहावा - कमलचंद्र भंजदेव, दुर्ग शहर- विनायक नाथू, भिलाई नगर- गार्गी शंकर मिश्रा, वैशाली नगर-लाभचंद बाफना और नवागढ़ में टार्जन साहू को नियुक्त किया गया है।

ईडी की छापेमारी को मुख्यमंत्री ने बताया बीजेपी की बौखलाहट

केंद्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी बोली जो गड़बड़ी करता है वही डरता है

रायपुर। देश में अगले माह पांच राज्यों में विधानसभा के चुनाव होने जा रहा है। लेकिन विधानसभा चुनाव से ठीक पहले राजस्थान कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा के घर ईडी का छापा पड़ा। इसे लेकर कांग्रेस और बीजेपी के बीच जुबानी जंग तेज हो गई है। इसी क्रम में छत्तीसगढ़ के सीएम भूपेश बघेल ने भी ईडी के छापे को लेकर अपनी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने ईडी की कार्रवाई को हार के डर से बीजेपी की बौखलाहट करार दिया है।

सीएम भूपेश बघेल ने ईडी के छापों को लेकर कहा कि एक पुराने केस में चुनाव के समय कार्रवाई करना बीजेपी की बौखलाहट को दिखाने वाला है। राजस्थान में बीजेपी पूरी तरह से हारने वाली है। भूपेश बघेल ने कहा इसका मतलब है कि भारतीय जनता पार्टी बौखला गई है। राजस्थान में ये लोग बुरी तरह से चुनाव हारने वाले है।इसका ये प्रमान है कि 12 साल पुराना केस है जिसमें ईडी ने छापा मारा है।ये सिर्फ डिस्टर्ब करना चाहते हैं। बौखलाहट है इनकी इसका कोई दूसरा कारण हो नहीं सकता है।

बीजेपी ने साधा कांग्रेस पर निशाना- बीजेपी ने भी सीएम भूपेश बघेल के आरोपों पर पलटवार किया है। केंद्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी ने ईडी और आईटी के रेड पर विरोधियों पर निशाना साधा है।मीनाक्षी लेखी की माने तो जिन लोगों ने लूट पाट करके धन को छिपाया

है।वो ही ईडी और आईटी से डरते हैं।उनको ईडी आईटी से डरना चाहिए। जिनके पास इस तरह की व्यवस्था नहीं है उसको किस बात का डर।हम तो सारी उम्र कांग्रेस की खिलाफत करते रहे और हमारे पूर्वज भी। मीनाक्षी लेखी ने कहा हमने कई तरह की प्रताड़ना सही।हम तो नहीं डरे और ना ही हमारे पूर्वज डरे।क्योंकि कुछ उल्टे काम ही नहीं है तो क्या ईडी कर लेगी और क्या आईटी कर लेगी।तो जो ये ईडी आईटी से डर है तो वो सही डर है क्योंकि जो जो काला धन रखे हैं दुनिया को लूटपाट करके उसको पकड़े जाने का डर है। आपको बता दें कि छत्तीसगढ़ के साथ राजस्थान में भी चुनाव होने हैं। लेकिन चुनाव से पहले कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा के घर पर ईडी ने बड़ी कार्रवाई की है।ईडी ने गोविंद सिंह के घर पर छापामार कार्रवाई की।जिसके बाद अब कांग्रेस ईडी और बीजेपी के खिलाफ हमलावर है।

साव बोले - मैं भी मानता हूं कि भूपेश है तो भरोसा है

मुंगेली। लोरमी प्रत्याशी और भाजपा प्रदेश अध्यक्ष अरुण साव ने नामांकन दाखिले से पहले मुंगेली में जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि मैं भी मानता हूं कि भूपेश है तो भरोसा है। उन्होंने कहा कि सोनिया गांधी, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी को भरोसा है कि जब तक भूपेश बघेल हैं छत्तीसगढ़ को लूटकर उनका खजाना भरते रहेंगे। सभा को संबोधित करते हुए अरुण साव भावुक हो गए और उन्होंने कहा कि इस मिट्टी में जन्म लिया इसे प्रणाम करता हूं। मुंगेली में आमसभा के बाद जनपद पंचायत लोरमी अध्यक्ष अपने सहयोगियों के साथ भाजपा में शामिल हुए। रोते हुए जनसभा को संबोधित करते हुए साव ने कहा कि जिस मिट्टी पर रहकर मैंने राजनीतिक जीवन की शुरुआत की आज मैं उस मिट्टी को नमन करता हूं। मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि कभी सांसद बनूंगा, कभी दुनिया की सबसे राजनीतिक दल का प्रदेश अध्यक्ष बनूंगा और एक विधानसभा के प्रत्याशी के रुप में उसी मिट्टी पर आप सब को प्रणाम करता हूं। इस दौरान उन्होंने कहा कि उन्हें प्रदेश के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल पर भरोसा हैं कि वे सोनिया गांधी, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी के खजाने में छत्तीसगढ़ से लूटे हुए पैसे को भर रहे है।

राजस्थान व छत्तीसगढ़ में ईडी के छापे बता रहे भाजपा पांचो राज्यो में चुनाव हार रही : बैज

रायपुर। राजस्थान के प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं छत्तीसगढ़ में मारे गये ईडी के छापे भाजपा की घबराहट को बताने के लिये पर्याप्त है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं सांसद दीपक बैज ने कहा कि पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव हार रही है। इसलिये वह केन्द्रीय एजेंसियो और केन्द्रीय सुरक्षा बलो का दुरूपयोग करना शुरू कर चुकी है। भाजपा तानाशाही और अलोकतांत्रिक गतिविधियों पर उतर आई है। उसके पास कांग्रेस के खिलाफ मुद्दे नहीं बचे है तो वह ईडी के माध्यम से गलत कार्यवाहियां करवा कर भ्रष्टाचार के भ्रामक आंकड़े प्रस्तुत कर रही है। बैज ने कहा कि 2014 में केंद्र में बीजेपी के सत्ता में आने के बाद से प्रमुख विपक्षी नेताओं को घेरने के लिए जांच एजेंसियों का ज्यादा इस्तेमाल किया गया है। मोदी सरकार के 8 साल के शासन में 95 फीसदी मामले केवल विपक्षी दल के नेताओं के खिलाफ़ किए गए हैं। जो नेता भाजपा में शामिल हो गये उनके खिलाफ भाजपा ने जांच बंद करवा दिया। नारायण राणे, मुकुल राय, हेमंत बिसवा सरमा, येदुरप्पा, एकनाथ शिंदे जैसे दर्जनों नेता जिनके खिलाफ ई डी, आई टी और सीबीआई की कार्यवाही चल रही थी, बकायदा एफआईआर दर्ज है, भाजपा में शामिल होते ही सदाचारी हो गए सारे आरोपों से मुक्त हो गये। उन्होंने कहा कि देश में जब से मोदी सरकार बनी है वह केंद्रीय एजेंसियों का मनमाने दुरुपयोग कर रही है। राजनैतिक विरोधियों को दबाने तथा सत्तारूढ़ भाजपा के राजनैतिक हितों को साधने सेन्ट्रल एजेंसियों के दुरुपयोग का ऐसा उदाहरण इतिहास में कभी देखने नहीं मिला है। अपनी स्थापना के बाद ईडी में कुल 5422 केस दर्ज हुये है और इनमे से 5310 केस भाजपा की मोदी सरकार के दौरान 8 साल में दर्ज किये गये है। उसके पहले ईडी ने सिर्फ 112 केस दर्ज किया था। इनमें से 95 प्रतिशत विरोधी दल के नेताओं के खिलाफ दर्ज किया गया है तथा एक भी भाजपा नेता के यहां ईडी ने न कभी छापा मारा और न ही कोई केस दर्ज किया है। बैज ने कहा कि जब विपक्षी दल के नेताओं के यहां या विपक्षी सरकार को परेशान करने की नीयत से सेन्ट्रल एजेंसियों छापा मारती है तो भाजपा के नेता बेशर्मीपूर्वक इनके प्रवक्ता की भांति उनके समर्थन में बयानबाजी करते है। जैसे की वे सब ईडी, आईटी के प्रवक्ता है। छत्तीसगढ़ में रमन सिंह ईडी के समर्थन में जिस प्रकार बयानबाजी कर रहे उससे साफ हो रहा कि ईडी की कार्यवाही भाजपा की राजनैतिक साजिश है। कांग्रेस नें पूछा है कि ईडी भाजपा के रमन सरकार के कार्यकाल के घोटालो कि जाँच क्यों नहीं करती है। 36000 करोड़ का नान घोटाला, चिटफंड घोटाले कि जाँच से मोदी सरकार क्यों डर रही है।

सरगुजा संभाग की 14 विधानसभा सीटों का चुनावी समीकरण

अंबिकापुर। सरगुजा संभाग की 14 सीटों के लिए दूसरे चरण में 17 नवंबर को मतदान है। सरगुजा संभाग की 14 सीटों पर सभी सियासी दलों ने प्रत्याशी घोषित कर दिए हैं। आइए जानते हैं कि हर विधानसभा में क्या समीकरण बन रहे हैं। किस आधार पर प्रत्याशियों को टिकट दिया गया है।

1. भरतपुर सोनहत विधानसभा सीट- गुलाब कमरो वर्तमान में इसी सीट से विधायक हैं। एक बार फिर कांग्रेस ने उन्हें मौका दिया है। गुबाल कमरो आदिवासी समाज से हैं, लेकिन भाजपा ने उनकी मुश्किलें बढ़ा दी है। यहां से भाजपा ने केन्द्रीय राज्य मंत्री और सांसद रेणुका सिंह को मैदान में उतार दिया है। रेणुका सिंह भी आदिवासी समाज से हैं। पूर्व में विधायक और राज्य सरकार में मंत्री रह चुकी हैं। रेणुका सिंह अनुभवी होने के साथ ही बेहद तेज तर्रार महिला नेता हैं।

गुलाब कमरो भी परिसीमन से पहले मनेन्द्रगढ़ सीट से 2 बार विधायक रह चुके हैं। उनके पास भी अच्छा अनुभव है। परिसीमन के बाद 2008 में अस्तित्व में आई भरतपुर सोनहत सीट पर भाजपा ने कब्जा कर लिया था। यहां 2008 में भाजपा के फूल सिंह, 2013 में भाजपा की चम्पा देवी पावले ने जीत दर्ज की थी, लेकिन साल 2018 में कांग्रेस की आंधी में सभी सीट भाजपा हार गई। यह क्षेत्र मध्यप्रदेश के शहडोल जिले की सीमा से लगता है। यहां की ग्रामीण संस्कृति पर मध्यप्रदेश का खासा प्रभाव देखा जाता है।

बड़ी बात यह है कि इस विधानसभा में गोंडवाना गणतंत्र पार्टी और बसपा का भी अच्छा जनाधार है। साल 2018 में यहां गोंडवाना को 26 हजार और बसपा को 10 हजार के करीब वोट मिले थे, जबकि गुलाब कमरो 51 हजार वोट पाकर महज 16 हजार वोट से ही जीत दर्ज सक सके थे। इस बार भाजपा ने एक गोंड समाज की महिला उम्मीदवार रेणुका सिंह को मैदान में उतार कर गोंडवाना के वोट में भी सेंध लगाने का प्रयास किया है।

2. मनेन्द्रगढ़ विधानसभा सीट- यहां डॉ विनय जायसवाल विधायक हैं, लेकिन कांग्रेस ने इस बार उनकी टिकट काट दी है। कांग्रेस ने नए चेहरे को मौका दिया है। सीनियर एडवोकेट रमेश सिंह को कांग्रेस ने प्रत्याशी बनाया है। रमेश सिंह चरण दास महंत के करीबी माने जाते हैं। काफी सीनियर एडवोकेट हैं, लेकिन सत्ता के खेल में अभी बिल्कुल नए हैं। इधर भाजपा ने इनके खिलाफ पूर्व विधायक श्याम बिहारी जायसवाल को टिकट दी है। श्याम बिहारी जायसवाल को विनय जायसवाल ने 2018 के चुनाव में करीब 4 हजार वोट के अंतर से हाराया था। इस चुनाव में यहां गोंडवाना गणतंत्र पार्टी और जनता कांग्रेस जोगी ने मिलकर करीब 24 हजार वोट पाया था। जबकि साल 2013 में श्याम बिहारी 4 हजार वोट से ही चुनाव जीते थे। उन्होंने कांग्रेस के गुलाब सिंह को हराया था।

इस बार यहां कांग्रेस के बागी विधायक डॉ विनय जायसवाल खेल बिगाड सकते हैं। कांग्रेस के बागी विनय से कांग्रेस को खतरा होना था, लेकिन यहां उल्टा ही समीकरण बन रहा है। दरअसल विनय का जनाधार भाजपा के गढ़ चिरमिरी क्षेत्र में है। उनकी पत्नी यहां से मेयर भी हैं, लिहाजा अगर ये चुनाव लड़ते हैं तो भाजपा के वोट काटेंगे और इसका फायदा कांग्रेस को हो सकता है। विनय गोंडवाना गणतंत्र पार्टी से चुनाव लड़ने के मूड में हैं। पिछले आंकड़ों को देखा जाए तो इस विधानसभा में गोंडवाना के करीब 10 से 15 हजार वोट हैं। इसमें अगर डॉ विनय चुनाव लड़ गए तो वो जीतें या हारें लेकिन भाजपा की नैया जरूर डूबा सकते हैं।

3. बैकुंठपुर विधानसभा सीट- 1962 में यह सीट अस्तित्व में आई। यहां से पहला चुनाव प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के उम्मीदवार ज्वाला प्रसाद ने जीता। 1967 से लगातार दो बार यहां कांग्रेस ने जीत दर्ज की और कोरिया कुमार राम चंद्र सिंहदेव विधायक बने। इस विधानसभा में राजपरिवार का दबदबा रहने के कारण ज्यादातर यहां से कांग्रेस ने जीत दर्ज की है, लेकिन 2018 और 2013 में भाजपा के भैया लाल राजवाड़े ने यहां जीत दर्ज की। इस विधानसभा में राजवार वोट अधिक हैं। बड़ी बात यह है कि यह समाज संगठित होकर मतदान करता है, लेकिन 2018 में राजपरिवार की बेटी अंबिका सिंहदेव ने यह सीट अपने नाम कर ली। प्रदेश में कांग्रेस की लहर थी, लिहाजा भाजपा को हार का सामना करना पड़ा लेकिन इस बार फिर से भाजपा ने भैया लाल राजवाड़े को टिकट दी है और सामने कांग्रेस की अंबिका सिंह हैं।

अब देखना है कि क्या राजपरिवार का वर्चश्व कायम रहेगा या फिर रजवार मतदाता भैया लाल की नौका पार लगाएंगे। दरअसल साल 2013 में भैया लाल महज एक हजार वोट के अंतर से ही चुनाव जीत सके थे और 2018 में कांग्रेस की अंबिका सिंह ने उन्हे करीब साढ़े तीन हजार वोट से चुनाव हराया था, जबकि 17 हजार वोट गोंडवाना गणतंत्र पार्टी के प्रत्याशी को मिले थे।

4. प्रेमनगर विधानसभा सीट- यह एक अनारक्षित विधानसभा सीट है। लेकिन यहां से राजनैतिक दल आरक्षित वर्ग से प्रत्याशी उतारते रहे हैं और वह जीतते भी आ रहे हैं। यहां एसटी आबादी महज 60 हजार के करीब ही है। लेकिन संगठित मतदान की वजह से अब तक यहां कोई भी सामान्य वर्ग का उम्मीदवार जीत नहीं सका है। इस बार समीकरण त्रिकोणीय बनने की उम्मीद है। डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव के चचेरे भाई विंध्यश्वर शरण सिंहदेव निर्दलीय चुनाव लड़ सकते हैं। क्षेत्र के लोग लगातार ओबीसी या जनरल कैंडिडेट की मांग करते रहे हैं। लेकिन इस बार फिर भाजपा और कांग्रेस ने आदिवासी प्रत्याशी को टिकट दिया है।

कांग्रेस ने सिटिंग विधायक खेल साय सिंह को उतारा है, तो भाजपा ने भूलन सिंह मरावी को टिकट दिया है। अब अगर विंध्यश्वर शरण सिंहदेव निर्दलीय मैदान में उतरते हैं, तो उन्हें सवा लाख से अधिक आबादी वाले ओबीसी और जनरल मतदाताओं का साथ मिल सकता है। विंध्यश्वर शरण सिंहदेव सूरजपुर जिले में लगातार कांग्रेस का काम करते रहे हैं। वो और उनके पिता स्वर्गीय यूएस सिंहदेव सूरजपुर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे हैं। साल 2003 और 2008 में भाजपा की रेणुका सिंह ने 18 हजार और 16 हजार मतों से कांग्रेस को पराजित किया था। लेकिन तब उनके सामने खेल साय सिंह नहीं थे। साल 2018 में कांग्रेस ने दोबारा खेल साय सिंह को मैदान में उतारा और वो भाजपा से 20 हजार वोट से चुनाव जीते। इससे पहले 1990 में खेल साय सिंह यहां से विधायक और 3 बार सरगुजा लोकसभा के सांसद रह चुके हैं।

5. भटगांव विधानसभा सीट- सरगुजा की सबसे नई सीट है भटगांव। यह 2008 से अस्तित्व में आई। पिलखा विधानसभा को परिसीमन में खत्म किया गया और इसका कुछ हिस्सा प्रतापपुर विधानसभा में शामिल हुआ। भटगांव, अम्बिकापुर और सूरजपुर शहर से लगी हुई विधानसभा है। इसका क्षेत्रफल काफी बड़ा है। इसकी सीमाएं मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश से लगती है। क्षेत्र में कोयले की खदाने हैं, इसलिए बाहरी राज्यों के मतदाता भी यहां हैं। मुख्य रूप से इस विधानसभा में राजवार वोट ही भाग्य विधाता होते हैं। इनकी संख्या बेहद अधिक है और ये संगठित मतदान करते हैं। इसके बाद यहां गोंड, कंवर और ओबीसी मतदाता भी हैं।

साल 2008 में अम्बिकापुर शहर के निवासी भाजपा के रवि शंकर त्रिपाठी यहां से पहले विधायक चुने गए। सड़क दुर्घटना में इनकी मौत के बाद उपचुनाव हुआ। इनकी पत्नी रजनी त्रिपाठी उपचुनाव जीत गई। लेकिन 2013 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने यहां जातिगत समीकरण को साध लिया और राजवार समाज के पारसनाथ राजवाड़े को मैदान में उतार दिया। पारसनाथ तब से यहां के विधायक हैं। इस बार फिर कांग्रेस ने पारसनाथ को ही उम्मीदवार बनाया है।

इधर भाजपा ने भी जातिगत समीकरण साधने के लिए राजवार समाज से महिला प्रत्याशी उतार दिया है। भाजपा ने लक्ष्मी रजवाड़े को टिकट दी है। इनको टिकट मिलते ही भाजपा संगठन में विरोध के स्वर बुलंद हो चुके हैं। संगठन के लोग काम नहीं कर रहे हैं। अम्बिकापुर शहर के लोगों का इस विधानसभा में खासा प्रभाव रहता है। लेकिन भाग्य विधाता यहां राजवार वोट ही है। अब देखना यह होगा की राजवार समाज किसके साथ खड़ा होता है।

6. अम्बिकापुर विधानसभा सीट- इस सीट पर कांग्रेस या सरगुजा राजपरिवार या उनके समर्थित लोगों का ही कब्जा रहा है। भाजपा यहां सिर्फ एक बार 2003 में ही जीत दर्ज कर पाई थी। इससे पहले 1977 में इंदिरा विरोधी लहर में जनता पार्टी के उम्मीदवार ने यहां जीत

दर्ज की थी। आजादी के बाद सरगुजा महाराज रामानुज शरण सिंहदेव विधायक बनाए गए। यह सीट राजपरिवार या उनके लोगों के पास ही रही। राजमाता देवेन्द्र कुमारी भी अम्बिकापुर से विधायक रहीं और 2008 से अब तक तीन बार टीएस सिंहदेव अम्बिकापुर से विधायक हैं। एक बार फिर कांग्रेस ने टीएस सिंहदेव को ही यहां से उम्मीदवार बनाया है।

टीएस सिंहदेव के खिलाफ प्रत्याशी उतारने में भाजपा को काफी समय लग गया। आखिरकार 25 अक्टूबर को भाजपा ने लखनपुर नगर पंचायत के पूर्व अध्यक्ष राजेश अग्रवाल को टिकट दिया है। राजेश 2017 तक कांग्रेस में ही थे और ट एस सिंहदेव के काफी करीबी माने जाते थे। साल 2017 में उन्होंने भाजपा की सदस्यता ले ली थी।

अम्बिकापुर विधानसभा में शहरी आबादी का एक बड़ा हिस्सा शामिल है। जिसमें उरांव मतदाता सहित ओबीसी और जनरल मतदाताओं के साथ मुस्लिम मतदाताओं की संख्या अधिक है। ग्रामीण क्षेत्र में गोंड, कंवर और राजवार मतदाता भी काफी संख्या में हैं।

अम्बिकापुर विधानसभा में भाजपा मजबूत स्थिति में होने के बाद भी चुनाव नहीं जीत पाती है। इसका कारण यह है कि टीएस सिंहदेव सरगुजा राजपरिवार के हैं और लोगों से उनके व्यक्तिगत पुराने संबंधों के आधार पर लोग उनको वोट करते हैं। लेकिन इस बार भाजपा ने सिंहदेव को उनके गढ़ में ही घेरने का प्रयास किया है।

लखनपुर और उदयपुर का क्षेत्र चुनाव में सिंहदेव को बढ़त दिलाता है। भाजपा ने उनके गढ़ से ही प्रत्याशी मैदान में उतार दिया है। अब अगर राजेश अग्रवाल भाजपा के कोर वोट के साथ लखनपुर क्षेत्र के मतदाताओं को अपनी तरफ लाने में सफल हो जाते हैं, तो हाई प्रोफ़ाइल सीट में डिप्टी सीएम की चिंताएं बढ़ जाएंगी। जितने भी दावेदार भाजपा से टिकट मांग रहे थे, सभी को कमजोर आंका जा रहा था। टीएस सिंहदेव के खिलाफ सबसे मजबूत उम्मीदवार राजेश अग्रवाल को ही माना जा रहा था। इसलिए भाजपा ने उन्हें टिकट भी दी है। अब यहां मामला एकतरफा नहीं होगा, बल्कि अम्बिकापुर में राजेश की एंट्री से यह चुनाव बड़ा ही रोचक होने वाला है।

साल 2013 में कांग्रेस के टी एस सिंहदेव ने 84 हजार 668 वोट हासिल कर जीत दर्ज किया था। दूसरे स्थान पर 65 हजार 110 वोटों के साथ भाजपा के अनुराग सिंह देव रहे। कांग्रेस ने यह चुनाव 19 हजार 558 मतों के अंतर से जीता। 2018 के विधानसभा चुनाव में तीसरी बार वही दोनों प्रत्याशी आमने सामने थे। कांग्रेस के टीएस सिंहदेव ने 39 हजार 624 वोटों से जीत दर्ज की। यहां कांग्रेस के उम्मीदवार को 100439 वोट, वहीं बीजेपी के अनुराग सिंहदेव को 60815 वोट मिले थे।

7. सीतापुर विधानसभा सीट- ये कांग्रेस का अपराजेय किला है। आजादी के बाद से कभी यहां भाजपा नहीं जीत सकी है। यहां उरांव मतदाताओं की संख्या काफी अधिक है और उरांव कांग्रेस के परंपरागत वोटर हैं। इस विधानसभा में कंवर और गोंड भी काफी हैं, लेकिन कांग्रेस की पकड़ ज्यादा मजबूत है। यहां से अमरजीत भगत विधायक हैं। वर्तमान में वे मंत्री हैं। अमरजीत 4 बार लगातार यहां से चुनाव जीत चुके हैं। साल 2018 विधानसभा चुनाव में सीतापुर सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी अमरजीत भगत को 86670 वोट मिले। जबकि उनके प्रतिद्वंदी भाजपा के प्रोफेसर गोपाल राम को 50 हजार 533 वोट मिले। जेसीसीजे के सेतराम को सिर्फ 2495 वोट मिले। अमरजीत भगत ने 36 हजार 137 वोट के बड़े अंतर से चुनाव जीता था।

इस बार भाजपा ने यहां एक ऐसे युवा को टिकट दिया है, जो क्षेत्र के लोगों के कहने पर सेना की नौकरी छोड़कर यहां आया है। युवाओं का साथ भी इनको मिल रहा है। चुनाव में देशभक्ति समाहित हो चुकी है। पूर्व सैनिक राम कुमार टोप्पो यहां भाजपा के उम्मीदवार हैं। यहां चुनाव मैनेजमेंट कौन बेहतर कर पाता है, इससे जीत और हार का फैसला होगा। दरअसल यहां वोट काटने वाले प्रत्याशियों को मैदान में उतारने का सिलसिला शुरू हो चुका है। सीतापुर क्षेत्र में उरांव समाज की अच्छी पैठ रखने वाले मुन्ना टोप्पो ने आम आदमी पार्टी से नामांकन खरीदा है। कई और चेहरे मैदान में उतारे जा रहे हैं।

8. प्रतापपुर विधानसभा सीट- संभाग की इस सीट पर मतदाता हर बार अपना मत बदल देते हैं। 1985 के चुनाव से यहां हर बार विधायक का चेहरा बदल जाता है। जनता एक बार कांग्रेस और एक बार भाजपा को चुनती है। प्रेम साय सिंह इस सीट से लगातार अंतराल में विधायक रहे हैं। वो कई बार मंत्री भी रहे हैं। इस बार उनके लिए बढ़ती नाराजगी के कारण कांग्रेस ने उन्हे टिकट नहीं दिया। इस बार यहां से कांग्रेस ने जिला पंचायत अध्यक्ष राज कुमारी मरावी को टिकट दी है। वहीं भाजपा ने शकुंतला पोर्ते को टिकट दिया है। शकुंतला सरपंच हैं। कांग्रेस ने रणनीति के तहत एक ऐसी महिला को मैदान में उतारा है, जिसके पास जिला पंचायत चुनाव के जरिए पहले से ही मतदाताओं का समर्थन प्राप्त है। अब देखना होगा यहां कि जनता अपनी परंपरा के मुताबिक इस बार भी बदलाव करेगी या फिर कांग्रेस की रणनीति का फायदा उसे मिलेगा।

9. लुंड्रा विधानसभा सीट- यह विधानसभा अम्बिकापुर से लगी हुई है। आलम यह है कि नगर निगम अम्बिकापुर के भी कुछ हिस्से इस विधानसभा में आते हैं। यहां भी सरगुजा राजपरिवार की सीधी दखल है। यहां से कांग्रेस के विधायक डॉ प्रीतम राम हैं। एक बार फिर कांग्रेस ने उन्हें मौका दिया है। इसके पहले प्रीतम राम सामरी से विधायक थे, लेकिन 2018 में चिंतामणि सिंह और प्रीतम राम को एक दूसरे की सीट पर बदला गया। दोनों ने ही जीत दर्ज की।

पेशे से डॉक्टर प्रीतम राम आज भी लोगों का इलाज करते रहते हैं। इस विधानसभा में गोंड मतदाता ज्यादा हैं। इसके बाद कंवर और उरांव समाज की संख्या है। भाजपा ने इस बार यहां प्रबोध मींज को प्रत्याशी बनाया है। वह अम्बिकापुर नगर निगम से दो बार मेयर रह चुके हैं और उरांव समाज का होने के कारण कांग्रेस के कोर मतदाताओ में सेंध लगाने में भी सक्षम हैं। इसलिए यहां भी कांग्रेस की राह आसान नहीं है। हालांकि प्रीतम राम का इस क्षेत्र से पुराना नाता है। इनके पिता चमरू राम यहां से 2 बार विधायक रहे हैं। छोटे भाई राम देव राम भी दो बार विधायक रहे हैं और प्रीतम राम एक बार सामरी से और एक बार लुंड्रा से भी दो बार के विधायक हैं।

10. सामरी विधानसभा सीट- यह विधानसभा पूरी तरह वनांचाल और ग्रामीण क्षेत्रों से भरी हुई है। यहां आदिवासी वर्ग में कंवर और गोंड मतदाता सबसे अधिक हैं। तीसरे नंबर पर यहां उरांव समाज के मतदाता हैं। कांग्रेस ने यहां के विधायक चिंतामणि की टिकट काट दी है। यहां से एकदम नए चेहरे विजय पैकरा को मैदान में उतारा है। विजय कंवर समाज से हैं, लिहाजा जातिगत समीकरण को साधने की कोशिश की गई है।

भाजपा ने इस सीट से 2 बार करारी शिकस्त झेल चुके सिद्धनाथ पैकरा की पत्नी उद्धेश्वरी पैकरा को भाजपा ने चेहरा बनाया है। सिद्धनाथ पैकरा 2013 में प्रीतम राम से और 2018 में चिंतामणि सिंह से चुनाव हार चुके हैं। ये भी कंवर समाज से ही हैं। जातिगत जनाधार दोनों ही प्रत्याशियों का बराबर है लेकिन चिंतामणि के बगावती तेवर कांग्रेस का खेल बिगड़ सकते हैं। कांग्रेस ने उन्हे टिकट नहीं दी है और वो बागी हो चुके हैं। उन्होंने तो अम्बिकापुर से टी एस सिंहदेव के खिलाफ भाजपा से टिकट का प्रस्ताव ही रख दिया था। हालांकि उनके मंसूबे कामयाब नहीं हुए लेकिन इसका नुकसान कहीं कांग्रेस को सामरी सीट में ना भुगतना पड़ जाए। यहीं चिंतामणी के पिता गहीरा गुरु का आश्रम है और इनके अनुयाइयों की संख्या भी यहां अधिक है।

11. रामानुजगंज विधानसभा सीट- यह सीट बेहद विवादित और रोचक है। यहां कांग्रेस के 2 बार के विधायक बृहस्पति सिंह को कांग्रेस ने टिकट नहीं दी है और बृहस्पति शुरू में तो बागी हुए लेकिन बाद में शांत बैठ गए हैं। यहां कांग्रेस ने अम्बिकापुर मेयर डॉ अजय तिर्की को टिकट दी है। ये पेशे से डाक्टर हैं और इस क्षेत्र में 15 साल तक सेवा दी है। क्षेत्र में लोगों से इनका अच्छा संबंध है। वर्षों से इन्होंने लोगों का निशुल्क इलाज किया है। स्वभाव से बेहद नर्म व्यक्ति हैं। ये भी प्रीतम राम की तरह राह चलते लोगों का इलाज करते रहते हैं। वहीं भाजपा ने यहां से एक अनुभवी चेहरा रामविचार नेताम को फिर से मैदान में उतार दिया है।

राम विचार 4 बार विधायक, 2 बार मंत्री और राज्य सभा सांसद रह चुके हैं। अच्छा राजनीतिक अनुभव है और काफी तेज तर्रार नेता माने जाते हैं। वहीं इनकी टक्कर सीधे सरल स्वभाव के डॉक्टर से होने जा रही है। इस विधानसभा में भी मामला टक्कर का है लेकिन बृहस्पति सिंह खैरवार समाज से आते हैं और यहां इस समाज की आबादी सबसे अधिक है। इसके बाद गोंड और उरांव मतदाता हैं। नेताम गोंड समाज से तो अजय तिर्की उरांव समाज से आते हैं। अगर यहां बृहस्पति ने बगावत कर दी तो यहां भी बगावत की वजह से कांग्रेस का खेल बिगड़ सकता है।

12. जशपुर विधानसभा सीट- यह सीट जशपुर राजपरिवार के प्रभाव में रही है, लेकिन 2018 के चुनाव में यहां की तीनों सीट पर राजपरिवार का प्रभाव नहीं चल सका या यू कहें की दिलीप सिंह जूदेव के निधन के बाद भाजपा यहां कमजोर पड़ गई। जूदेव हिन्दुत्व की राजनीति करते थे और हमेशा धर्मांतरण के खिलाफ उन्होंने संघर्ष किया। प्रदेश में सबसे अधिक धर्मांतरण जशपुर जिले में ही हुए हैं।

झारखंड बार्डर होने के कारण यहां झारखंड की सियासत भी असर डालती है। इस विधानसभा में उरांव मतदाता ही भाग्य का फैसला करते हैं, जिसमें धर्मांतरण की वजह से दो फाड़ हो चुकी है। ईसाई वर्ग कांग्रेस को वोट करता है जबकि हिन्दू आदिवासी भाजपा को वोट करते हैं, लेकिन 2018 में कांग्रेस दोनों ही समुदाय का वोट लेने में सफल रही।

एक बार फिर भाजपा और कांग्रेस दोनों ने यहां जातिगत समीकरण को साधने का प्रयास किया है। कांग्रेस ने सिटींग विधायक विनय भगत को टिकट दी है तो भाजपा ने उनके खिलाफ पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष राय मुनी भगत को टिकट दी है। दिलीप सिंह जूदेव के बाद उनके बेटों ने भी सियासत की बागडोर संभाल ली है लेकिन प्रबल प्रताप इस बार बिलासपुर की कोटा विधानसभा से भाजपा के लिए चुनाव लड़ रहे हैं लिहाजा जशपुर में राजपरिवार काम नहीं कर सकेगा। एक बार फिर कांग्रेस के सामने मजबूत नेत्रत्व की कमी होगी। अब देखना यह होगा की क्या बिना जूदेव परिवार की मदद के भाजपा यहां जीत पाती है या फिर विनय भगत दोबारा विधायक बनेंगे।

13. पत्थलगांव विधानसभा सीट- इस सीट पर कांग्रेस के वयोवृद्ध विधायक राम पुकार सिंह को ही कांग्रेस ने प्रत्याशी बनाया है। राम पुकार सिंह 7 बार विधायक रह चुके हैं। पहला चुनाव इन्होंने 1977 में जीता था। काफी कद्दावर नेता हैं लेकिन भाजपा ने इनको टक्कर देने रायगढ़ की वर्तमान सांसद गोमती साय को मैदान में उतार दिया है। आदिवासी बाहुल्य विधानसभा है लेकिन जातिगत समीकरणों का यहां बहुत ज्यादा महत्व नहीं रह गया है। चुनाव पार्टी के सिंबल और कैंडिडेट की छवि के आधार पर भी लोग फैसला करेंगे। हालांकि रामपुकार सिंह के पास बड़ा अनुभव है। वह 7 बार विधायक चुने गए हैं। क्षेत्र में उनकी पुरानी और अच्छी पैठ है।

14. कुनकुरी- इस सीट पर भी जशपुर राजपरिवार का प्रभाव रहता था। यहां भी वही समीकरण बैठेगा, जो जशपुर में है। यहां भी उरांव मतदाता ही भाग्य विधाता है। इस जाती मे भी धर्मांतरण के बाद ईसाई बन चुके उरांव हैं, जो कांग्रेस के परंपरागत मतदाता हैं। वहीं दूसरे ओर बड़ी आबादी हिन्दू उरांव समाज की भी है। कांग्रेस से विधायक यूडी मींज को ही कांग्रेस ने चेहरा बनाया है। लेकिन इनके सामने भाजपा ने हिन्दुत्व का कार्ड खेल दिया है और सीनियर लीडर विष्णु देव साय को टिकट दे दी है। विष्णु देव साय पहले विधायक, रायगढ़ सांसद, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और केन्द्रीय मंत्री भी रह चुके हैं। यहां हिन्दू बनाम ईसाई होने की उम्मीद है। अगर एसा हुआ, तो यहां भाजपा को फायदा हो सकता है।

कांग्रेस को भारी पड़ेगी अखिलेश की नाराजगी

अजय कुमार

समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव ने 'इंडिया' गठबंधन की परतें उधेड़ कर रख दी हैं। जिस तरह से कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के बीच मनमुटाव बढ़ता जा रहा था, उसको देखते हुए अखिलेश यादव का कांग्रेस और उसके नेताओं पर हमलावर होना स्वाभाविक है। यदि कांग्रेस आलाकमान गठबंधन की महत्ता को समझते हुए अपने नेताओं को इस बात के लिए रोकता कि वह सपा के खिलाफ गलत बयानबाजी नहीं करें तो इस तरह के हालात पैदा नहीं होते। पहले उत्तर प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष अजय राय समाजवादी पार्टी के खिलाफ उलटी-सीधी बयानबाजी कर रहे थे, अब मध्य प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष और उसके सीएम प्रत्याशी कलमनाथ का मीडिया से यह कहना कि छोड़िये 'अखिलेश-वखिलेश' काफी शर्मनाक है। अखिलेश यादव एक बड़ी पार्टी के अध्यक्ष हैं और उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य के मुख्यमंत्री रह चुके हैं। अखिलेश के बारे में अशोभनीय भाषा बोला जाना पूरे उत्तर प्रदेश का अपमान है। कांग्रेस और कमलनाथ जैसे नेताओं को यह बात समझनी चाहिए। वर्ना इंडिया गठबंधन में कांग्रेस और अन्य दलों के बीच की दूरियां बढ़ती ही जायेंगी। कांग्रेस को यह बात हमेशा ध्यान में रखनी होगी कि यदि वह मध्य प्रदेश में समाजवादी पार्टी की हैसियत पर सवाल उठा सकते हैं तो कल उत्तर प्रदेश में कांग्रेस की औकात भी लोग पूछेंगे। कांग्रेस का यहां एक मात्र सांसद और दो विधायक हैं। यूपी में कांग्रेस का गिरता वोट प्रतिशत भी किसी से छिपा नहीं है। कांग्रेस को इस बात का अध्ययन करना चाहिए कि वह यूपी में सपा के बिना 'शून्य' है। कांग्रेस की नेत्री प्रियंका वाड्रा के यूपी की फूलपुर या अमेठी लोकसभा सीट से चुनाव लड़ने की चर्चा चल रही है, यहां कांग्रेस नेत्री के लिए तब तक जीत की राह आसान नहीं हो सकती है जब तक कि उसे सपा का साथ नहीं मिलेगा। खैर, मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव में एक विधायक वाली समाजवादी पार्टी इस बार के मध्य प्रदेश विधान सभा चुनाव में इंडिया गठबंधन का हिस्सा होने के नाते करीब एक दर्जन सीटों पर गंभीरता के साथ अपनी दावेदारी पेश कर रही थी। वह उन सीटों पर चुनाव लड़ना चाहती थी, जहां पिछले विधान सभा चुनाव में उसके प्रत्याशी को कांग्रेस उम्मीदवार से अधिक वोट मिले थे। लेकिन कांग्रेस ने अपने गठबंधन सहयोगी को ठेंगा दिखा दिया। गठबंधन के तहत एक भी सीट नहीं मिलने पर अखिलेश यादव का पारा सातवें आसमान पर पहुंच गया, जो स्वाभाविक भी था। समाजवादी पार्टी के साथ ही नहीं, कांग्रेस अपने गठबंधन के सभी सहयोगी दलों के साथ ऐसा ही व्यवहार कर रही है। वह गठबंधन सहयोगियों को कुछ देने की बजाय, उनकी पीठ पर सवार होकर अपना चुनावी रिकॉर्ड ठीक करने का सपना पाले हुए है। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने सही कहा कि अगर उन्हें पता होता कि विपक्ष का गठबंधन विधानसभा स्तर के चुनाव के लिए नहीं है तो उनकी पार्टी मध्य प्रदेश में गठबंधन के लिए बातचीत ही नहीं करती। उन्होंने कहा कि अगर सिर्फ लोकसभा चुनाव के लिए तालमेल की बात होगी तो उस पर ही विचार किया जाएगा। लेकिन यहां सवाल यह है कि अखिलेश इतने अपरिपक्व नेता कैसे हो सकते हैं कि उन्हें यही नहीं पता था कि इंडिया गठबंधन सिर्फ लोकसभा चुनाव के लिए बना है। (जैसा कि कांग्रेसी कह रहे हैं)। अखिलेश का कहना है कि अगर यह मुझे पहले दिन पता होता कि विधानसभा स्तर पर 'इंडिया' का कोई गठबंधन नहीं है तो हमारी पार्टी के लोग उस बैठक में नहीं जाते, न हम सूची देते और न ही कांग्रेस के लोगों का फोन उठाते। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री यादव ने कहा कि अगर उन्होंने (कांग्रेस वालों ने) यही बात कही है कि गठबंधन नहीं है तो हम स्वीकार करते हैं। जैसा व्यवहार समाजवादी पार्टी के साथ होगा, वैसा ही व्यवहार उन्हें यहां (उत्तर प्रदेश) पर देखने को मिलेगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश स्तर पर कोई गठबंधन नहीं है तो नहीं है।

सत्यपाल मलिक पर राहुल की आशा

अजय सेतिया

ऐसा लगता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जाति आधारित जनगणना की विपक्षी मांग से बहुत परेशान हैं। इसलिए दशहरे के मौके पर लाल किले की रामलीला में हुए उनके भाषण में जातियों के रावण को जलाने की बात कही गई थी। आम तौर पर दशहरे के मौके पर प्रधानमंत्री या किसी भी नेता की ओर से तीर चला कर रावण का वध करने की औपचारिकता होती रही है। कभी कभार छोटे मोटे भाषण भी हुए हैं, लेकिन नरेंद्र मोदी ने इस बार दशहरे का राजनीतिक इस्तेमाल करने की कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। उन्होंने बहुत लंबा भाषण दिया और उनके भाषण का सबसे ज्यादा राजनीतिक पहलू जातिवाद के खिलाफ लिया गया स्टैंड ही था।

दशहरे के अगले दिन राहुल गांधी ने एक वीडियो जारी किया है। इस वीडियो में वह पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक के साथ बातचीत करते हुए दिखाई दे रहे हैं। सब जानते हैं कि पिछले दो सालों से सत्यपाल मलिक और राहुल गांधी के मुद्दे समान हैं, जैसे अडानी, अग्निवीर, एमएसपी और पुलवामा। इस बातचीत में दोनों ने इन साझा मुद्दों पर नरेंद्र मोदी पर जम कर भड़ास निकाली है। वैसे बातचीत में अनेक विषयों को छुआ गया है, लेकिन इस बातचीत में तीन बातें बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण थी, एक तो जाति आधारित जनगणना, जिस पर सत्यपाल मलिक की मुखर सहमति दिखाई नहीं दी, क्योंकि वह जानते हैं कि जाटों की संख्या सीमित क्षेत्रों में और बहुत कम है और वह जाटों की राजनीति ही करते हैं। दूसरी थी 2024 के लोकसभा चुनावों को लेकर सत्यपाल मलिक की भविष्यवाणी।

सत्यपाल मलिक ने भविष्यवाणी की है कि मोदी सरकार के सिर्फ छह महीने रह गए हैं, भारतीय जनता पार्टी लोकसभा का चुनाव हार रही है। तीसरी बात उन्होंने यह कही कि वह राहुल गांधी की इस बात से सहमत नहीं हैं कि पुलवामा का हमला मोदी सरकार ने खुद करवाया था। कांग्रेस के अनेक नेता समय समय पर पुलवामा हमले को प्रायोजित बताते रहे हैं, और आरोप लगाते रहे हैं कि चुनाव जीतने के लिए मोदी ने यह हमला करवाया था। सत्यपाल मलिक ने कहा कि वह यह जरुर कहेंगे कि इन्होंने (मोदी ने) इसे नजरअंदाज किया और बाद में उसका राजनीतिक इस्तेमाल किया। इसके अलावा बातचीत में राहुल गांधी के प्रिय विषय अडानी, किसान आन्दोलन और अग्निवीर योजना का भी जिक्र आया।

सत्यपाल मलिक ने 2019 पुलवामा हमले के लिए सरकार की खामियों को जिम्मेदार ठहराया। वह यह बात पहले भी कई बार कह चुके हैं, लेकिन वह भूल जाते हैं कि पुलवामा हमले के समय राज्य में गवर्नर रूल था और वह खुद जम्मू कश्मीर के गवर्नर थे, अगर खामियां रही हैं, तो उसकी जिम्मेदारी खुद उनकी थी। सत्यपाल मलिक ने यह कह कर खुद को ही कटघरे में खड़ा कर लिया है कि वह एक नाकाम प्रशासक थे, क्योंकि सीआरपीएफ वाहन पर हमला करने वाला विस्फोटक से भरा ट्रक लगभग 10-12 दिनों से इलाके में घूम रहा था।

मलिक खुद राज्यपाल थे, इसलिए राज्य में होने वाली हर घटना, दुर्घटना के लिए वह खुद जिम्मेदार थे, और वह खुद कह रहे है कि विस्फोटकों से भरा ट्रक 10-12 दिन से इलाके में घूम रहा था। वह कहते हैं कि विस्फोटक पाकिस्तान से भेजे गए थे। गाड़ी के ड्राइवर और मालिक का आतंकी रिकॉर्ड था। उन्हें कई बार गिरफ्तार किया गया और फिर रिहा किया गया। लेकिन, वे खुफिया विभाग के रडार पर नहीं थे। यह सब कुछ राज्यपाल रहते हुए उनकी नाक के नीचे हो रहा था।

सत्यपाल ने अपनी पहले की बात दोहराते हुए राहुल गांधी को बताया कि सीआरपीएफ ने पांच विमानों की मांग की थी, जो केंद्र सरकार ने उन्हें उपलब्ध नहीं करवाए थे, अगर गृहमंत्रालय विमान उपलब्ध करवा देता, तो हादसे से बचा जा सकता था। जबकि सत्यपाल मलिक बहुत अच्छी तरह जानते हैं कि बटालियन की मूवमेंट उनके अपने वाहनों से ही होती है, विमानों से नहीं। अगर सुरक्षा कर्मियों को विमानों पर भेज भी दिया जाता, तो क्या सारे वाहन भी विमानों पर भेजे जाते? क्योंकि सेना और अर्द्ध सैनिक बलों के वाहनों का मूवमेंट तो फिर भी होना ही था, और ट्रक खाली तो नहीं जाते। हर ट्रक में कम से कम पांच जवान तो होते ही।

अब मलिक कह रहे हैं कि अगर उनसे कहा जाता तो वह सीआरपीएफ को विमान उपलब्ध करवा देते। वह एक अव्यवहारिक और राज्यपाल के अधिकार क्षेत्र से बाहर की बात कर रहे हैं। केन्द्रीय सुरक्षा बल अपने विभाग से ही बात करेंगे, राज्यपाल से क्यों करेंगे। अपनी तारीफ़ में सत्यपाल मलिक ने बर्फ से बच्चों को निकालने के लिए भेजे गए विमानों का उदाहरण दिया है। लेकिन जम्मू कश्मीर के बर्फ में फंसे बच्चों को निकालना राज्यपाल के नाते उनकी जिम्मेदारी का हिस्सा थी, उन्होंने अपनी जिम्मेदारी से अलग कोई काम नहीं किया, बल्कि अगर वह ऐसा नहीं करते तो अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकते थे।

सत्यपाल मलिक ने अपनी बातचीत में कहा कि पुलवामा हमले की जांच नहीं करवाई गई, लेकिन तथ्य यह है कि पुलवामा हमले के 6 दिन बाद 20 फरवरी को इसकी जांच नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी को सौंपी गई थी। करीब डेढ़ साल बाद 25 अगस्त 2020 को एनआईए ने 13 हजार 500 पन्नों की चार्जशीट दाखिल की थी। इस चार्जशीट में एनआईए ने आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद और उसके सरगना मसूद अजहर को हमले का मास्टरमाइंड बताया था।

पुलवामा विस्फोट लंबे समय के बाद हुआ आतंकी हमला था, जिसके जवाब में मोदी सरकार ने पाकिस्तान में घुस कर बालाकोट पर एयर स्ट्राईक की थी। क्योंकि भारत ने पहली बार हमलावर देश के भीतर घुस कर सर्जिकल एयर स्ट्राईक की थी, और यह चुनावों के दौरान ही हुई थी, इसलिए स्वाभाविक है कि चुनावों में इतनी बड़ी घटना का बार बार जिक्र होना ही था।

सत्यपाल मलिक का कहना है कि मोदी 2019 का चुनाव सर्जिकल स्ट्राईक के कारण जीत गए थे, इसलिए 2024 में उनके जीतने का सवाल ही नहीं। एक्स पर बातचीत का वीडियो शेयर करते हुए राहुल गांधी ने लिखा कि क्या इस बातचीत से ईडी-सीबीआई के बीच हलचल मच जाएगी? शायद राहुल को यह अंदाजा नहीं कि सत्यपाल मलिक के अव्यवहारिक आरोप जनता को प्रभावित करने में अब तक विफल रहे हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा....

महोपनिषद् (भाग-26)

गतांक से आगे...

मन के रागरहित, अनासक्त, द्वन्द्व से रहित तथा निरालम्ब हो जाने पर पिंजड़े से मुक्त हुए पक्षी की तरह ही मोह बन्धन से मन की मुक्ति हो जाती है। संशयरूप दुरात्मभावना जिनकी शान्त हो चुकी है, जो प्रपञ्च कौतुक से विमुक्त हैं, उनका चित्त पूर्णमासी के चन्द्र के समान विशेष शोभा पाता है।

न मैं स्वयं और न अन्य कुछ ही यहाँ है, मैं तो सभी दोषों से रहित मात्र ब्रह्म हूँ, जिसकी दृष्टि सत-असत् के मध्य इस प्रकार की है, वही वास्तव में ब्रह्म साक्षात्कार करने वाला है। जिस प्रकार दर्शनीय दृश्यों की तरफ मन स्वाभाविक रूप से बिना आसक्ति के ही खिंच जाता है, उसी प्रकार धीरमति पुरुष कर्तव्य कर्मों के निर्वाह में संलग्न रहते हैं। भली प्रकार सोच-समझकर भोगा गया भोग उसी तरह संतुष्टि का निमित्त बनता है, जिस तरह जान-बूझकर सेवा में संलग्न चोर चौर्यकार्य को छोड़कर मित्रता ही निभाता है।

जिस ग्राम में जाने का मन में कभी विचार भी नहीं था, ऐसे ग्राम में अचानक आ जाने पर यात्री जिस आश्चर्य भरी दृष्टि से उसे देखता है, उसी दृष्टि से ज्ञानीपुरुष भोग-ऐश्वर्यों पर दृष्टिपात करता है। बिना श्रम से उपलब्ध हुई स्वल्पमात्र भोग सामग्री को नियन्त्रित मन वाला साधक बहुत अधिक समझते हुए कष्टदायी मानकर त्याग देता है। शत्रु के बन्धन से मुक्त होने पर जो राजा भोजन के एक ग्रास से सन्तुष्ट हो जाता है, वही राजा शत्रु द्वारा आक्रान्त और आबद्ध न किये जाने पर राज्य के विशाल वैभव को भी तुच्छ ही मानता है।

हाथ से हाथ को मलकर, दाँत से दाँत को पीसकर तथा अङ्गों से अङ्गों को दबाकर अर्थात् स्वकीय सम्पूर्ण पराक्रम और साहस द्वारा मन को जीतने का प्रयास करे। इस संसार सागर में मन पर विजय पाने से बढ़कर अन्य उपाय नहीं है। इस भयंकर नरक रूपी साम्राज्य में दुष्कृत रूपी मतवाले हाथी भ्रमण करते हैं।

आशारूपी बाणों और कटारों से सुसज्जित इन्द्रियरूपी वैरियों को जीतना अत्यन्त मुश्किल है। जो इन्द्रियरूपी वैरियों को अपने वशीभूत कर चुके हैं तथा जिन्होंने चित्त के अहंभाव को विनष्ट कर दिया है, उनकी भोग लिप्साएँ उसी प्रकार समाप्त हो जाती हैं, जैसे हेमन्त ऋतु में कमल का पौधा सूख जाता है।

एकत्व के दृढ़ अभ्यास द्वारा जब तक मन को नियन्त्रित नहीं कर लिया जाता, तब तक ही रात्रि में बेताल की तरह हृदय में वासना टिकी हुई रहती है। विवेकशील व्यक्ति अपने मन को अभीष्ट सिद्धि के लिए सेवक के समान सभी प्रयोजनों की पूर्ति के लिए मन्त्रीरूप तथा सम्पूर्ण इन्द्रियों को स्वनियन्त्रित करने के लिए सामन्तरूप बना लेते हैं, ऐसा मेरा विचार है। मेरे विचार से मनीषी का मन लालन करने के फलस्वरूप स्नेहमयी ललना स्वरूप और पालन करने से पितृतुल्य है।

क्रमशः ...

राम नाम के जाप ने डाकू रत्नाकर को बना दिया महर्षि वाल्मीकि

मृत्युंजय दीक्षित

आज वाल्मीकि जयंती है। शरद पूर्णिमा के दिन महर्षि वाल्मीकि की जयंती होती है। महर्षि वाल्मीकि का प्रारंभिक नाम रत्नाकर था। इनका जन्म पवित्र ब्राह्मण कुल में हुआ था लेकिन दस्युओं के संसर्ग में रहने के कारण ये लूटपाट और हत्या करने लग गये थे। यही उनकी आजीविका का साधन बन गया था। इन्हें जो भी मार्ग में मिलता उसकी सम्पत्ति लूट लिया करते थे। एक दिन रत्नाकर की भेंट देवर्षि नारद से हो गई। उन्होंने नारद जी से कहा, तुम्हारे पास जो कुछ है उसे निकालकर रख दो, नहीं तो जीवन से हाथ धोना पड़ेगा।

देवर्षि नारद ने कहा, मेरे पास इस वीणा और वस्त्र के अतिरिक्त है ही क्या? तुम लेना चाहो तो इन्हें ले सकते हो, लेकिन तुम यह क्रूर कर्म करके भयंकर पाप क्यों करते हो? देवर्षि की कोमल वाणी सुनकर रत्नाकर का कठोर हृदय कुछ द्रवित हुआ। उन्होंने कहा- भगवान! यही मेरी आजीविका का साधन है। इसके द्वारा मैं अपने परिवार का भरण -पोषण करता हूं। देवर्षि बोले- तुम जाकर पहले परिवार वालों से पूछ आओ कि वे तुम्हारे द्वारा केवल भरण-पोषण के अधिकारी हैं या तुम्हारे पाप कर्मों में भी हिस्सा बटायेंगे। तुम विश्वास करो कि तुम्हारे लौटने तक हम कहीं नहीं जायेंगे। इतने पर भी यदि तुम्हें विश्वास न हो तो मुझे इस पेड़ से बांध दो। देवर्षि को पेड़ से बांधकर रत्नाकर अपने घर गये और अपने परिजनों से पूछा कि, तुम लोग मेरे पापों में भी हिस्सा लोगे या मुझसे केवल भरण पोषण ही चाहते हो। सभी ने एक स्वर में कहा, हम तुम्हारे पापों के भागी नहीं बनेंगे। तुम धन कैसे लाते हो यह तुम्हारे सोचने का विषय है। अपने परिजनों की बात को सुनकर रत्नाकर के हृदय में आघात लगा। उनके ज्ञान नेत्र खुल गये। उन्होंने जल्दी से जंगल में जाकर देवर्षि के बंधन खोले और विलाप करते हुए उनके चरणों में गिर पड़े। उन्हें बहुत पश्चाताप हुआ। नारद जी ने उन्हें धैर्य बंधाया और राम नाम के जप का उपदेश दिया, किंतु पूर्व में किये गये भयंकर पापों के कारण उनसे राम नाम का उच्चारण नहीं हो पाया। तब नारद जी ने उसे मरा -मरा जपने के लिये कहा। बार-बार मरा -मरा कहने के कारण वह राम का उच्चारण करने लग गये।

नारद जी का उपदेश प्राप्त करके रत्नाकर वाल्मीकि बन कर राम नाम जप में निमग्न हो गये। हजारों वर्षों तक नाम जप की प्रबल निष्ठा ने उनके सभी पापों को धो दिया। उनके शरीर पर दीमकों ने अपनी बांबी बना दी। दीमकों के घर को वाल्मीक कहते हैं उसमें रहने के कारण ही इनका नाम वाल्मीकि पड़ा। ये विश्व में लौकिक छंदों के आदि कवि हुए। वनवास के समय भगवान श्रीराम ने इन्हें दर्शन देकर कृतार्थ किया। इन्हीं के आश्रम में ही लव और कुश का जन्म हुआ था। इस प्रकार नाम जप और सत्संग के प्रभाव के कारण तथा अत्यंत कठोर तप से रत्नाकर दस्यु ,महर्षि वाल्मीकि हो गये।

सतयुग, त्रेता और द्वापर तीनों कालों में ही वाल्मीकि का उल्लेख मिलता है। वाल्मीकि रामायाण से पता चलता है कि उन्हें ज्योतिष विद्या का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त था। महर्षि वाल्मीकि ने अपने महाकाव्य रामायण में अनेक घटनाओं के समय सूर्य चंद्र तथा अन्य नक्षत्र की स्थितियों का वर्णन किया है। वाल्मीकि जी को भगवान श्रीराम के जीवन में घटित प्रत्येक घटना का पूर्ण ज्ञान था। रामचरितमानस के अनुसार जब श्रीराम वाल्मीकि जी के आश्रम गये तो वह आदिकवि के चरणों में दंडवत हो गये और कहा कि, तुम त्रिकालदर्शी मुनिनाथा बिस्व बदर जिमि तुमरे हाथा। अर्थात आप तीनों लोको को जानने वाले स्वयं प्रभु हैं। ये संसार आपके हाथ में एक बेर के समान प्रतीत होता है। महर्षि वाल्मीकि ने अपने महाकाव्य रामायण के माध्यम से हर किसी को सदमार्ग पर चलने की शिक्षा दी है।

सेना की शह पर पाकिस्तान लौटे नवाज

सुशांत सरीन

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के देश लौटने को लेकर महीनों से जारी अटकलों पर पिछले सप्ताह विराम लग गया। चार साल के आत्मनिर्वासन के बाद वह देश लौट आये हैं। इसमें किसी को संदेह नहीं होना चाहिए कि उनकी वापसी सेना के आशीर्वाद के सहारे ही मुमकिन हुई है, जो पाकिस्तान का स्थायी सत्ता प्रतिष्ठान है। तकनीकी तौर पर, नवाज कानून की नजरों में भगोड़े हैं। लेकिन इसके बावजूद वापसी पर उनका किसी भावी प्रधानमंत्री की तरह सत्कार हुआ। उनके खिलाफ दिखने वाली और वर्ष 2017 में उन्हें सत्ता से बाहर करने में प्रमुख निभाने वाली अदालतों का भी मिजाज अलग है।

उन्हें आने के साथ ही भ्रष्टाचार के दो बड़े मामलों में जमानत मिल गयी। तीन बार प्रधानमंत्री रह चुके नवाज शरीफ एक बार फिर से सेना के पसंदीदा उम्मीदवार हैं, जो उन्हें इस दफा इमरान खान के खिलाफ खड़ा करना चाहती है। एक तरह से, नवाज शरीफ की वापसी से पाकिस्तान में पहिया एक बार फिर घूमकर पुरानी जगह लौट आया है। ना केवल 2017 में हुई संदिग्ध विदाई के बाद वह वापस राजनीति के केंद्र में आ गये हैं, बल्कि उनकी राजनीति भी 1980 के दशक के दौर में पहुंच गयी है जब सेना ने बेनजीर भुट्टो को चुनौती देने के लिए उन्हें सियासत में उतारा। इस बार फिर राजनीतिक जमीन उनके पक्ष में तैयार की जा रही है। इस बात की पूरी कोशिश हो रही है कि किसी भी प्रकार से इमरान खान की पार्टी तहरीक-ए-इंसाफ को बेअसर किया जाए और उन्हें भी चुनावी मैदान में प्रभावी तरीके से उतरने से रोका जा सके।

लेकिन, नवाज शरीफ चार साल बाद जिस पाकिस्तान में लौट रहे हैं, वह बदल चुका है। देश में जबरदस्त ध्रुवीकरण है, वह आर्थिक रूप से खस्ताहाल है, और जिहादी हिंसा में घिरा है। खास तौर पर आर्थिक दुश्वारियों से निपटने के लिए अपनायी गयी नीतियों की वजह से उसका जनाधार सिमटा है। एक ताजा सर्वे की मानें तो आज यदि निष्पक्ष चुनाव हों, तो इमरान खान की एकतरफा जीत होगी और नवाज की पार्टी धूल चाटती दिखेगी। अब नवाज शरीफ से उम्मीद होगी कि वह खासतौर से पंजाब में अपना मूल जनाधार मजबूत करें। हालांकि, सेना भले उन्हें गद्दी पर बिठाना चाहती हो, लेकिन उसे इस बात का भरोसा नहीं है कि कहीं नवाज फिर से पलट न जाएं।

पिछले तीनों कार्यकालों में नवाज की विदाई फौज के साथ टकराने की वजह से हुई। नवाज हमेशा अपने रास्ता चलना चाहते थे, लेकिन जनरलों को यह बात मंजूर नहीं थी कि वह किसी असैनिक का आदेश मानें। ऐसे में सेना की यह कोशिश होगी कि नवाज भले ही चौथी बार सरकार बनायें, लेकिन वह गठबंधन सरकार हो, जिसकी डोर सेना मुख्यालय से संचालित होती हो। पाकिस्तान में पीटीआइ से अलग होकर निकले इमरान खान के दो करीबी लोगों, जहांगीर तरीन और परवेज खटक, के नेतृत्व में दो नयी पार्टियां चुनाव में हाथ आजमाएंगी। इस बात की पूरी कोशिश होगी कि जनादेश ऐसा बंटा आए कि केंद्र के अलावा पंजाब और खैबर-पख्तूनख्वा प्रांतों में सत्ता संतुलन की चाभी उनके हाथों में भी रहे। हालांकि पाकिस्तान में बहुत लोगों को लगता है कि ऐसी कोई सरकार टिकाऊ नहीं होगी क्योंकि उसके लिए देश को पटरी पर लाने के लिए सख्त फैसले लेना मुमकिन नहीं होगा।

वैसे चुनाव में यदि इमरान खान को हिस्सा नहीं लेना दिया गया, तो ऐसे किसी चुनाव की वैधता पर सवाल जरूर उठेंगे। लेकिन पाकिस्तान की राजनीति में जायज-नाजायज को लेकर शायद ही कोई बहस होती हो। बलूचिस्तान के पूर्व मुख्यमंत्री असलम रायसानी का एक कथन मशहूर है, कि ग्रैजुएशन की डिग्री एक डिग्री ही होती है, वह चाहे असल हो या जाली। यही बात पाकिस्तान की राजनीति पर भी लागू होती है, कि चुनावी जीत का मतलब जीत है, वह चाहे जनसमर्थन से मिली हो या जोड़-तोड़ से। लेकिन नवाज शरीफ की चिंता दूसरी है, और वह है उनकी पार्टी की घटती लोकप्रियता। उनके समर्थक जरूर हैं, मगर अब उनकी ताकत वैसी नहीं रही जैसी पांच साल पहले होती थी। ऐसे में उन्हें सत्ता चलाने के लिए फिर से अपनी राजनीतिक जमीन को तैयार करना होगा।

वतन वापसी पर लाहौर में हुई उनकी पार्टी में भीड़ जरूर जुटी, लेकिन यह इतनी बड़ी नहीं थी, जिसके बूते पर उनकी पार्टी लहर होने का दावा कर सके। इस सभा में वह ऊर्जा और उत्साह नहीं था, जो इमरान खान की रैलियों में झलकता है। नवाज शरीफ ने इसमें सभी जरूरी मुद्दों को छुआ, लेकिन उनके समर्थकों की प्रतिक्रियाएं बनावटी लगीं। उन्होंने आर्थिक मुश्किलें दूर करने की चर्चा की, लेकिन यह नहीं बता सके कि यह कैसे हो पाएगा। वह केवल सामान्य बातें करते रहे, जो पहले भी कही जाती रही हैं, कि निर्यात बढ़ाना है, आइटी क्रांति करनी है, सरकारी खर्चे घटाना है, सरकारी क्षेत्र में सुधार करना है, टैक्स सुधार करना है, रोजगार बढ़ाना है, आदि। वह ऐसा कुछ नहीं बता सके कि अपने चौथे कार्यकाल में वह क्या अलग करेंगे। भारत के साथ संबंधों के संदर्भ में ऐसी एक सोच रही है कि नवाज शरीफ के सत्ता में आने से दोनों देशों के रिश्तों में प्रगति होगी। अपने भाषण में उन्होंने इसकी चर्चा भी की। लेकिन, एक बार फिर इसमें ऐसा कुछ भी नया नहीं था, जो पहले नहीं कहा गया हो। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान अपने पड़ोसियों से लड़ने के साथ-साथ विकास जारी रखने की भी उम्मीद नहीं रख सकता। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान को भारत समेत, हर किसी से रिश्ते सुधारने चाहिए। उन्होंने कश्मीर मुद्दे के एक सम्मानजनक समाधान की भी इच्छा जतायी। लेकिन, जम्मू कश्मीर में अनुच्छेद 370 के निरस्त होने की घटना से बात इतनी आगे निकल चुकी है कि नवाज यदि उसे पलटने की बात करते भी हैं तो वह किसी और दुनिया की बात लगेगी। हालांकि अभी भी यह उम्मीद जरूर है कि उनके सत्ता में लौटने से दोनों देशों के रिश्तों में थोड़ी हलचल होगी। भारत भी इस दिशा में की गयी पहलों का जवाब देगा, बशर्ते वे गंभीर हों।

हिन्द स्वराज

मशीनें

प्रश्न- आप पश्चिम की सभ्यता को निकाल बाहर करने की बात कहते हैं, तब तो आप यह भी कहेंगे कि हमें कोई भी मशीन नहीं चाहिए।

उत्तर- मुझे जो चोट लगी थी उसे यह सवाल करके आपने ताजा कर दिया है। मि. रमेश चन्द्र दत्त की पुस्तक हिन्दुस्तान का आर्थिक इतिहास जब मैंने पढ़ी, तब भी मेरी ऐसी हालत हो गयी थी। उसका फिर से विचार करता हूँ, तो मेरा दिल भर आता है। मशीन की झपट लगने से ही हिन्दुस्तान पामाल हो गया है। मैन्चेस्टर ने हमें जो नुकसान पहुँचाया है, उसकी तो कोई हद ही नहीं है। हिन्दुस्तान से कारीगरी जो करीब-करीब खतम हो गयी, वह मैन्चेस्टर का ही काम है। लेकिन मैं भूलता हूँ। मैन्चेस्टर को दोष कैसे दिया जा सकता है? हमने उसके कपड़े पहने तभी तो उसने कपड़े बनाये। बंगाल की बहादुरी का वर्णन जब मैंने पढ़ा तब मुझे हर्ष हुआ। बंगाल में कपड़े की मिलें नहीं हैं, इसलिए लोगों ने अपना असली धंधा फिर से हाथ में ले लिया। बंगाल बम्बई की मिलों को बढ़ावा देता है वह ठीक ही है; लेकिन अगर बंगाल ने तमाम मशीनों से परहेज किया होता, उनका बायकाट बहिष्कार किया होता, तो और भी अच्छा होता। मशीनें यूरोप को उजाड़ने लगी हैं और वहाँ की हवा अब हिन्दुस्तान में चल रही है। यंत्र आज की सभ्यता की मुख्य निशानी है और वह महापाप है, ऐसा मैं तो साफ देख सकता हूँ। बम्बई की मिलों में जो मजदूर काम करते हैं, वे गुलाम बन गये हैं। जो औरतें उनमें काम करती हैं, उनकी हालत देखकर कोई भी काँप उठेगा। जब मिलों की वर्षा नहीं हुई थी तब वे औरतें भूखों नहीं मरती थी। मशीन की यह हवा अगर ज्यादा चली, तो हिन्दुस्तान की बुरी दशा होगी। मेरी बात आपको कुछ मुश्किल मालूम होती होगी। लेकिन मुझे कहना चाहिए कि हम हिन्दुस्तान में मिले कायम करें, उसके बजाय हमारा भला इसी में है कि हम मैन्चेस्टर को और भी रुपये भेजकर उसका सड़ा हुआ कपड़ा काम में लें; क्योंकि उसका कपड़ा काम में लेने से सिर्फ हमारे पैसे ही जायेंगे। हिन्दुस्तान में अगर हम मैन्चेस्टर कायम करेंगे तो पैसा हिन्दुस्तान में ही रहेगा, लेकिन वह पैसा हमारा खून चूसेगा; क्योंकि वह हमारी नीति को बिलकुल खतम कर देगा। जो लोग मिलों में काम करते हैं उनकी नीति कैसी है, यह उन्हीं से पूछा जाय। उनमें से जिन्होंने रुपये जमा किये हैं, उनकी नीति दूसरे पैसे वालों से अच्छी नहीं हो सकती। अमेरिका के रॉकफेलरों से हिन्दुस्तान के रॉकफेलर कुछ कम हैं, ऐसा मानना निरा अज्ञान है। गरीब हिन्दुस्तान तो गुलामी से छूट सकेगा, लेकिन अनीति से पैसे वाला बना हुआ हिन्दुस्तान गुलामों से कभी नहीं छूटेगा।

क्रमशः ...

कपड़े फाड़ जैसे जुमले क्यों उछल रहे हैं चुनाव में

शकील खान

मध्य प्रदेश में चुनाव सिर पर हैं, चुनावी सरगर्मी अपने चरम पर है और उधर नेता से लेकर कार्यकर्ता कपड़े फाड़ने में लगे हुए हैं। इस कपड़ा फाड़ चुनाव में कोई किसी और के कपडे फाड रहा है, या फाड़ने को कह रहा है, तो कोई अपने ही कपड़े फाड़ रहा है। दरअसल, इस 'कपड़ा फाड़' जुमले को ईजाद करने का काम मध्य प्रदेश के कांग्रेस अध्यक्ष और कांग्रेस के घोषित मुख्यमंत्री प्रत्याशी कमलनाथ ने किया।

हुआ यूं कि 15 अक्टूबर को टिकट की पहली सूची जारी होने के तत्काल बाद टिकट से वंचित कुछ असंतुष्ट कांग्रेसियों ने कमलनाथ को घेर लिया और कोलारस के विधायक वीरेन्द्र रघुवंशी के टिकट को लेकर एंग्री यंगमेन की तरह कमलनाथ से सवाल करने लगे। जवाब में कमलनाथ बोले 'आप यहां गदर मत कीजिए। दिग्विजय और जयवर्धन (दिग्विजय के विधायक पुत्र) के पास जाइए और उनके कपडे फाडिए। और हां, ये मत कहिएगा कि मैंने कहा था।'

बाद में इस दिलचस्प जुमले को कमलनाथ ने बाकायदा दिग्विजय सिंह के सामने दोहराया भी। दिग्विजय ने अपने अंदाज में जवाब भी दिया। ये अलग बात है कि दोनों का ही अंदाज (दोनों बार) तल्ख नहीं था बल्कि हास-परिहास के मूड में सार्वजनिक रूप से पत्रकारों के सामने यह गुफ्तगू हुई। इस बार अवसर था कांग्रेस के घोषणा पत्र जारी होने का। कमलनाथ ने कहा ' मैंने कहा था कि बात न मानें तो उनके %कपड़े फाडिए।% जवाब में दिग्विजय बोले 'भैया, ए फार्म पर किसके दस्तखत होते हैं, पीसीसी चीफ के. तो कपड़े किसके फटने चाहिए।' नहले पर दहला मारते हुए कमलनाथ बोले 'मैंने बहुत पहले इन्हें पॉवर ऑफ अटॉर्नी दी थी कि कमलनाथ के लिए आप गालियां खाइए, ये आज भी वैलिड है।'

दिग्विजय का जवाब, 'लेकिन गलती कौन कर रहा है ये भी पता होना चाहिए। कमलनाथ 'गलती हो या न हो, गाली खानी है।' दिग्विजय समर्पण अंदाज में बोले 'अब शंकरजी का काम यही है विष पीने का तो पिएंगे।' कमलनाथ ने यह कहकर बात खत्म की 'इन्होंने बहुत कड़वे घूंट पिए हैं, मेरे लिए, आगे भी पीने पडेंगे।' इससे पहले कमलनाथ सिंह ने ये भी कहा 'मेरा और दिग्विजय का संबंध राजनीतिक नहीं है, हंसी-मजाक का है, प्यार का है। मेरा संबंध इनसे बहुत पुराना है, पारिवारिक है।' कुछ समय पहले कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता और प्रदेश प्रभारी रणदीप सुरजेवाला भी कमलनाथ-दिग्विजय की जोड़ी को

'जय-वीरू' की जोड़ी बता चुके हैं।

कमलनाथ-दिग्विजय के बीच भले ही तल्खी न हो, लेकिन विपक्ष ने जुमले को लपकने में देर नहीं की। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह लगातार इस मुद्दे पर तंज कसते नजर आ रहे हैं। उन्होंने कहा 'ये कांग्रेस का असली चेहरा है, एक पूर्व मुख्यमंत्री दूसरे पूर्व मुख्यमंत्री के लिए कह रहा है- जाओ उनके कपड़े फाड़ो, उनके बेटे के कपड़े फाड़ो, यही कांग्रेस का असली स्वरूप है।'

बाद में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने दिग्विजय के तो नहीं, अपने खुद के कपडे जरूर फाड़ डाले, दिग्विजय के पुतले जलाए। कमलनाथ के बंगले पर पंगत की। इस पर कांग्रेसी भले ही ये बोलें कि 'टिकट पाने के लिए नेताओं की ये आपाधापी उनका ये मूड और हुजूम बता रहा है कि अगली सरकार कांग्रेस की बन रही है। लेकिन शिवराज ने कपड़े फाड़ने और पुतले जलाने पर अपने अंदाज में तंज कसा, बोले 'एक दिल के टुकडे हुए हजार कुछ इधर गिरे कुछ उधर गिरे।' इससे पहले कमलनाथ-दिग्विजय की रोचक गुफ्तगू पर टिप्पणी करते हुए शिवराज ने कहा कि 'ऐसे काम करते ही क्यों हो कि गाली खाना पडे।'

कांग्रेस के हर बयान और घटनाक्रम पर ज्योतिरादित्य सिंधिया जरूर व्यंग्य कसते हैं। सो कपड़ा फाड़ बयान पर भी वो कहां चुप रहने वाले थे, बोले 'मेरी कांग्रेसियों की सोच नहीं, जो पकड़-पकड़ कर फाड़े।% भाजपा प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा ने भी इस टिप्पणी को लेकर कांग्रेस को घेरा। लेकिन इस कपड़ा फाड़ प्रतियोगिता में भाजपाइ भी पीछे नहीं हैं। उन्होंने जबलपुर में केन्द्रीस मंत्री और मध्य प्रदेश चुनाव के प्रभारी भूपेन्द्र यादव के सामने आपस में खूब लात घूंसे चलाए।

वे जबलपुर उत्तर से अभिलाष पांडे के टिकट का विरोध कर रहे थे। बेशक यहां व्यवहारिक रूप से कपड़े नहीं फाड़े पर सांकेतिक तो थे ही। इसी तरह सिंधिया समर्थक मुन्नालाल गोयल का टिकट कटने पर उनके समर्थकों ने जय विलास के अंदर प्रदर्शन किया। मुन्ना लाल गोयल का टिकट काटकर सिंधिया की मामी माया सिंह को टिकट दिया गया है।

'कपड़े फाड़ना' हिंदी का रोचक और वर्सटाइल मुहावरा है। यह मुहावरा अकसर खुद को साहसी, प्रभावशाली या दूसरों से बड़ा बताने के लिए प्रयुक्त होता है। 'कपड़े फाड़ना' का उपयोग व्यक्तिगत जीवन के अन्य साथी, प्रतिस्पर्धी या दूसरे लोगों के साथ आत्मप्रशंसा दिखाने के लिए भी किया जा सकता है। इसका शाब्दिक अर्थ ये होता है कि खुद को अधिक महत्वपूर्ण, प्रमुख या प्रभावशाली दिखाना। ऐसा व्यक्ति अपने प्रतिद्वंदी के लिए कहता है 'वो कपडे फाड़ रहा है तो मैं क्या कर सकता हूं।' इसका प्रयोग दूसरे अर्थ में भी हो सकता है। जिस अर्थ में कमलनाथ ने किया।

लेकिन कपड़े सिर्फ राजनीतिज्ञ नहीं फाड़ रहे हैं। कपड़े दूसरे लोग भी फाड़ रहे हैं। एक पत्रकार इसलिए आक्रोशित होकर कपड़े फाड़ने लगे कि उन्होंने जो खबर छापी थी वो बाद में सही साबित नहीं हुई। एक और जर्नलिस्ट ने इसलिए कपड़े फाड़े कि कांग्रेस की दूसरी लिस्ट में सरप्राइजिंग एलीमेंट नहीं है। एक और जर्नलिस्ट ने इसलिए फाड़े कि आज कोई मसालेदार खबर नहीं मिली। कुल जमा ये कि कपड़े फाड़ने के कारणों में भरपूर विविधता है।

चुनावी घोषणाओं में जब गरीबों के लिए कल्याणकारी वादे सामने आते हैं तो मध्यम वर्गीय और उच्च मध्यमवर्गीय विशेष रूप से अपने कपड़े फाड़ने लगते हैं , उनका कहना है कि 'टैक्स हम दें, और मजे वो करें'। जब सभी कपड़े फाड़ रहे हों तो जनता भला क्यों पीछे रहे, वो पूछ रहे हैं कि 'ये राजनीतिक दल हमें ठगने को उतारू हैं, तो भला हम कपड़े नहीं फाड़ें तो क्या करें ?' आप ही बताइए...?

कांग्रेसियों को हो रहा गलती का एहसास

अमित शर्मा

कांग्रेस के पूर्व नेताओं-कार्यकर्ताओं को अब अपनी गलती का एहसास हो रहा है। उन्हें लग रहा है कि यदि दिल्ली का विकास करना है, तो उन्हें उसी पार्टी का साथ देना चाहिए जिसके साथ वे वर्षों से जुड़े रहे थे। इस अनुभव के साथ पार्टी के वे पुराने नेता-कार्यकर्ता पार्टी में वापस आ रहे हैं, जिन्होंने दिल्ली में कांग्रेस के कमजोर होने के बाद भाजपा या आम आदमी पार्टी का दामन थाम लिया था। पार्टी के पुराने नेताओं-कार्यकर्ताओं की कांग्रेस में वापसी उस अरविंदर सिंह लवली के कारण हो रही है, जो कभी शीला दीक्षित का बेहद खास हुआ करते थे। बुधवार को भी उन्होंने नई दिल्ली और दिल्ली कैंट इलाके के सैकड़ों पुराने कार्यकर्ताओं की पार्टी में वापसी कराई। इसमें कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ चुके संदीप सिंह भी शामिल हैं, तो भाजपा की जिला इकाई की पदाधिकारी भी। यह काम केवल पूर्वी दिल्ली या दिल्ली कैंट इलाके में ही नहीं हो रहा है। दिल्ली के अलग-अलग इलाकों से नेताओं-कार्यकर्ताओं को वापस लाने की कोशिश हो रही है। इसमें पंजाबी, बनिया, दलित और मुस्लिम नेता-कार्यकर्ता सभी शामिल हैं। ये वर्ग कांग्रेस के परंपरागत वोटर हुआ करते थे। आम आदमी पार्टी के मजबूत होने के बाद ये वोटर उसकी ओर चले गए, जिससे कांग्रेस कमजोर होती चली गई। लेकिन अरविंदर सिंह लवली पार्टी नेताओं के बीच एक नई उम्मीद बनकर उभरे हैं और उनके कारण पार्टी को मजबूती मिलती दिख रही है। दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के मीडिया इंचार्ज जितेंद्र कोचर ने मीडिया से कहा कि चुनाव के समय नेताओं-कार्यकर्ताओं का किसी एक पार्टी को छोड़कर दूसरी पार्टी में जाना सामान्य बात है। लेकिन यहां खास बात है कि चुनाव करीब न होने के बाद भी उनके पुराने नेता-कार्यकर्ता वापस आ रहे हैं। चूंकि, कांग्रेस इस समय दिल्ली में सत्ता में नहीं है, इन लौट रहे कार्यकर्ताओं को यहां कुछ मिलने की उम्मीद भी नहीं है। उनके लिए संघर्ष की एक जमीन खुली है, जिसके एक तरफ दिल्ली की सत्ताधारी पार्टी आप और दूसरी तरफ केंद्र की सत्ताधारी पार्टी भाजपा है। इसके बाद भी पार्टी में लोगों की वापसी हो रही है, तो पार्टी के लिए यह शुभ संकेत है। कांग्रेस के नेताओं को उम्मीद है कि शीला दीक्षित का यह पूर्व कमांडर दिल्ली में पार्टी की वापसी कराने में सफल रहेगा। दिल्ली कांग्रेस के जिस कार्यालय में मुश्किल से कोई दिखाई देता था, यदि उसके सामने वाहनों का भारी काफिला दिखाई देता है तो उसके पीछे लोगों की यह उम्मीद ही है। अरविंदर सिंह लवली इसके पहले भी प्रदेश की कमान संभाल चुके हैं। अपने पिछले कार्यकाल में वे पार्टी के लिए कोई बड़ी सफलता हासिल नहीं कर सके थे। इसके बाद भी यदि लोगों में उन्हें लेकर इतनी उम्मीद है तो इसके कुछ कारण समझे जा सकते हैं। दरअसल, राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा ने उनमें उत्साह भर दिया है। उन्हें लगता है कि जिस तरह पूरे देश में कांग्रेस वापस करती दिखाई पड़ रही है, आने वाले समय में दिल्ली में भी पार्टी की वापसी हो सकती है। इस समय हो रहे पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस को कई राज्यों में अपनी वापसी होने की उम्मीद है। यदि पार्टी के लिए नतीजे सकारात्मक रहे तो दिल्ली की राजनीति पर भी इसका असर पड़ सकता है। दूसरा बड़ा कारण है कि पूरे देश में कांग्रेस का परंपरागत मुसलमान मतदाता उसके पास वापस आ रहा है। दिल्ली में तो वह नगर निगम चुनाव के समय भी कांग्रेस के साथ मजबूती से खड़ा दिखाई पड़ा। ऐसे में कांग्रेस को लगता है कि दिल्ली में भी लोकसभा चुनाव में मुसलमान मतदाता उसके साथ आएगा। पिछले लोकसभा चुनाव में भी मुसलमान मतदाता कांग्रेस के साथ खड़ा रहा था, जिसके कारण कांग्रेस ने हर सीट पर मजबूत लड़ाई लड़ी और हर सीट पर दूसरे नंबर पर आई। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के कारण दलित और अन्य पिछड़े समुदाय के मतदाता पार्टी से जुड़ रहे हैं। यह ट्रेंड कर्नाटक से शुरू होने के बाद दूसरे राज्यों में भी दिखाई पड़ रहा है। इस समय दिल्ली में कांग्रेस में वापसी करने वाले नेताओं-कार्यकर्ताओं में भी यह वर्ग सबसे ज्यादा है। खरगे भी इसका एक कारण हो सकते हैं। पार्टी को लगता है कि वह अपने पुराने परंपरागत वोट बैंक को साथ लाकर दिल्ली की राजनीति में मजबूत वापसी करने में सफल हो सकती है।

मप्र में सपा-आप के बाद जदयू ने भी कांग्रेस से तोड़ लिया नाता

गुलाम अहमद

भाजपा से मुकाबले के लिए बना विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव में बिखर गया है। कांग्रेस के सहयोगी दलों को नजरंदाज किए जाने के चलते सपा के बाद जदयू ने भी अपने उम्मीदवार खड़े किए हैं। गठबंधन का हिस्सा आम आदमी पार्टी भी अपने प्रत्याशियों को उतार चुकी है। विपक्ष के 26 दलों का जब गठबंधन हुआ तब कहा गया वे सारे देश में भाजपा के खिलाफ मिलकर लड़ेंगे, लेकिन गठबंधन के सबसे बड़े दल कांग्रेस ने साफ कहा है कि इंडिया का गठन 2024 लोकसभा चुनावों के लिए हुआ न कि विधानसभा चुनाव के लिए। कांग्रेस ने इसी रणनीति के तहत पांच राज्यों मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, मिजोरम और तेलंगाना में अपने किसी सहयोगी दल को तवज्जो नहीं दी। मिजोरम को छोड़कर राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में कांग्रेस की भाजपा से सीधी लड़ाई है। वहीं, तेलंगाना में उसका मुकाबला के. चंद्रशेखर राव की भारत राष्ट्र समिति से है। कांग्रेस पांच राज्यों में किसी भी में सहयोगियों को सीटें देकर खुद को कमजोर नहीं करना चाहती है। यही वजह है कि वह आम आदमी पार्टी, सपा, जदयू या वामदल सहित अन्य दलों के लिए सीट छोड़ने को तैयार नहीं हुई। कांग्रेस की रणनीति है कि पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में वह मजबूत बनकर उभरेगी तो वह लोकसभा चुनाव में सीटों के बंटवारे में सहयोगी दलों के दबाव में आने की बजाए उन्हें दबाव में लेकर ज्यादा सीटें हासिल कर सकेगी। 230 सदस्यीय मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए आम आदमी पार्टी अब तक 45, सपा 42 और जदयू पांच उम्मीदवारों का एलान कर चुके हैं। सपा करीब 50 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारेगी। वहीं, जदयू ने अभी पहली ही सूची जारी की है। वह कुछ और सीटों पर उम्मीदवार उतार सकती है। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने मध्य प्रदेश में गठबंधन नहीं होने पर कांग्रेस पर तीखा हमला बोला था। उन्होंने कहा था कि यदि उन्हें पता होता गठबंधन विधानसभा स्तर पर नहीं है तो वह कांग्रेस से कभी बात ही नहीं करते। उन्होंने यहां तक कहा कि यूपी में कांग्रेस के साथ वैसा ही सलूक किया जा सकता है जैसा मध्य प्रदेश में उनके साथ किया गया। पिछले चुनाव में सपा ने एक सीट पर जीत हासिल की थी और पांच पर दूसरे नंबर पर थी। इसी आधार पर छह सीटों की मांग की थी। भाजपा ने बुधवार को चुनाव आयोग से से कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा के खिलाफ कार्रवाई करने का आग्रह किया। केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी, अर्जुन राम मेघवाल, पार्टी नेता अनिल बलूनी और ओम पाठक सहित भाजपा के एक प्रतिनिधिमंडल ने निर्वाचन आयोग को शिकायत सौंपी। भाजपा ने शिकायत में कहा है कि प्रियंका ने 20 अक्तूबर को दौसा में जनसभा में कहा था कि उन्होंने टीवी पर देखा कि जब प्रधानमंत्री मोदी की ओर से एक मंदिर में दिए गए दान का एक लिफाफा खोला गया तो उसमें केवल 21 रुपये थे।

आजम खान ने अजय राय का प्लान चौपट कर दिया

विश्वनाथ सुमन

कांग्रेस नेता अजय राय ने यूपी में अखिलेश यादव को घेरने की जो प्लानिंग की थी, उसे आजम खान ने चौपट कर दिया। सीतापुर जेल में बंद आजम कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय से नहीं मिले। अगर यह मुलाकात हो जाती तो यूपी की राजनीति में कानाफूसी होती तो नुकसान अखिलेश यादव की समाजवादी पार्टी को होता।

समाजवादी पार्टी के नेता आजम खान पत्नी तंजीन फातिमा और बेटे अब्दुल्ला के साथ जेल में हैं। बेटे अब्दुल्ला आजम के फर्जी प्रमाण पत्र के मामले में आजम फैमिली को सजा सुनाई गई है। कभी यूपी के सबसे ताकतवर मंत्री रहे आजम खान को लेकर कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के बीच राजनीति शुरू हो गई है। यूपी कांग्रेस के अध्यक्ष अजय राय सीतापुर जेल में बंद आजम खान से मुलाकात करना चाहते थे, जो हो नहीं सका। सपा नेता आजम खान ने अजय राय से मिलने से इनकार कर दिया। आजम खान की तरफ से कहा गया कि वह किसी राजनेता से नहीं मिलना चाहते हैं। जेल प्रशासन ने भी नियमों का हवाला देते हुए आजम खान से मुलाकात पर रोक लगा दी। जेल मैन्युअल के मुताबिक, आजम खान सप्ताह में सिर्फ एक व्यक्ति से मुलाकात कर सकते हैं। इस सप्ताह वह अपने बेटे अदीब से मिल चुके हैं।

खैर आजम और अजय राय की मुलाकात टल गई, मगर यूपी की राजनीति में बवाल खड़ा हो गया। मुस्लिम समुदाय की राजनीति करने वाले आजम खान अचानक उसी राजनीति के शिकार बन गए। समाजवादी पार्टी के सबसे सशक्त, चर्चित और रसूखदार मुस्लिम नेता की हैसियत से उन्होंने जो साख बनाई, वह अखिलेश यादव और अजय राय की राजनीति के कारण दांव पर लग गई। अजय राय ने दलील थी कि आजम खान का परिवार बदले

की राजनीति से परेशान हैं, इसलिए वह मिलना चाहते हैं। मगर उनकी मुलाकात की मंशा मुस्लिम राजनीति के इर्द-गिर्द की घूमती नजर आ रही है। अजय राय ने इस मेल-मिलाप से दोहरा दांव खेला था। आजम से मुलाकात में मुस्लिम नेता वाला एंगल है, जिसके जरिये कांग्रेस अल्पसंख्यकों को करीब लाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने कद्दावर नेता को विक्टिम के नजरिये से पेश करने की कोशिश की। दूसरा, वह खुद को अखिलेश यादव से बड़ा शुभचिंतक भी बनने लगे। शायद आजम ने उनका यह इरादा भांप लिया और मिलने से इनकार कर दिया।

मध्यप्रदेश में सीटों को लेकर विवाद के बाद अखिलेश यादव और अजय राय के बीच तनातनी शुरू हुई। दोनों की कहासुनी चिरकुट, छुटभैय्या नेता और हैसियत तक पहुंच गई। इस विवाद में अजय राय ने मुलायम सिंह के सम्मान का भी जिक्र कर दिया। उन्होंने कहा कि जो अपने पिता मुलायम सिंह का सम्मान नहीं किया, वह हमारी इज्जत क्या करेगा? बातों से शुरू हुई लड़ाई यूपी में समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के लिए नाक की लड़ाई बन गई। कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने इसे राजनीतिक बदले को आजम खान से सहानुभूति जताकर भुनाने की कोशिश की। उन्होंने इसके जरिये वही चाल चली, जो शिवपाल यादव ने अखिलेश के विरोध के दौरान 2022 में चली थी। पिछली बार जब आजम सीतापुर के जेल में थे तब प्रगतिशील समाजवादी के मुखिया रहे शिवपाल यादव ने उनसे मुलाकात की थी। इस मुलाकात के जरिये शिवपाल ने अखिलेश को आजम की अनदेखी के लिए घेरा था। तब शिवपाल ने आरोप लगाया था कि समाजवादी पार्टी ने मुश्किल में फंसे आजम के लिए कुछ नहीं किया। अब अजय राय उसी एपिसोड को दोहराने की कोशिश की है। इस एक चाल से उन्होंने अखिलेश को चुनौती भी दे डाली। संदेश साफ है, मौका मिला तो यूपी में कांग्रेस समाजवादी पार्टी को निशाना बनाने से नहीं चूकेगी।फिलहाल अखिलेश यादव के लिए यह राहत है कि आजम खान ने यूपी कांग्रेस अध्यक्ष से मिलने से इनकार कर दिया। अगर यह मुलाकात होती तो सपा को नुकसान होना तय था। राजनीतिक हलकों में गुपचुप मुलाकातों पर अक्सर बड़ी अफवाह उड़ जाया करती है। मगर अभी कई सवाल बाकी है। क्या अजय राय अपनी खुद की रणनीति के तहत आजम से मिलने का प्लान बनाया था या कांग्रेस के केंद्रीय आलाकमान ने उन्हें मुलाकात की इजाजत दी थी? मुस्लिम वोट बैंक के लिए कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के बीच छिड़ी रार कहां तक जाएगी? अखिलेश इस हरकत का माकूल जवाब जरूर देंगे। जाहिर है कि अजय राय ने जिस तरह अखिलेश यादव को घेरने की कोशिश की है, वह इंडिया गठबंधन के लिए पॉजिटिव संदेश नहीं है। अभी इसमें दो राय नहीं है कि सपा उत्तरप्रदेश में कांग्रेस के मुकाबले मजबूत है। लोकसभा में एक और विधानसभा में एक सीट पाने वाली कांग्रेस को अभी भी जनाधार की तलाश है। 2017 में दोनों दलों के गठबंधन का कोई बड़ा असर नहीं रहा है। जहां तक बीजेपी से 2024 के लोकसभा चुनाव में मुकाबले की बात है तो विपक्षी दलों की एकता में कुछ उम्मीद की किरण ढूंढी जा सकती है। बसपा पहले से ही इंडिया गठबंधन से दूर है। हालात ऐसे ही रहे तो वोट बैंक की लड़ाई में चुनाव में दोनों दलों को निराशा ही मिलेगी।

कांग्रेस ने अखिलेश और केजरीवाल का मुंह बंद किया

अजय सेतिया

कैग रिपोर्ट के बाद कैग अधिकारियों के तबादलों के बहाने कांग्रेस ने मोदी सरकार के साथ अन्ना हजारे को भी कटघरे में खड़ा किया है और अरविन्द केजरीवाल को भी। कांग्रेस के प्रवक्ता पवन खेड़ा ने कांग्रेस की आधिकारिक प्रेस कांफ्रेंस में कहा है कि दस साल पहले यूपीए शासनकाल में 2-जी और कोयला खदान आवंटन पर आई कैग रिपोर्ट के बहाने दिल्ली के रामलीला मैदान में नाटक खड़ा किया गया था।

कांग्रेस ने कैग रिपोर्ट के बहाने आम आदमी पार्टी और अरविन्द केजरीवाल को इसलिए निशाने पर लिया है क्योंकि उन्होंने विधानसभा चुनावों में कांग्रेस को हराने के लिए बड़ी तादाद में उम्मीदवार खड़े कर दिए हैं। कांग्रेस को एहसास हो गया है केजरीवाल ज्यादा दिन इंडी गठबंधन में नहीं रहने वाले। नीतीश कुमार के बीच बचाव के बावजूद केजरीवाल ने मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान विधानसभा चुनावों में बड़े पैमाने पर उम्मीदवार खड़े करने शुरू कर दिए हैं।

इन तीनों राज्यों में कांग्रेस के लिए जीवन मरण का सवाल है। खासकर मध्य प्रदेश जहां भाजपा और कांग्रेस में मुकाबला हमेशा ही कड़ा रहता है, कांग्रेस के लिए भाजपा विरोधी एक एक वोट मायने रखता है, इसलिए कांग्रेस चाहती थी कि आम आदमी पार्टी और समाजवादी पार्टी उसके लिए मैदान खुला छोड़ दें।

पिछले विधानसभा चुनाव में भले ही कांग्रेस को 5 सीटें भाजपा से ज्यादा मिल गई थी, लेकिन उसे भाजपा से लगभग एक लाख वोट कम मिले थे। भाजपा को 1.56 करोड़ और कांग्रेस को 1.55 करोड़ वोट मिले थे, जबकि आम आदमी पार्टी के एक को छोड़ कर बाकी सभी 207 उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गई थी, लेकिन उसे कुल मिलाकर 2,53,106 वोट मिले थे, जो निश्चित ही भाजपा विरोधी वोट थे। समाजवादी पार्टी मध्यप्रदेश में कांग्रेस के लिए आम आदमी पार्टी से थोड़ा ज्यादा मायने रखती है। भले ही 1998 के बाद से उसका वोट बैंक लगातार घटा है, लेकिन कम से कम दस सीटों पर अभी भी उसका प्रभाव बना हुआ है। पिछले चुनावों में सपा को आम आदमी पार्टी से दुगुने वोट मिले थे और एक सीट भी जीती थी।

सपा 2003 में मध्यप्रदेश में सात सीटें जीती थी, 2008 में सिर्फ एक, जबकि 2013 में सपा का खाता नहीं खुला, लेकिन 2018 के पिछले चुनाव में सपा एक सीट जीत गई थी, और पांच सीटों पर वह दूसरे नंबर पर रही थी। सपा को 2003 में 5.26 प्रतिशत, 2008 में 2.46 प्रतिशत, 2013 में 1.70 प्रतिशत और 2018 में 1.30 प्रतिशत वोट हासिल हुए थे। लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि पिछले चुनावों में पांच सीटों पर उसके उम्मीदवार दूसरे नंबर पर रहे थे।

अखिलेश यादव वही छह सीटें चाहते थे। उनकी कमलनाथ और दिग्विजय सिंह से बातचीत भी हुई थी। इन दोनों से सपा के प्रादेशिक नेताओं की भी लंबी बातचीत हुई थी, लेकिन कांग्रेस ने छह तो क्या एक भी सीट पर सपा का दावा मंजूर नहीं किया। इस पर अखिलेश यादव ने यहाँ तक कह दिया है कि अगर उन्हें पहले पता होता कि कांग्रेस सिर्फ 2024 के लोकसभा चुनाव के लिए गठबंधन करना चाहती है, तो वह

गठबंधन में जाते ही नहीं।

अखिलेश यादव कांग्रेस के व्यवहार से बेहद खफा हैं, क्योंकि एक तो उत्तर प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष अजय राय ने मध्यप्रदेश को लेकर टिप्पणी की, जिस पर अखिलेश यादव ने उन्हें पूर्वी उत्तर प्रदेश की भाषा में चिरकुट कह दिया। अजय राय पहले भाजपा में रहे हैं, इसलिए अखिलेश यादव ने कहा कि कांग्रेस में भाजपाई भरे पड़े हैं। लेकिन कांग्रेस और सपा में खटास सिर्फ अजय राय के बयान के कारण नहीं आई है। मध्यप्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने उन्हें अखिलेश वखिलेश कह कर जिस तरह खारिज किया, उससे वह खुद को अपमानित महसूस कर रहे हैं। अखिलेश यादव भी कमल नाथ की तरह एक प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे हैं और समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं, जबकि कमल नाथ सिर्फ कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष हैं। अपने से बड़े प्रदेश के एक बड़े नेता के लिए कमलनाथ की टिप्पणी उनके घमंडी होने का आभास दिलाने वाली थी।

कमल नाथ की अपमानजनक टिप्पणी से भड़के अखिलेश यादव ने भी यूपी विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की परफोर्मेंस को आधार बना कर कह दिया है कि लोकसभा चुनावों में कांग्रेस का यूपी में एक सीट पर भी दावा नहीं बनता। यानी उन्होंने सोनिया गांधी की सीट पर भी कांग्रेस के दावे को नकार दिया है। जबकि 2019 के लोकसभा चुनाव में गठबंधन नहीं होने के बावजूद सपा और बसपा ने रायबरेली और अमेठी में अपने उम्मीदवार खड़े नहीं किए थे। कांग्रेस को आईना दिखाते हुए अखिलेश यादव ने यह भी कह दिया कि विधानसभा चुनाव में भी उसका दो ही सीटों पर दावा बनता है। जिस प्रेस कांफ्रेंस में कांग्रेस ने अरविन्द केजरीवाल को आईना दिखाने का काम किया, उसी प्रेस कांफ्रेंस में अखिलेश यादव के भड़कने पर कांग्रेस ने भी दो टूक कह दिया है कि इंडी एलायंस 2024 के लोकसभा चुनाव के लिए बना है, अगर कोई दल विधानसभा चुनाव लड़ना चाहता है, तो लड़े, मैदान खुला है।

नीतीश कुमार को ठिकाने लगाने के बाद कांग्रेस ने एक एक कर क्षेत्रीय दलों के अन्य नेताओं के साथ भी बदसलूकी शुरू कर दी है। इसलिए यह स्पष्ट दिखाई देने लगा है कि कांग्रेस अगर पांच राज्यों की विधानसभाओं के चुनावों में तीन राज्य भी जीत जाती है, तो उसके तेवर और तीखे हो जाएंगे। हालांकि उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी या बहुजन समाज पार्टी में से किसी एक का साथ चाहिए। अखिलेश को जिस तरह अपमानित किया गया है, उससे यह भी लगता है कि कांग्रेस चुपचाप बसपा से बात कर रही हो। क्योंकि उत्तर प्रदेश के कांग्रेस नेता अखिलेश के बजाए मायावती से गठबंधन के ज्यादा समर्थक रहे हैं। वैसे भी तीनों ही हिन्दी भाषी राज्यों में बसपा का वोट सपा से कई गुना ज्यादा है।

मध्य प्रदेश में ही बसपा का कम से कम तीन दर्जन सीटों पर प्रभाव है। पिछले चुनाव में उसे 19 लाख से ज्यादा वोट मिले थे, जो कुल मतों का 5 फीसदी था, बसपा दो सीटें भी जीती थी। उसी के साथ से कमलनाथ की सरकार बनी थी। बसपा ने सभी सीटों पर चुनाव लड़ने का फैसला किया है और अब तक 111 उम्मीदवारों की घोषणा भी कर दी है। लेकिन सपा और बसपा में अंतर है कि बसपा का वोट कांग्रेस को नही पड़ता, अगर बसपा का उम्मीदवार नहीं हो, तो बसपा का वोट भाजपा को जाता है। पिछले आठ दस साल में दलित समुदाय का काफी वोट कांग्रेस और बसपा से भाजपा की तरफ शिफ्ट हुआ है।

कांग्रेस टिकट की दौड़ में आशा और वेदांती के बीच कांटे का मुकाबला

संगीता, अंबिका, कमलाकांत और अनिल हुए पीछे

बैकुण्ठपुर वि.स. सीट में कांग्रेस से टिकिट को लेकर लगातार असंमजस की स्थिति बनी हुई है। विभिन्न प्रचार माध्यमों में वेदांती तिवारी का नाम अंतिम सूची में होने की खबर को भी विराम लग गया जब ए.आई.सी.सी. द्वारा जारी सूची में 07 वि.स. क्षेत्रो के टिकिट दावेदारी को फाईनल नहीं किया गया जिसमें बैकुण्ठपुर वि.स. का नाम भी शामिल है। अब कहा जा रहा है कि, दो दिनों के बाद बैकुण्ठपुर सहित शेष 07 वि.स. सीट के लिये कांग्रेस प्रत्याशियों की घोषणा की जावेगी । टिकिट दावेदारों को लेकर बैकुण्ठपुर वि.स.क्षेत्र में अफवाहों और चर्चाओं का दौर जारी है । आजकल हर चौक चौराहे होटल या पास ठेलों पर इसी बात को लेकर माथापच्ची हो रही है कि, कांग्रेस की टिकट कौन हासिल का पाएगा सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार कांग्रेस टिकिट के लिए आधा दर्जन दावेदारों के नाम विचार के लिए चल रहे थे उनमे वेदांती तिवारी आशा महेश साहु संगीता राजवाड़े कमला कांत साहु, अंबिका सिंहदेव अनिल जायसवाल आदि के नाम प्रमुखता से बताए जा रहे हैं। वेदांती और आशा दौड़ में आगे - कांग्रेस की टिकिट के लिये के लिए मचे घमासान में टिकिट वितरण कह अंतिम दौड़ में जिन दो दावेदारों के बीच कांटे की टक्कर बताई जा रही है उनमें पीसीसी सदस्य व जिला पंचायत उपाध्यक्ष वेदांती तिवारी और

बैकुण्ठपुर ज.प.0 उपाध्यक्ष आशा महेश साहु है। जो बात सामने आ रही है उसके अनुसार वेदांती तिवारी को भूपेश बघेल गुट का समर्थन है वहीं आशा महेश साहु को गृह मंत्री ताम्रध्वज साहु का वरदहस्त प्राप्त है। वेदांती तिवारी वर्ष 2013 में कांग्रेस की ओर से उम्मीदवार बनाए गए थे। जो काफी कम अन्तर लगभग 1200 वोट से भाजपा के भईयालाल राजवाडे से पराजित हुए थे। वर्ष 2018 के वि0स0 चुनाव में भी उनका नाम प्रस्तावित हुआ था लेकिन ऐन वक्त पर कुमार साहब की भतीजी अंबिका सिंहदेव को उम्मीदवार बना दिया गया था । पिछले चार पांच वर्षों में वेदांती तिवारी में काफी राजनैतिक संघर्ष किया था जिला कांग्रो के विरोध के बावजूद उन्होनें जिला पंचायत सदस्य का चुनाव लड़ा और बाद में जिला पंचायत के उपाध्यक्ष भी निर्वाचित हुए थे वहीं दूसरी और आशा महेश साहु का राजनैतिक कैरियर वर्ष 2019 में ही शुरू हुआ था जब वे जनपद सदस्य का चुनाव जीतकर ज.पं. बैकुण्ठपुर की उपाध्यक्ष बनी थी । इस ज.पं. में कांग्रेस का बहुमत होने के बावजूद ज.पं. अध्यक्ष भाजपा समर्थित सौभाग्यवती बनी थी जो अभी तक चर्चा का विषय बना हुआ है।

सर्वे को दी गई प्राथमिकता - कांग्रेस के वरिष्ठ नेता बार-बार यह बात दोहरा रहे हैं कि, सर्वे के आधार पर टिकिट की प्राथमिकता तय की जा रही है । इस बात को लेकर कांग्रेस के वरि0 नेता टी0एस0 सिंहदेव ने भी अपने समर्थक दावेदारों से यह बात सार्वजनिक रूप से कही थी बताया जाता है कि, सर्वे में वर्तमान में वर्तमान विधायक अंबिका सिंहदेव काफी पीछे चल रही थी जिसकी वजह से संभवत: उनका नाम वरीयता में नहीं आ सका। हलांकि उन्हें वि.स. अध्यक्ष डॉ. महंत और टी.एस. सिंहदेव का समर्थन प्राप्त है। वहीं दूसरी ओर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता वेदांती तिवारी के पक्ष में सर्वे की गईतो काफी कांगेस के लिए उत्साहजनक रही। इसी कारण उनका नाम भी दावेदारों मं लगातार आगे चलता रहा।

जिला विभाजन के बाद कांग्रेस का ग्राफ घटा- वर्ष 2022 में कोरिया जिले के विभाजन की घोषणा के साथ ही बैकुण्ठपुर वि.स. क्षेत्र में कांग्रेस का ग्राफ गिरने के बाद वरिष्ठ नागरिक और आमजन के अलावा कांग्रेस

के ही लोग लगातार कह रहे हैं। कोरिया जिला विभाजन से कोरिया मात्र एक वि.स. का जिला रह गया वहीं एम.सी.बी. दो वि.स. क्षेत्र के साथ ही जनसंख्या व क्षेत्रफल में काफी बड़ा जिला हो गया। यहां यह भी कहा जा रहा है कि, जोजिला कार्यालय मनेन्द्रगढ़ में थे उन्हे भी आज तक कांग्रेस सरकार द्वार बैकुण्ठपुर में स्थापित नहीं किया गया है जिसमें लो.नि.वि., जिला रोजगार अधिकारी, जिला उद्योग विभाग वाणिज्यिक कर कार्यालय आदि के नाम प्रमुखता से लिये जाते हैं। इन कारणों से संभवत कांग्रेस को कोरिया में बड़ा झटका मिला है इसका लाभ उठाने के लिए भाजपा अपने वरिष्ठ नेता पिछड़ा वर्ग के श्री राजवाड़े को उतारा है।

कांग्रेस का पिछड़ा वर्गपर फोकस - इस बार कोंस ने पिछड़ा वर्ग की राजनीति पर ज्यादा फेकस किया है इसी कारण संभवत: कांग्रेस की टिकिट के लिए पिछड़ा वर्गके दावेदारों संगीता राजवाड़े आशा महेश साहु कमला कांत साहु अनिल व अशोक जायसवाल का नाम पैनल में शामिल किया गया था । यह बताया जा रहा है कि, आशा महेश साहु का नाम भी प्रमुखता से लिया जा रहा है कि, वे पिछड़ा वर्गसाहु समाज से आती है जिनकी संख्या वि.स. बैकुण्ठपुर मे 35000 से ज्यादा बताई जा रही है। टिकिट के लिए कांग्रेस से दावेदारों की दौड़ रायपुर से दिल्ली तक लगी है और दावेदार गुटीय राजनीति के

सहारे अपना-अपना दावा मजबूत कर रहे हैं। इस क्रम में बताया जाता है कि, बीते दिवस आशा महेश साहु कं समर्थन में अनेक कांग्रेसी छ.ग. के उप मुख्यमंत्री टी.एस. सिंहदेव से भी मुलाकात किए है।

कांग्रेस के लोग प्रमुख रूप से टिकिट दावेदारी के लिये डा.महंत, भूपेश बघेल, ताम्रध्वज साहु, और प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज से अपना दावा पुख्ता करने की जुगत बना रहे हैं। कई कांग्रेस नेता दावेदारी मजबूत करने दिल्ली में राहुल गांधी और वेणुगोपाल से मुलाकात कर चुके हैं।

कटघोरा सामान्य सीट पर सामान्य वर्ग को टिकट नहीं

सामान्य वर्ग से प्रत्याशी बनाए जाने की उठती रही है मांग

कोरबा जिला का कटघोरा विधानसभा सीट सामान्य वर्ग के लिए है। मगर आपको यह जानकर हैरत होगी कि इस सीट पर कांग्रेस ने कभी भी सामान्य वर्ग को मौका नहीं दिया है। पहले कद्दावर आदिवासी नेता बोधराम कंवर और अब उनके पुत्र पुरुषोत्तम कंवर को यहां से कांग्रेस का टिकट मिला है। हालांकि इस बार सामान्य सीट पर सामान्य वर्ग से प्रत्याशी बनाए जाने की मांग पुरजोर तरीके से उठती रही है। राजनीति में वंशवाद की परंपरा को खत्म करने में कुछ खास सफलता नहीं मिलती दिख रही है। कोरबा जिले की राजनीति भी इससे अछूती नहीं है जिसका उदाहरण कटघोरा विधानसभा में सामने आया है। यहां कांग्रेस के पूर्व विधायक बोधराम कंवर ने अपनी सत्ता का उत्तराधिकारी पुत्र पुरुषोत्तम को बनाया है। पिछले चुनाव में एक बार मौका देने की बात हुई किंतु इस बार फिर से पुरुषोत्तम को ही टिकट दिया गया। इस बार प्रत्याशी घोषणा से पहले यह मांग पुरजोर तरीके से उठाई गई कि कटघोरा विधानसभा जो कि सामान्य वर्ग के लिए है, यहां आदिवासी या दूसरे वर्ग का प्रत्याशी न उतर कर अन्य पिछड़ा वर्ग अथवा सामान्य वर्ग से दावेदार को मौका दिया जाना चाहिए। कटघोरा विधानसभा की विडम्बना है कि सामान्य सीट पर ओबीसी या सामान्य वर्ग के दावेदार को कांग्रेस से टिकट नहीं मिली बल्कि आदिवासी वर्ग से ही उम्मीदवार उतारे जाते रहे हैं। यहां सामान्य और पिछड़ा वर्ग के बहुसंख्यक करीब 70 फीसदी मतदाता कई वर्षों से कांग्रेस घोषित आदिवासी वर्ग के प्रत्याशी को चुनते आ रहे हैं। छत्तीसगढ़ के 90 विधानसभा सीटों में कटघोरा ही एकमात्र ऐसी सीट है जहां सामान्य या ओबीसी वर्ग से प्रत्याशी कांग्रेस ने कभी नहीं उतरा। जबकि दूसरे विधानसभा का जिस वर्ग के लिए आरक्षण हुआ है, वहां उसी वर्ग के प्रत्याशी घोषित किए गए हैं। सामान्य सीट से ओबीसी या सामान्य को ही टिकट दी गई है किन्तु कटघोरा विधानसभा से पुरुषोत्तम कंवर को फिर से प्रत्याशी बनाए जाने को लेकर पहले व बाद में भी विरोध के स्वर गूंजे हैं। इसके विपरीत भाजपा ने ओबीसी के लखनलाल देवांगन और अब प्रेमचंद पटेल को अवसर दिया है।

कांग्रेस और बीजेपी के चुनाव प्रचार ने पकड़ा जोर-वेदराम के निर्णय पर टिकी सबकी नजरे

छग विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण की अधिसूचना जारी होने के साथ ही नामांकन भरने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। आरंग विधानसभा क्षेत्र क्र 52 के लिए कांग्रेस के कद्दावर मंत्री एवं वर्तमान विधायक डॉ शिवकुमार डहरिया मैदान में है वही बीजेपी ने सतनामी समाज के गुरु बालदास साहेब के पुत्र गुरु खुशवंत को मैदान में उतारा दिया है।परंतु लोगो की नजरे अभी वेदराम मनहरे पर टिकी हुई है। राजनैतिक बाजार में उनके चुनाव लड़ने और नही लड़ने को लेकर कई कयास लगाये जा रहे है।

वेदराम लगातार अपने समर्थकों के साथ बैठके कर रहे है पर अभी तक उन्होंने अपना पत्ता नही खोला है। वेदराम के चुनावी मैदान में आने से किसे फायदा

होगा और किसे नुकसान इस पर भी चर्चाएं जोरो पर है। राजनितिक सूत्रों की माने तो वेदराम बीजेपी के अलावा कांग्रेस के वोटो पर सेंध मार सकते है इसीलिए दोनों पार्टियों की नजर उन पर लगी हुई है।

आपको बता दे की वेदराम मनहरे धार्मिक सामाजिक और राजनितिक आयोजनों ने लगातार सक्रीय रहे है और यही कारण है कि उनका आम मतदाताओं में अच्छी पकड़ बनी हुई है। और इसी पकड़ को भुनाने के लिए उनके समर्थक निर्दलीय चुनाव लड़ने के लिए लगातार दबाव बना रहे है। वेदराम के चुनावी रण में आने से मुकाबला त्रिकोणीय हो जायेगा अन्यथा बीजेपी और कांग्रेस के बीच सीधी टक्कर होगी । कई क्षेत्रीय दलों के प्रत्याशी भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराने इस चुनाव में उतरेंगे।कांग्रेस और भाजपा अपना प्रचार अभियान शुरू कर आम मतदाताओं से लगातार जन संपर्क कर रहे है ऐसे में वेदराम मनहरे निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में मतदाताओं को कैसे साधेंगे यह देखने वाली बात होगी....।

मनेन्द्रगढ़ विधायक के 'हाथ' में 'आरी' देख कांग्रेस में मचा हड़कंप बगावती तेवरो से परेशान है राजनीतिक दल

कोरिया और एमसीबी जिले में भाजपा और कांग्रेस में अधिकृत उम्मीदवारों की घोषणा के बाद दोनों प्रमुख राजनीतिक दल कांग्रेस और भाजपा के सुर तेज होते जा रहे हैं । इससे दोनों दलों के नेता जहां परेशान है वहीं उनके कार्यकर्ताओं में भी असंमजस की स्थिति बढ़ती जा रही है । सबसे ज्यादा बगावत मनेन्द्रगढ़ वि.स. में देखी जा रही है । नामाकंन का दौर शुरू होने से बाद बागियों द्वारा भी नामाकंन पत्र लिया जाना वर्तमान अधिकृत प्रत्याशियों के लिये चिन्ता का सबब बनता जा रहा है।

विनय जायसवाल गोगंपा के साथ - मनेन्द्रगढ़ के वर्तमान विधायक डॉ. विनय जायसवाल की टिकिट कटने के बाद कांग्रेस के प्रति उनके तेवर तीखे हो गये हैं । उन्होनें सार्वजनिक रूप से घोषणा की है कि, वे गोंगपा से चुनाव लड़ेगे । उनके तेवर देख कांग्रेस संगठन में हडकंप मच गया है । अधिकृत प्रत्याशी रमेश सिंह औ विधायक डा. विनय जायसवाल के बीच जुबानी जंग तेज हो गई है । कई कांग्रेस नेताओं का कहना है कि, इस टकरार से कांग्रेस का ही नुकसान होना तय है । वहीं कांग्रेस प्रत्याशी पिछले पांच वर्षों के कार्यकाल में किए गए कार्य को कांग्रेस की उपलब्धि मानते हैं डॉ. जायसवाल की नहीं । डॉ. विनय समर्थकों को दावा है कि, मनेन्द्रगढ़ को जिला बनाने में मुख्यभूमिका डॉ. विनय ने ही निभाई है ।

ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष और पार्षद ने दिया इस्तीफा - कांग्रेस में इस्तीफा देने का भी दौर तेज हो गया है । वर्तमान विधायक डॉ. जायसवाल के समर्थन में ब्लाक कांग्रेस एवं खडगवां के अध्यक्ष मनोज साहु और चिरमिरी नगर निगम के पार्षद संदीप सोनवानी ने कांग्रेस की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है । मनोज साहु का कहना है कि, कांग्रेस हाईकमान ने गलत निर्णय है जिसका परिणाम वि.स. चुनाव में कांग्रेस को भुगतान पड़ेगा ।

भईया लाल ने खरीदी नामाकंन फार्म - बैकुण्ठपुर वि.स. के भाजपा के अधिकृत उम्मीदवार गत दिवस कलेक्टर कार्यालय

पहुंच कर जिले का पहला नामाकंन फार्म लिया है । उनके साथ कृष्ण बिहारी जायसवाल और रविशंकर रजवाड़े उपस्थित थे । मिली जानकारी के अनुसार श्री राजवाड़े 29 अक्टुबर को अपना नामाकंन दाखिल करेंगें साथ ही उनके द्वारा भारी भीड़ इकट्ठा कर शक्ति प्रदर्शन की भी योजना बनाई जा रही है ।

शैलेष शिवहरे लड़ेगे निर्दलीय चुनाव - बैकुण्ठपुर वि.स. क्षेत्र से भाजपा टिकट के प्रबल दावेदार टिकिट न मिलने से निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी है इसके लिये वे लगातार अपने कार्यकर्ताओं और समर्थकों से राय मशविरा कर रहे हैं । उनकी गतिविधियों से भाजपा संगठन में हडकंप मच गया है । भाजपा के चुनाव प्रभारी नियुक्त भाजपा प्रदेश कमेटी द्वारा बैकुण्ठपुर वि.स. क्षेत्र और मनेन्द्रगढ़ वि.स.क्षेत्र के पार्टी के अधिकृत चुनाव संचालकों की नियुक्ति कर दी गई है । जिसके अनुसार बैकुण्ठपुर क्षे में लक्ष्मण राजवाड़े और मनेन्द्रगढ़ क्षेत्र के लिये द्वारिका जायसवाल को चुनाव संचालक नियुक्त किया गया है ।दोनों ही क्षेत्रों में अधिकृत प्रत्याशियों द्वारा चुनाव प्रचार प्रारंभ कर दिया गया है ।

मनराज ने भी खरीदा नामाकंन फार्म- मनेन्द्रगढ वि.स.क्षेत्र में भाजपा के अधिकृत उम्मीदवार श्यामबिहारी जायसवाल के लिए चिरमिरी के मनराज मौर्य ने चुनौती पेश कर दी है । उन्होनें भाजपा हाईकमान के निर्णय को गलत और पक्षपात पूर्ण बताते हुए कहा है कि, टिकिट वितरण में मनेन्द्रगढ़ वि.स. क्षेत्र के सबसे बड़े चिरमिरी की उपेक्षा की गई है । जिससे ज्यादातर भाजपा वर्ग में असंतोष व्याप्त हो गया है । मनराजमौर्य प्रदेश भाजपा पि. गर्व प्रकोष्ठ के कार्यसमिति सदस्य है । उन्होने भी निर्दलीय चुनाव लड़ने की तैयारी कर दी है।

केन्द्रीय मंत्री ने मैनेज किए मैनेज - भरतपुर सोनहत क्षेत्र में स्थिति भाजपा और कांग्रेस के संतोषजनक है भाजपा में बाहर उम्मीदवार को लेकर जो असंतोष का तूफान खड़ा हुआ था वह थमता नजर आ रहा है दो अन्य प्रबल दोवेदारों रविशंकर सिंह एवं दृग्पाल सिंह को रेणुका सिंह ने अपने पक्ष में कर लिया है। जिससे उनकी स्थिति में सुधाार आ गया है। भाजपा के पदाधिकारी पूरी सक्रियता से चुनाव में लग गए प्रतीत हो रहे हैं।

कांग्रेस में छाई है मायूसी - बैकुण्ठपुर वि.स. में कांग्रेस द्वारा अभी तक अपने अधिकृत उम्मीदवार की घोषणा नहीं की गई है । जिससे कांग्रेसियों में मायूसी बनी हुई है टिकिट दावेदारों के समर्थकों द्वारा अपने-अपने दावेदारों को लेकर मजबूत स्थिति बताई जा रही है जिमें सबसे ज्यादा सबसे ज्यादा ज.पं. उपाध्यक्ष आशा साहु का नाम बना हुआ है ।

कांग्रेस प्रत्याशी गुलाब कमरों एवं भाजपा के प्रत्याशी रेणुका के बीच आरोप-प्रत्यारोप का दौरा चला

विधानसभा नंबर वन भरतपुर जिला एम,सी,बी में रेणुका सिंह एवं गुलाब कमरो के बीच क्षेत्र के विकास को लेकर आरोप प्रत्यारोप लगाते हुए ठनी । जहां एक और गुलाब कमरो ने बीजेपी पर झूठे आरोप ,लगाया है दूसरी और पूर्व केंद्रीय मंत्री और भरतपुर सोनहत से बीजेपी की प्रत्याशी रेणुका . रेणुका सिंह ने कहा भरतपुर सोनहत ने विकास महज कागजों तक और भूमि पूजन सीमित रहे।

चुनावी भाषण में बीजेपी और कांग्रेस कार्यकर्ता लगातार एक दूसरे को घेरते नजर आ रहे हैं. इस बीच भरतपुर सोनहत विधानसभा क्षेत्र के बीजेपी और कांग्रेस प्रत्याशी एक दूसरे पर विकास कार्यों को लेकर आरोप लगा रहे हैं. जहां एक ओर भरतपुर सोनहत के विधायक गुलाब कमरो ने बीजेपी पर 15 साल तक जनता को ठगने का आरोप लगाया है प्रत्याशी गुलाब कमरो ने बीजेपी पर हमला बोलते हुए कहा कि, बीजेपी सिर्फ झूठ बोलती है. कांग्रेस काम करती है तो बीजेपी बयान,बाजी करती है. कि 15 लाख खाते में आएगा. 2 करोड़ को नौकरी मिलेगा.2018 में कांग्रेस ने 36 घोषणाएं की थी. 51 योजना संचालित है. इसलिए हम लोग विकास को लेकर जनता के बीच जा रहे हैं. आने वाले दिन में हम लगातार विकास करेंगे. नया जिला है, नए जिले में तेजी से विकास होगा. यहां हम मेडिकल कॉलेज बना दिए. रमन सिंह ने यही जिला जब कोरिया था, जिसको गोद में लिए थे. 15 साल ठगने का काम किया है.

रेणुका सिंह के बयान पर सियासी भूचाल, कांग्रेस ने बताया दुर्भाग्यजनक भरतपुर सोनहत में कांग्रेस बीजेपी में जुबानी जंग हुई तेज, विवादित बयान मामले में रेणुका सिंह को नोटिस पूर्व विधायक चम्पादेवी पावले ने बताया बाहरी, नहीं है भरतपुर सोनहत,विधानसभा उनका मायका है,बीजेपी ने किया पलटवार भाजपा के प्रत्याशी रेणुका सिंह ने गुलाब कमरो के बयान पर पलटवार किया. उन्होंने कहा कि, वह अपने क्षेत्र में कितना ध्यान दिए हैं जनता का कितना ख्याल रखा है क्षेत्र की जनता के लिए उन्होंने कितना काम किया है यहां केवल कागजों पर विकास हुआ है. सांसद और भारत सरकार में मंत्री होने के नाते मुझे दिल्ली सहित अन्य राज्यों में समय देना पड़ता है. मैंने पूरे देश का दौरा किया है. जनजातियों के बीच मैं गई हूं. अपने मंत्रालय के माध्यम से देश के 75 जनजाति समुदाय, जैसे बैगा जनजाति, सरगुजा क्षेत्र में पहाड़ी कोरवा हैं. पीवीसी मिशन योजना भी हमारे कार्यकाल में बनाया गया है. टी,एस,सिंह देव के क्षेत्र सरगुजा में 20-20 लाख रुपए की राशि विकास कार्यों के लिए दिए हैं. आप पंचायत में इस योजना के बारे में पूछ सकते हैं. भरतपुर सोनहत के प्रत्याशी,रेणुका सिंह ने कहा कि भरतपुर सोनहत विधानसभा भाजपा के पदाधिकारी कार्यकर्ताओं की मेहनत से भारी मतों से जीत कर हम आएंगे।

शिवरतन को व्यक्तित्व का सहारा तो कांग्रेस प्रत्याशी इंद्र साव पार्टी के सहारे

विधानसभा चुनाव को लेकर अब धीरे-धीरे चुनावी सरगर्मी तेज होते जा रही है। भाटापारा विधानसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी ने लगातार सातवीं बार शिवरतन शर्मा को अपना प्रत्याशी बनाया है 1993 से शिवरतन शर्मा भाटापारा विधानसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ते आ रहे हैं वहीं इस बार कांग्रेस ने बिल्कुल नए चेहरे इंद्र साव के नाम पर दाव खेला है।

दोनों प्रत्याशी और दोनों दलों के लोग अब चुनावी जनसंपर्क में तेजी के साथ भिड़ गए हैं इस बार चुनाव में भाजपा के शिवरतन शर्मा को जहां अपने व्यक्तित्व का सहारा है तो कांग्रेस प्रत्याशी इंद्र साव को पार्टी का सहारा है।

मैदान में दोनों डटे हुए हैं कांग्रेस के अंदर थोड़ा बहुत असंतोष का माहौल जरूर दिखाई दे रहा है पर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष हितेंद्र ठाकुर का कहना है कि सब मामले को बैठकर सुलझा लिया जाएगा और भाटापारा विधानसभा क्षेत्र में इस बार कांग्रेस की जीत सुनिश्चित है। फिलहाल बिना मुद्दे के चुनाव प्रचार चल रहा है सुबह से लेकर रात तक के चुनाव प्रचार में दोनों प्रत्याशी लगे हुए हैं अभी पोस्टर बैनर वॉर शुरू नहीं हो पाया है शिवरतन शर्मा जहां सुबह के समय भाटापारा शहर में जनसंपर्क करते हैं वहीं दोपहर बाद में ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर जनसंपर्क कर रहे हैं कुछ इसी तरह का कार्य कांग्रेस प्रत्याशी इंद्रसाव के द्वारा भी किया जा रहा है वह भी वह भी अपना प्रोग्राम बनाकर जनसंपर्क करने के कार्य में जुटे हुए हैं। परंतु इतना अवश्य सत्य है कि शिवरतन शर्मा भारतीय जनता पार्टी में एक का दवा नेता के रूप में जाने जाते हैं इसलिए उन्हें इस चुनाव में उन्हें अपने व्यक्तित्व का ही सहारा है जबकि इंद्र साव भी चार बार के पार्षद रह चुके हैं इसके साथ-साथ उन्हें पार्टी का सहारा है। दोनों कब नामांकन दाखिल करेंगे अभी इसकी कोई जानकारी नहीं मिल पाई है परंतु प्रचार शुरू हो चुका है और लोग कयास लगाना भी शुरू कर चुके हैं लेकिन इतनी जल्दी कयास नहीं लगाया जा सकता है दशहरा पर्व गुजरने के बाद चुनाव प्रचार अभियान में और तेजी दिखाई देगी। कांग्रेस पार्टी अपनों को मनाने में भी लगी हुई है किंतु भारतीय जनता पार्टी में ऐसी कोई स्थिति दिखाई नहीं देती है। 2018 के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की ओर से शिवरतन शर्मा ने तत्कालीन कांग्रेस के प्रत्याशी सुनील माहेश्वरी को लगभग 11909 वोटो से पराजित किया था पर यहां बता दे की 2018 में भाटापारा विधानसभा में जबरदस्त त्रिकोणी संघर्ष था उसे दौरान भाटापारा विधानसभा से कांग्रेस के पूर्व विधायक चैतराम साहू जोगी कांग्रेस में जा चुके थे और जोगी कांग्रेस से ही चुनाव लड़े थे तब चैतराम साहू लगभग 45000 से भी अधिक मत प्राप्त करने में सफल हो गए थे। खैर जो भी हो आने वाले समय में चुनाव प्रचार अभियान में और तेजी आएगी कई समीकरण बदलेंगे कई समीकरण नए बनेंगे और ऊंट कैसे करवट बैठेगा अभी कोई कह नहीं सकता।

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

संजय सिंह की न्यायिक हिरासत 10 नवंबर तक बढ़ी

नई दिल्ली। दिल्ली आबकारी नीति मामले में गिरफ्तार आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद संजय सिंह को दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट में लाया गया। दिल्ली की राऊज एवेन्यू कोर्ट ने आप नेता संजय सिंह को 10 नवंबर तक आगे की न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। बता दें कि उन्हें ईडी ने दिल्ली एक्साइज पॉलिसी मामले में चार अक्टूबर को गिरफ्तार किया था। कोर्ट में संजय सिंह की पेशी से पहले आप कार्यकर्ताओं ने संजय की रिहाई की मांग को लेकर पार्टी कार्यालय के बाहर विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारी भाजपा ऑफिस तक मार्च निकालने वाले थे, लेकिन पुलिस ने उन्हें रोक दिया और हिरासत में ले लिया। बता दें कि इससे पहले इस मामले में 13 अक्टूबर को सुनवाई हुई थी। तब कोर्ट ने संजय सिंह को 27 अक्टूबर तक न्यायिक हिरासत में भेजा था। उधर, इससे पहले दिल्ली हाईकोर्ट ने 20 अक्टूबर को संजय सिंह की जमानत याचिका खारिज कर दी थी।

मुख्तार अंसारी को गैंगस्टर मामले में 10 साल की सजा

गाजीपुर। गैंगस्टर मामले में आरोपी मुख्तार अंसारी को अपर सत्र न्यायाधीश कोर्ट नंबर तीन एमपी/एमएलए कोर्ट अरविंद कुमार मिश्र की अदालत ने सजा सुना दी है। मुख्तार को 10 साल की सजा, 5 लाख का जुर्माना लगा है। दूसरे दोषी सोनू यादव को 5 साल की सजा 2 लाख का जुर्माना। बता दें कि गुरुवार को गैंगस्टर मामले में आरोपी मुख्तार अंसारी और उसके शार्गिद सोनू यादव को दोषी करार दिया गया था। इस दौरान वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए मुख्तार बांदा जेल से न्यायालय में पेश हुआ जबकि सोनू यादव न्यायालय में मौजूद था। बता दें 2009 में करंडा थाना क्षेत्र के सबुआ निवासी कपिलदेव सिंह की हत्या और मुहम्मदाबाद के अमीर हसन की हत्या के प्रयास के मामले को आधार बनाकर मुख्तार अंसारी और सोनू यादव के विरुद्ध गैंगस्टर एक्ट के तहत करंडा थाना में मुकदमा दर्ज हुआ था। लंबे समय से इस मामले में सुनवाई चल रही थी।

ईडी ने धन शोधन मामले में ज्योतिप्रिय को किया गिरफ्तार

कोलकाता। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने पश्चिम बंगाल में कई करोड़ रुपये के कथित राशन वितरण घोटाले से संबंधित धन शोधन मामले में राज्य के मंत्री ज्योतिप्रिय मलिक को गिरफ्तार कर लिया है। आधिकारिक सूत्रों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मंत्री को 17-18 घंटे से अधिक की पूछताछ के बाद शुक्रवार को तड़के धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत गिरफ्तार किया गया। ईडी अधिकारियों ने कहा कि मलिक को तड़के साढ़े तीन बजे कोलकाता के बाहरी इलाके में स्थित सॉल्ट लेक में उनके आवास से यहां केंद्रीय एजेंसी के कार्यालय लाया गया। मलिक को एक स्थानीय अदालत में पेश किया जाएगा जहां ईडी उनकी हिरासत का अनुरोध करेगा। कथित राशन वितरण घोटाला से संबंधित मामले में ईडी द्वारा गिरफ्तार किए जाने के बाद तृणमूल कांग्रेस के मंत्री ने कहा, ''मैं बहुत बड़ी साजिश का शिकार हुआ हूं।''

मंत्री ज्योतिप्रिय की गिरफ्तारी पर भाजपा का ममता पर वार

कोलकाता। भाजपा की पश्चिम बंगाल इकाई के अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने कथित करोड़ों रुपये के राशन वितरण घोटाले के सिलसिले में तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के मंत्री ज्योतिप्रिय मल्लिक की गिरफ्तारी पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर कटाक्ष करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री चोरों के प्रति सहानुभूति रखती हैं। उन्होंने कहा कि ममता बनर्जी ने कहा कि वे ईडी और सीबीआई के खिलाफ मामला दर्ज करेंगे...तो उन्हें करने दीजिए। वे इतने डरे हुए क्यों हैं? अगर आपने कुछ नहीं चुराया है तो एजेंसियों को अपना काम करने दीजिए। उन्होंने कहा कि उनकी गिरफ्तारी निश्चित थी...ममता बनर्जी को चोरों से सहानुभूति है। भाजपा नेता सुवेंदु अधिकारी ने भी ममता बनर्जी की आलोचना करते हुए कहा कि उन्होंने 2021 में मल्लिक को खाद्य और आपूर्ति विभाग के प्रभारी मंत्री के रूप में नियुक्त नहीं किया क्योंकि वह उन्हें केंद्रीय जांच एजेंसियों की रडार से बचाना चाहती थीं।

महुआ मोइत्रा ने लोकसभा पैनल से मांगा और समय

कोलकाता। तृणमूल की लोकसभा सांसद महुआ मोइत्रा ने नकदी के बदले सवाल के आरोपों के संबंध में लोकसभा आचार समिति के समन का जवाब दिया है और समिति द्वारा तय की गई तारीख 31 अक्टूबर को पैनल के सामने उपस्थित होने में असमर्थता व्यक्त की है। महुआ मोइत्रा ने अपने उत्तर में लिखा कि वैकल्पिक रूप से, वह 5 नवंबर के बाद समिति की पसंद की किसी भी तारीख और समय पर समिति के समक्ष व्यक्तिगत रूप से उपस्थित हो सकती हैं। दुर्गा पूजा उत्सव का हवाला देते हुए, लोकसभा सांसद ने लिखा-मैं पश्चिम बंगाल राज्य का प्रतिनिधित्व करता हूं जहां दुर्गा पूजा सबसे बड़ा त्योहार है। मैं 30 अक्टूबर से 4 नवंबर 2023 तक अपने निर्वाचन क्षेत्र में कई पूर्व-निर्धारित विजयादशमी सम्मेलनों/बैठकों (सरकारी और राजनीतिक दोनों) में भाग लेने के लिए पहले से ही प्रतिबद्ध हूं और 31 अक्टूबर 2023 को दिल्ली में नहीं रह सकता।

प्रधानमंत्री ने इंडिया मोबाइल कांग्रेस के सातवें एडिशन का किया उद्घाटन

6जी तकनीक में दुनिया का नेतृत्व करेगा भारतः मोदी

नईदिल्ली। राजधानी के भारत मंडपम कन्वेंशन सेंटर में इंडियन मोबाइल कांग्रेस के सातवें संस्करण का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया। यह एडिशन अगले दो दिनों तक चलेगा। इससे पहले भी इसी वेन्यू पर जी 20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी भारत ने की थी। दिल्ली में इंडिया मोबाइल कांग्रेस में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भाषण में कहा, हर दिन टेक्नोलॉजी में बदलाव के साथ, हम कहते हैं कि भविष्य यहीं और अभी है। इंडिया मोबाइल कांग्रेस में पीएम नरेंद्र मोदी ने देशभर के चुनिंदा संस्थानों में 100 5जी लैब का उद्घाटन किया।

पीएम ने बताया कि हाल ही में गूगल ने भारत में अपने पिक्सल फोन के निर्माण की घोषणा की है। सैमसंग के फोल्ड 5 मोबाइल फोन और एप्पल के आईफोन 15 का निर्माण भारत में किया जा रहा है। हमें गर्व है कि दुनिया अब मेड इन इंडिया मोबाइल फोन का उपयोग कर रही है।

वहीं एडिशन के शुरुआत में आईटी केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा, डिजिटल इंडिया के लिए टेलीकॉम क्षेत्र एक तरह का गेटवे है। उन्होंने यह भी बताया कि भारत की ओर से टेलीकॉम उपकरण 70 देशों को निर्यात किया जाता है। इसके साथ ही केंद्रीय मंत्री ने बताया कि विश्व दूरसंचार मानकीकरण सभा का अगला एडिशन भी दिल्ली में होगा।

प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि भारत में सबसे तेजी से 5जी मोबाइल सेवाएं शुरू की गईं, एक साल के भीतर चार लाख 5जी बेस स्टेशन स्थापित किए गए। उन्होंने कहा कि भारत मोबाइल ब्रॉडबैंड स्पीड में 118वें स्थान से अब 43वें स्थान पर पहुंच गया है। भारत 6जी में अग्रणी भूमिका निभाता नजर आएगा। पूंजी, संसाधनों और प्रौद्योगिकी तक पहुंच सरकार की प्राथमिकता है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत में विकास का लाभ हर वर्ग, हर क्षेत्र तक पहुंचे, भारत में संसाधनों का सभी को लाभ मिले, सभी को सम्मानजनक जीवन मिले और सभी तक टेक्नोलॉजी का फायदा पहुंचे, इस दिशा में हम तेजी से काम कर रहे हैं। मेरे लिए यही सबसे बड़ा सामाजिक न्याय है। उन्होंने कहा कि भारत नेट प्रोजेक्ट ने अब तक करीब 2 लाख ग्राम पंचायतों को ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी से जोड़ा है। हमारी अटल टिकरिंग लैब के पीछे भी यही विचार है। 10 हजार लैब्स के जरिए हम करीब 75 लाख बच्चों को कटिंग एज टेक्नालॉजी से जोड़ पाए हैं।

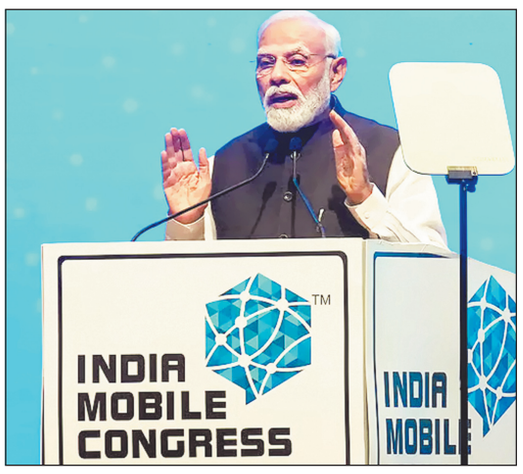

मोदी ने कहा कि बीते कुछ वर्षों में भारत की सबसे महत्वपूर्ण सक्सेस स्टोरिस में हमारा स्टार्टअप इकोसिस्टम भी एक महत्वपूर्ण स्थान ले चुका है। बहुत कम समय में हमने यूनीकार्न का शतक लगाया है और हम दुनिया के टॉप 3 स्टार्टअप इकोसिस्टम में से एक बने हैं।

आगे आईएमसी को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि 2014 कोई तारीख नहीं, यह ''बदलाव'' है। प्रधानमंत्री मोदी ने पिछले नौ वर्षों में आए उन बदलावों पर यह बात कही, जिन्होंने देश को आयातक से निर्यातक बना दिया। उन्होंने कहा कि दुनिया 'मेड इन इंडिया' फोन का इस्तेमाल कर रही है।

6जी के क्षेत्र में भी लीडर बनेंगे हम

पीएम मोदी ने कहा कि भारत का सेमीकंडक्टर मिशन सिर्फ अपनी घरेलू जरूरत ही नहीं, दुनिया की जरूरत पूरी करने के विजन पर आगे बढ़ रहा है। हमारे यहां 2जी के समय क्या हुआ था, शायद नई पीढ़ी को नहीं पता होगा। हमारे कालखंड में 4जी का विस्तार हुआ लेकिन एक दाग भी नहीं लगा है। मुझे विश्वास है कि 6जी में भारत विश्व का नेतृत्व करेगा। उन्होंने कहा कि हम ना सिर्फ भारत में तेजी से 5जी का विस्तार कर रहे हैं, बल्कि 6जी के क्षेत्र में भी लीडर बनने की दिशा में बढ़ रहे हैं।

हमारी युवा पीढ़ी कर रही है देश के भविष्य का नेतृत्व

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आगे कहा कि पिछले वर्ष हम यहां 5जी रोलआउट के लिए इकट्ठा हुए थे, पूरी दुनिया भारत को हैरत भरी नजरों से देख रही थी। हमने दुनिया का सबसे तेज 5जी रोलआउट किया और हर भारतीय तक 5जी पहुंचाने का काम शुरू किया। हम रोलआउट स्टेज से रीचआउट स्टेज तक पहुंचे। उन्होंने कहा कि आने वाला समय बहुत ही अलग होने जा रहा है। खुशी की बात है कि हमारी युवा पीढ़ी देश के भविष्य का नेतृत्व कर रही है। हमारे टेक रिवॉल्यूशन का नेतृत्व कर रही है।

2014 एक तारीख नहीं है, बल्कि 'बदलाव' है

पीएम मोदी ने 'इंडिया मोबाइल कांग्रेस' में अपने संबोधन में आंकड़ों का हवाला दिया और कहा कि कैसे भारत आयातक से मोबाइल फोन का निर्यातक बन चुका है और एप्पल से लेकर गूगल तक बड़ी प्रौद्योगिकी कंपनियां देश में विनिर्माता बनने के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा कि साल 2014 में हमारे पास। मैं 2014 क्यों कह रहा हूं। वह एक तारीख नहीं है, बल्कि 'बदलाव' है। 2014 के पहले भारत के पास कुछ सौ स्टार्ट अप थे लेकिन अब यह संख्या एक लाख के आसपास पहुंच गई है। मोदी ने उन दिनों की याद दिलाते हुए कहा कि तब 'आउटडेटेट फोन' की स्क्रीन घड़ी-घड़ी हैंग हो जाती थी और चाहे आप स्क्रीन को कितना भी स्वाईप कर लें या चाहे कितने भी बटन दबा लें, कुछ असर होता ही नहीं नजर आता था।

पीएम मोदी ने कहा कि और ऐसी ही स्थिति उस समय सरकार की भी थी। उस समय भारत की अर्थव्यवस्था, या कहें कि तब की सरकार ही, हैंग मोड में थी। हालत इतनी खराब थी कि रीस्टार्ट करने से कोई फायदा नहीं था। बैटरी चार्ज करने में भी फायदा नहीं था और बैटरी बदलने में भी फायदा नहीं था। उन्होंने कहा कि 2014 में लोगों ने ऐसे आउटडेटेड फोन को छोड़ दिया और अब हमें सेवा करने का अवसर दिया। इस बदलाव से क्या हुआ, वह भी साफ दिखता है।

इस अवसर पर टेलीकॉम क्षेत्र के बड़े उद्योगपतियों ने भी अपनी बात रखी, जिसमें आकाश अंबानी, सुनील भारती मित्तल और कुमार मंगलम शामिल थे।

मिजोरम में बोले जयराम रमेश

एमएनएफ और भाजपा एक ही सिक्के के दो पहलू

आईजोल। राहुल गांधी के महत्वपूर्ण प्रयास के बाद, कांग्रेस पार्टी ईसाई बहुल राज्य मिजोरम में जीत हासिल करने के लिए अपनी स्टार शक्ति का उपयोग करने की तैयारी कर रही है, जहां 7 नवंबर को विधानसभा चुनाव होने हैं। इसी कड़ी में कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश मिजोरम पहुंचे हैं। उन्होंने एमएनएफ और जेडपीएम पर जबरदस्त तरीके से निशाना साधा। उन्होंने कहा कि एमएनएफ (मिज़ो नेशनल फ्रंट), अब चतुराई से कहता है कि वह भाजपा से स्वतंत्र है... लेकिन हम सभी जानते हैं कि एमएनएफ और भाजपा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। उन्होंने कहा कि जेडपीएम (ज़ोरम पीपल्स मूवमेंट) अपेक्षाकृत नया है पार्टी...लेकिन इसका कोई कार्यक्रम, कोई संगठन और कोई विचारधारा नहीं है।

राहुल गांधी ने भी ठीक इसी तरीके का आरोप क्षेत्रीय दलों पर लगाया था। आगामी चुनावों में अपनी पार्टी के उम्मीदवारों के लिए प्रचार करने के लिए प्रमुख नेताओं, प्रियंका गांधी वाड्रा और शशि थरूर के मिजोरम जाने की उम्मीद है। मिजोरम कांग्रेस मीडिया सेल के अध्यक्ष लालरेमरूता रेंथली के अनुसार, प्रियंका गांधी और शशि थरूर 3 और 4 नवंबर को मिजोरम का दौरा करने वाले हैं। उनकी यात्राओं का उद्देश्य क्षेत्र में कांग्रेस के अभियान को ऊर्जा देना है।उम्मीद है कि प्रियंका गांधी अपने अभियान प्रयासों को मिजोरम के दक्षिणी और पश्चिमी हिस्सों में स्थित भाषाई अल्पसंख्यक क्षेत्रों में केंद्रित करेंगी। राज्य में, जयराम रमेश बहुआयामी भूमिका निभाएंगे, जिसमें एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करना, पार्टी नेताओं के साथ बैठकें करना और रैलियों और बैठकों के माध्यम से जनता से जुड़ना शामिल है। यह हाई-प्रोफाइल अभियान राहुल गांधी की हाल ही में मिजोरम की दो दिवसीय यात्रा के बाद आया है, जहां उन्होंने राज्यपाल के घर के पास एक रैली को संबोधित करते हुए राजभवन तक पदयात्रा की थी। अपनी यात्रा के दौरान, राहुल गांधी ने सत्तारूढ़ भाजपा की आलोचना की और देश में अल्पसंख्यक समूहों और आदिवासी समुदायों के सामने आने वाली चुनौतियों की ओर ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने इन मुद्दों के प्रति सरकार की कथित लापरवाही को उजागर किया और इसे तुष्टिकरण की राजनीति करार दिया।

कांग्रेस ने चुनाव आयोग से छिपाई महत्वपूर्ण जानकारी : हिमंत

गुवाहाटी। चुनाव आयोग की ओर से कथित सांप्रदायिक भाषण को लेकर असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा को कारण बताओ जारी किया गया है। बावजूद इसके सरमा ने अपने बयान का बचाव किया है और कहा है कि यह छत्तीसगढ़ के मंत्री मोहम्मद अकबर की वैध आलोचना थी। चुनाव आयोग ने आचार संहिता के प्रथम दृष्टया उल्लंघन के लिए गुरुवार को सरमा को कारण बताओ नोटिस भेजा और उनसे तीन अक्तूबर की शाम तक जवाब देने को कहा। वहीं, मुख्यमंत्री सरमा ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, कांग्रेस ने चुनाव आयोग से यह जानकारी छुपा ली थी कि कवर्धा सीट से मोहम्मद अकबर उनके उम्मीदवार हैं। इसलिए किसी उम्मीदवार की जायज आलोचना सांप्रदायिक राजनीति नहीं है।

खेल
प्रमुख समाचार

न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया का धर्मशाला में भिड़ंत आज

नईदिल्ली। वनडे विश्व कप 2023 में ऑस्ट्रेलिया का सामना न्यूजीलैंड से होगा। मुकाबला 28 अक्टूबर को एचपीसीए स्टेडियम, धर्मशाला में खेला जाएगा। मैच सुबह 10:30 से होगा। कीवी टीम 8 अंक लेकर तीसरे और कंगारू टीम 6 अंक लेकर चौथे स्थान पर काबिज है।

आत्मविश्वास से ओतप्रात ऑस्ट्रेलियाई टीम शनिवार को यहां न्यूजीलैंड के खिलाफ उतरेगी तो उसका लक्ष्य विश्व कप में उसके खिलाफ अपना शानदार रिकॉर्ड बरकरार रखने का होगा। मेजबान भारत और दक्षिण अफ्रीका से हारने के बाद लगातार तीन जीत दर्ज करके आस्ट्रेलियाई टीम ने वापसी की है। पिछले मैच में उसने नीदरलैंड को 309 रन से हराकर विश्व कप में सबसे बड़ी जीत दर्ज की।

पैट कमिंस की कप्तानी वाली आस्ट्रेलियाई टीम जीत का सिलसिला बरकरार रखते हुए सेमीफाइनल का अपना दावा पुख्ता करना चाहेगी। न्यूजीलैंड खिताब के प्रबल दावेदारों में से है लेकिन द्विपक्षीय वनडे और विश्व कप में आस्ट्रेलिया के खिलाफ उसका रिकॉर्ड अच्छा नहीं रहा है। न्यूजीलैंड ने आखिरी बार वनडे में आस्ट्रेलिया को छह साल पहले 2017 में हराया था।

न्यूजीलैंड- टॉम लैथम (कप्तान), डेवोन कॉनवे, विल यंग, मार्क चैपमैन, डेरिल मिशेल, जेम्स नीशाम, ग्लेन फिलिप्स, रचिन रविंद्र, मिशेल सेंटनर, ईश सोढी, टिम साउथी, ट्रेंट बोल्ट, लॉकी फर्ग्युसन और मैट हेनरी।

ऑस्ट्रेलिया- पैट कमिंस (कप्तान), स्टीव स्मिथ, एलेक्स कैरी, जोश इंगलिस, सीन एबॉट, एश्टन एगर, कैमरून ग्रीन, जोश हेजलवुड, ट्रेविस हेड, मिशेल मार्श, ग्लेन मैक्सवेल, मार्कस स्टोइनिस, डेविड वार्नर, एडम ज़म्पा, मिशेल स्टार्क।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/
प्रमुख समाचार

सेंसेक्स 635 अंक उछला निफ्टी 19,000 के पार

नईदिल्ली। मजबूत तिमाही नतीजों और ग्लोबल मार्केट से मिले पॉजिटिव रुझानों के बीच हफ्ते के आखिरी कारोबारी दिन यानी शुक्रवार को घरेलू शेयर बाजार में लगातार छह दिन से जारी गिरावट के सिलसिले पर ब्रेक लग गया। आज दोनों फ्रंटलाइन इंडेक्स सेंसेक्स और निफ्टी में अच्छी बढ़त दर्ज की गई। आज के कारोबार में बीएसई सेंसेक्स 635 अंक मजबूत हुआ। वहीं, निफ्टी में भी 202 अंक की बढ़त दर्ज की गई। बीएसई का 30 शेयरों वाला मानक सूचकांक सेंसेक्स 634.65 अंक यानी 1.01 फीसदी की उछाल के साथ 63,782.80 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान सेंसेक्स 63,913.13 की ऊंचाई तक गया और नीचे में 63,393.37 तक आया। वहीं, दूसरी तरफ नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी में भी 202.45 अंक यानी 1.07 फीसदी की बढ़त दर्ज की गई। निफ्टी दिन के अंत में 19,059.70 अंक पर बंद हुआ।

नायरा एनर्जी के एक्सपोर्ट में 22 प्रतिशत की गिरावट

नईदिल्ली। भारत की सबसे बड़ी निजी ईंधन खुदरा कंपनी नायरा एनर्जी ने शुक्रवार को कहा कि घरेलू खपत बढ़ने के कारण 2023 के पहले नौ महीनों में उसके पेट्रोलियम उत्पाद निर्यात में 22 प्रतिशत की गिरावट आई है। कंपनी की ओर से जारी एक बयान के अनुसार, नायरा ने जनवरी-सितंबर 2023 के बीच विमान ईंधन, डीजल और पेट्रोल सहित 45.7 लाख टन पेट्रोलियम उत्पादों का निर्यात किया, जबकि जनवरी-सितंबर 2022 में 58.8 लाख टन का निर्यात किया था। गिरावट का प्रमुख कारण घरेलू खपत का अधिक होना है। वहीं जनवरी-सितंबर 2023 के बीच नायरा ने यूरोप को पेट्रोल और डीजल की कोई आपूर्ति नहीं की। नायरा एनर्जी गुजरात के वाडिनार में प्रति वर्ष दो करोड़ टन का उत्पादन करने वाली तेल रिफाइनरी और 6,450 से अधिक पेट्रोल पंप का नेटवर्क संचालित करती है।

मारुति सुजूकी को हुआ अब तक का सबसे बड़ा मुनाफा

नईदिल्ली। भारत में कार बनाने वाली सबसे बड़ी कंपनी मारुति सुजूकी इंडिया ने वित्त वर्ष 24 की दूसरी तिमाही यानी सितंबर तिमाही में शानदार प्रदर्शन दर्ज किया है। एक्सचेंजों को दी गई जानकारी में कंपनी ने बताया कि उसने दूसरी तिमाही में 3,764 करोड़ रुपये का मुनाफा दर्ज किया, जो अभी तक का सबसे ज्यादा कंसोलिडेटेड नेट प्रॉफिट है। कंपनी ने कहा कि इतने बड़े मुनाफे की वजह उसकी बिक्री में अब तक की सबसे ज्यादा बढ़ोतरी रही। कंपनी ने आगे कहा कि कमोडिटी की कीमतों में नरमी, कीमतों को घटाने के उसके लगातार प्रयास और अनुकूल फॉरेक्स रेट होने की वजह से भी कंपनी को शानदार परफॉर्मेंस देखने को मिली। वित्त वर्ष 24 की दूसरी तिमाही में कंपनी का नेट प्रॉफिट 78.2 फीसदी बढ़कर 3,764 करोड़ रुपये हो गया है, जबकि पिछले साल की समान तिमाही में यह 2,112.5 रुपये था।

सिप्ला का मुनाफा सालाना आधार पर 45 प्रतिशत बढ़ा

नईदिल्ली। भारतीय फार्मा सेक्टर की दिग्गज कंपनी सिप्ला ने चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही के नतीजों का ऐलान कर दिया है। दवा कंपनी ने वित्त वर्ष 2023-24 की सितंबर तिमाही में 1,155.37 करोड़ रुपये का कंसोलिडेटेड नेट प्रॉफिट कमाया है। सालाना आधार पर कंपनी के मुनाफ़े में 44.9 प्रतिशत का इजाफा हुआ है। एक साल पहले की इसी तिमाही में सिप्ला ने 797.41 करोड़ रुपये का मुनाफा दर्ज किया था। वहीं, वित्त वर्ष 2023-24 की जून तिमाही में कंपनी ने 998.07 करोड़ रुपये का मुनाफा कमाया था। सिप्ला की कुल कमाई भी 2023-24 की जुलाई-सितंबर तिमाही में 14.41 प्रतिशत बढ़कर 6,589.22 करोड़ रुपये हो गयी जबकि बीते वित्त वर्ष की इसी तिमाही में यह 5,759.28 करोड़ रुपये थी।

आरबीआई की खुला बाजार परिचालन बिक्री से बॉन्ड यील्ड बढ़ने की उम्मीद

तमाल बंद्योपाध्याय

अगर हम बॉन्ड कारोबारियों से पूछें कि इन दिनों उनके दिमाग में कौन सी बात सबसे अधिक आ रही है तो अधिकांश यही कहेंगे कि भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा खुला बाजार परिचालन (ओएमओ) के जरिये सरकारी प्रतिभूतियों की प्रस्तावित बिक्री को लेकर वे ऊहापोह में हैं। तो इसकी शुरुआत कब होगी?

आरबीआई ने पिछली मौद्रिक नीति समीक्षा में ओएमओ बिक्री से संबंधित योजना की घोषणा की थी। आरबीआई ने सितंबर में द्वितीयक बाजार में स्क्रीन आधारित कारोबार के जरिये कुछेक हजार करोड़ रुपये मूल्य के बॉन्ड की बिक्री की थी। अब प्रस्तावित ओएमओ नीलामी के जरिये होगी। ओएमओ नकदी प्रबंधन का एक जरिया है और केंद्रीय बैंक समय-समय पर इसका इस्तेमाल करता रहता है। इसके परिणाम तीन स्तरों पर दिखते हैं। बैंकिंग प्रणाली से नकदी निकालना या इसमें नकदी डालना ओएमओ के तीन उद्देश्यों में एक है। यह प्रतिफल प्रबंधित करने का भी तरीका है। जब ओएमओ के माध्यम से बॉन्ड बेचे जाते हैं तो इससे बाजार में बॉन्ड की आपूर्ति बढ़ जाती है। इसका नतीजा यह होता है कि बॉन्ड पर प्रतिफल बढ़ जाता है। इस समय 10 वर्ष की परिपक्वता अवधि के बॉन्ड पर प्रतिफल लगभग 7.36 प्रतिशत के आसपास है।

6 अक्टूबर को मौद्रिक नीति समीक्षा में ओएमओ बिक्री की घोषणा के बाद यह 9 अक्टूबर को 7.39 प्रतिशत तक पहुंच गया था। चालू वित्त वर्ष में 17 मई को प्रतिफल 6.94 प्रतिशत के सबसे निचले स्तर पर आ गया था। वित्त वर्ष 2024 में सरकार ने बाजार से 15.43 लाख करोड़ रुपये उधार लेने का कार्यक्रम तैयार कर रखा है। इनमें लगभग

55.57 प्रतिशत या 8.88 लाख करोड़ रुपये सितंबर तक पहली छमाही में उधार लिए जा चुके हैं। दूसरी छमाही में अब तक 94,000 करोड़ रुपये उधार लिए गए हैं। संयोग से नवंबर और जनवरी 2024 के बीच 2.81 लाख करोड़ रुपये मूल्य के बॉन्ड भुनाए जाएंगे। इससे वित्तीय प्रणाली में नकदी बढ़ जाएगी। क्या आरबीआई इसी के साथ पहले चरण की ओएमओ नीलामी करेगा?

जब आरबीआई ने पिछली मौद्रिक नीति में ओएमओ के जरिये बॉन्ड बेचने की योजना बनाई थी तो 10 वर्ष की अवधि पर प्रतिफल 7.23 प्रतिशत से बढ़कर 7.35 प्रतिशत हो गया था। ओएमओ का इस्तेमाल प्रतिफल बढ़ाने और इसे कम करने दोनों ही उद्देश्यों के लिए किया जाता रहा है।

जब बॉन्ड पर प्रतिफल बढ़ता है तो इसकी कीमतें कम हो जाती हैं। ओएमओ की घोषणा कर आरबीआई ने कृत्रिम रूप से मार्च के आखिरी दिन बॉन्ड की कीमतें कम रखने का प्रयास किया था। आरबीआई ने बैंकों के लिए प्रावधान की आवश्यकता कम कर दी थी और अगर ऐसा नहीं किया गया होता तो उनके मुनाफे पर असर हुआ होता।

संयोग से अगले वित्त वर्ष से बैंकों के निवेश पोर्टफोलियो-हेल्ड टू मैच्योरिटी (एचटीएम) बास्केट-पर सीमा हटाई जा रही है। इसका मतलब हुआ कि अगर कोई बैंक अपना पूरा निवेश पोर्टफोलियो इस बास्केट रखता है तो इसे कोई एमटीएम नुकसान नहीं उठाना होगा। ओएमओ बिक्री का तीसरा मकसद स्थानीय मुद्रा में कमजोरी को दूर करना है। 16 अक्टूबर को रुपया अमेरिकी मुद्रा डॉलर की तुलना में 83.28 पर बंद हुआ था। यह रुपये का सबसे निचला स्तर था और अक्टूबर 2022 में कारोबार के दौरान 83.29 के सर्वाधिक निचले स्तर से थोड़ा ही कम रहा। सितंबर से छह सप्ताहों के दौरान भारत की विदेशी मुद्रा विनिमय दर लगभग 15.3 अरब डॉलर कम हो गई है। आरबीआई की तरफ से डॉलर की बिक्री के अलावा डॉलर की तुलना में रुपये के मूल्य में ह्रास और अन्य मुद्राओं के मुकाबले इसमें तेजी से विदेशी मुद्रा भंडार में कमी आई है। अगर ओएमओ बिक्री से सरकारी बॉन्ड पर प्रतिफल चढ़ता है तो अमेरिकी और भारतीय बॉन्ड के बीच प्रतिफल में अंतर अधिक हो जाएगा। इसमें कमी आती जा रही है। सोमवार को अमेरिका के 10 वर्ष की अवधि के बॉन्ड पर प्रतिफल 5 प्रतिशत को पार कर गया जो जुलाई 2007 के बाद सबसे ऊंचा स्तर है।

प्रचार का शोर, कही भाजपा तो कहीं कांग्रेस के दिग्गजों ने किया नामांकन

रायपुर। अंबिकापुर विधानसभा से चौथी बार बतौर कांग्रेस के उम्मीदवार छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव ने नामांकन दाखिल किया। नामांकन दाखिल करने के दौरान भारी संख्या में जनसैलाब देखने को मिला। वहीं टीएस सिंहदेव के साथ लुंड्रा विधानसभा क्षेत्र के उम्मीदवार व सीजीएमएससी के अध्यक्ष डॉ प्रीतम राम भी समर्थकों के साथ रैली में निकले थे। उन्होंने भी टीएस सिंहदेव के साथ अपना नामांकन भरा। वहीं रैली में अंबिकापुर महापौर व रामानुजगंज के उम्मीदवार डॉ अजय तिर्की ने भी हिस्सा लिया, साथ ही शहर के नागरिकों से टीएस सिंहदेव के लिए समर्थन मांगा।समर्थकों का उत्साह देख खुद उत्साहित उपमुख्यमंत्री ने मीडिया से चर्चा में कहा कि मैं इन्हीं समर्थकों और कार्यकर्ताओं की बदौलत हूँ। उन्होंने प्रदेश की राजनीति से जुड़े सवाल पर कहा कि मेरा सब फैसला जनता करती है। इन्हीं के बदौलत मेरे द्वारा निर्णय लिए जाते हैं और रहेंगे। मेरे जितने साथी हैं, जो भी निर्णय लेते हैं, उसी से मैं आगे बढ़ता हूं। कला केंद्र में कांग्रेस के द्वारा भव्य सभा का आयोजन किया गया था। परंतु मुख्यमंत्री बघेल देर से पहुंचे।

जांजगीर चाम्पा जिला के तीनों विधानसभा के बीजेपी प्रत्याशियों ने रैली निकाल कर आज नामांकन फार्म भरा। नामांकन से पहले नैला रेलवे स्टेशन के सामने से कचहरी चौक तक गाजा बाजा के साथ रैली निकली और कचहरी चौक मे आम सभा का आयोजन किया। बीजेपी की आम सभा को केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडिया ने सम्बोधित किया और राज्य सकरार पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कांग्रेस सरकार पर भ्रष्टाचार और और भय को संरक्षण देने का आरोप

लगाया। बीजेपी प्रत्याशियों के नामांकन से पहले कार्यकर्त्ताओं का उत्साह बढ़ाने पहुंचे केंद्रीय मंत्री का आभार जताते हुए अकलतरा विधानसभा के प्रत्याशी सौरभ सिंह और जांजगीर चाम्पा जिला के प्रत्याशी नारायण चंदेल ने बीजेपी की जीत का दावा किया।

कोरबा जिले में विधानसभा की चार सीटों के लिए भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशियों के द्वारा नामांकन भरने से पहले रैली की गई। इस अवसर पर झारखंड प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और जनजातीय मामलों के केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा खास तौर पर उपस्थित हुए। उन्होंने विश्वास के साथ कहा कि छत्तीसगढ़ में कुशासन और भ्रष्टाचार को लेकर जनता आक्रोशित है और वह बदलाव के मूड में है। कोरबा विधानसभा से लखन लाल देवांगन, रामपुर विधानसभा से ननकी रामकुमार, पालीतानाखार विधानसभा से रामदयाल उइके, कटघोरा से प्रेमचंद पटेल सभी भाजपा प्रत्याशियों के द्वारा नामांकन भरे जाने के लिए संगठन के द्वारा तिथि तय की गई जिसके अंतर्गत कार्यक्रम रखा गया। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा इस मौके पर आमंत्रित किए गए।

कांग्रेस से बागी हुए गुलाब राज

मरवाही विधानसभा से कांग्रेस के वरिष्ठ आदिवासी नेता जो पार्टी के द्वारा अनदेखी किये जाने से नाराज होकर जेसीसीजे में प्रवेश कर लिया जिसके बाद आज गुलाब राज जिला निर्वाचन कार्यालय पहुचकर नामांकन फार्म खरीदा है। इस दौरान गुलाब राज मीडिया से बात करते हुए स्थानीय कांग्रेसी नेताओं पर गंभीर आरोप लगाए उन्होंने कहा कि वे 2009 से माननीय चरण दास महंत जी के साथ जुड़कर कार्य कर रहे थे, लेकिन कोरोना काल के दौरान उनके पिता का देहांत हो गया जिसके बाद से महंत जी का कोई फोन नहीं आया जिससे वह खासा नाराज दिखे। वहीं उन्होंने कहां की मरवाही विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस की ओर से दावेदारी के लिए 27 लोगों ने कांग्रेस जिला कार्यालय में आवेदन दिए थे जिसमें किसी एक को भी कांग्रेस ने अपना प्रत्याशी नहीं बनाया।

कर्ज माफी कांग्रेस का झूठा वादा- केंद्रीय मंत्री

गरियाबद जिले की दो विधानसभाओं के भाजपा प्रत्याशियों ने केंद्रीय मंत्री मिनाक्षी लेखी के नेतृत्व में नामांकन दाखिल किया। जहां राजिम विधानसभा से रोहित साहू ने तो ब्रिद्रानवागढ से गोर्वधन मांझी नें हजारों की भीड के साथ रैली के रूप में गांधी मैदान से गाजे बाजे व भव्य आतिश बाजी के साथ नामाकंन दाखिल किया। नगर के गांधी मैदान में भाजपा नेताओं के नेतृत्व में भव्य जनसभा का आयोजन किया गया। सांसद चुन्नी लाल साहू ने दोनों विधानसभा में कमल खिलाने की बात कही। मंच से मिनाक्षी लेखी ने कहा कि दोनों विधानसभा के प्रत्याशी मोदी के प्रतिनिधी हैं इन्हें मोदी ने चुनकर आप लोगों की सेवा के लिए भेजा है। जिस प्रकार से मोदी देश की सेवा कर रहे है उसी प्रकार से यह लोग भी आपकी सेवा करेंगे।

केन्द्रीय मंत्री का बघेल सरकार पर हमला

केंद्र सरकार के पेट्रोलियम राज्य मंत्री रामेश्वर तेली आज पेण्ड्रा पहुंचे जहां पर भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में आमसभा को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री को कहा ये मुख्यमंत्री नहीं कांग्रेस के एटीएम हैं। यहां का पैसा दूसरे राज्यों में फूंक रहे हैं। मरवाही के भाजपा प्रत्याशी प्रणव मरपच्ची नामांकन रैली एवं आम सभा में भाग लेने रामेश्वर तेली पेण्ड्रा पहुंचे थे। जहां पर उन्होंने मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को लिया आडे हाथों लिया। मरवाही विधानसभा से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी प्रणव मरपच्ची की नामांकन रैली एवं आमसभा में केंद्र सरकार के पेट्रोलियम राज्य मंत्री रामेश्वर तेली मुख्य वक्ता के रूप में कही। सरस्वती शिशु मंदिर पेण्ड्रा में आयोजित सभा को सम्बोधित करते हुये केंद्रीय मंत्री रामेश्वर तेली ने कहा की कांग्रेस सरकार ने पिछले चुनाव में किये गए वादों को पूरा नही किया।

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के छत्तीसगढ़ दौरे के दौरान बीजेपी सरकार आने पर भष्टाचारियों को उल्टा लटकाने की बात पर सीएम भूपेश बघेल ने पलटवार किया है। अंबिकापुर में बघेल ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि अमित शाह डॉ. रमन सिंह को उल्टा क्यों नहीं लटकाते हैं। आरोप लगाया कि भाजपा शासन काल में जमकर कमीशनखोरी हुई थी। उनकी जांच कर कार्रवाई क्यों नहीं कराते हैं?

भाजपा प्रत्याशी पुरंदर मिश्रा ने शुभ मुहुर्त में जमा किया नामांकन

रायपुर। विधानसभा चुनाव-2023 के लिए उत्तर रायपुर विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी पुरंदर मिश्रा ने शुक्रवार को शुभ मुहुर्त में नामांकन फार्म जमा किया। कलेक्ट्रेट कार्यालय के कक्ष क्रमांक-12 में विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 50 के रिटर्निंग आफिसर वीरेंद्र बहादुर पंचभाई के समक्ष रायपुर उत्तर से भाजपा प्रत्याशी पुरंदर मिश्रा ने अपने दो प्रस्तावकों के साथ नामांकन फार्म जमा किया। नामांकन फार्म जमा करने के बाद मीडिया से चर्चा करते हुए भाजपा प्रत्याशी पुरंदर मिश्रा ने कहा, जीत के लिए शत प्रतिशत आश्वत हैं। रायपुर उत्तर विधानसभा क्षेत्र छत्तीसगढ़ का दिल है। इस क्षेत्र में राजधानी के व्यापारी व अधिकारी रहते हैं। चुनाव जीतने के बाद यहां कि यातायात व्यवस्था व पुलिस प्रशासन को चुस्त दुरुस्त करेंगे ताकि व्यापारी भय मुक्त होकर व्यापार कर सकें। उन्होंने कहा, क्षेत्र की जनता जो बोलेगी वहीं मेरा मुद्दा है। शहर में सड़क, बिजली, पानी, आवास उपलब्ध कराना उनकी प्राथमिकता होगी। वहीं युवाओं के रोजगार का जो सपना पीएससी के भ्रष्टाचार के कारण टूटा हैं उसको ठीक करना मेरी जवाबदारी होगी।

भाजपा लाती है काले कृषि कानून, हम करते हैं कर्जमाफ़ी : भूपेश बघेल

रायपुर। बीजेपी किसान विरोधी है। केंद्र की मोदी सरकार तीन काले कृषि कानून लागू करती है, जिसके खिलाफ आंदोलन में 800 किसानों की जान चली गई। हमारी कांग्रेस की सरकार किसानों का कर्ज माफ करती है, तो बीजेपी के पेट में दर्द होता है। यह बात मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने आज रायगढ़ में हुई जनसभा में कही।

जनसभा में मुख्यमंत्री श्री बघेल ने कहा कि छत्तीसगढ़ में 15 साल तक बीजेपी सरकार ने किसानों को ठगने का काम किया। 2014 से 2018 तक यहां भी डबल इंजन की सरकार थी। उस डबल इंजन की सरकार में किसानों पर अत्याचार कर कहर बरपा दिया गया था। बीजेपी बोनस के वादे से मुकर गई। 15 क्विंटल धान खरीदी को 10 क्विंटल कर दिया गया। जब केंद्र में यूपीए की सरकार थी, तो धान खरीदी पर किसानों को 50 से 60 रुपये बोनस मिलता था। 80 लाख मीट्रिक टन धान खरीदी होती थी। मोदी जी के आते ही बोनस मिलना बंद हो गया और धान खरीदी भी घटकर 56 मीट्रिक टन हो गई।

मुख्यमंत्री ने कहा कि छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार में आम जनता की आय बढ़ी है। हम बटन दबाते हैं तो किसानों, भूमिहीन मजदूरों, गोबर विक्रेताओं की जेब में पैसा जाता है। कोरोना के समय में कांग्रेस की सरकार ने तीन महीने का राशन एडवांस में जरूरतमंदों को पहुंचाया। 26 लाख लोगों को मनरेगा से काम दिया। जबकि रमन सिंह और बीजेपी की सरकार में हर वर्ग को ठगने का काम किया गया। चिटफंड कंपनी के पैसे खाए, नान घोटाला, चावल घोटाला किया। यहां तक कि टिफिन, चप्पल, मोबाइल वितरण तक में कमीशन खाया।मुख्यमंत्री श्री बघेल ने कहा कि मोदी जी कहते हैं कि छत्तीसगढ़ में धान खरीदी केंद्र सरकार करती है।

सपरिवार चुनाव प्रचार में उतरे मूणत

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता, पूर्व कैबिनेट मंत्री और रायपुर पश्चिम विधानसभा से भाजपा प्रत्याशी राजेश मूणत का सघन जनसंपर्क अभियान जारी है। शुक्रवार को उन्होंने रायपुर पश्चिम विधानसभा क्षेत्र के कई वार्डों का दौरा किया। जिसमे ठक्कर बापा वार्ड, वीर शिवाजी वार्ड ,नेताजी कन्हैयालाल बाजारी वार्ड, दानवीर भामाशाह वार्ड, बाल गंगाधर तिलक वार्ड, एपीजे अब्दुल कलाम वार्ड, रामकृष्ण परमहंस वार्ड शामिल रहे। *मुख्यमंत्री भूपेश बघेल पर साधा निशाना, कहा - श्रेष्ठ से डरते क्यों हैं कांग्रेसी ?* राजेश मूणत ने अपने चुनावी अभियान के दौरान पत्रकारों से चर्चा के दौरान मुख्यमंत्री भूपेश बघेल पर कटाक्ष किया। उन्होंने सीएम भूपेश बघेल पर प्रवर्तन निदेशालय और भाजपा के संबंध में की जा रही टिप्पणियों पर पलटवार करते हुए कहा कि एक मुख्यमंत्री द्वारा केंद्रीय जांच एजेंसियों पर इस तरह की बयानबाजी करना सही नहीं हैं। उन्होंने आगे कहा कि मुख्यमंत्री जिस प्रकार की भाषा का इस्तेमाल कर रहे हैं,वह उनकी बौखलाहट को ज़ाहिर करती है। मूणत ने आगे कहा कि जो व्यक्ति सही है,उसे किसी बात का भय नहीं होना चाहिए, अगर आप सही हैं, तो ईडी से डरते क्यों हैं? जांच में सहयोग कीजिए, दूध का दूध पानी का पानी हो जाने दीजिये। किन्तु कांग्रेस की पूरी दाल की काली है,इसलिए भूपेश बघेल समेत पूरी कांग्रेस बौखलाई हुई है। *चुनाव प्रचार में उतरा मूणत परिवार* राजेश मूणत के प्रचार अभियान के दौरान भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं के अलावा उनका परिवार भी कदम से कदम मिलाकर चल रहा है।

छत्तीसगढ़/राजधानी
प्रमुख समाचार

15 साल तक करती रही आदिवासियों का शोषणः बैज

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं सांसद दीपक बैज ने कहा कि आदिवासियों को लंगोट में रखने का षड़यंत्र तो भाजपा ने कर रखा था। भाजपा कभी नहीं चाहती कि आदिवासी वर्ग आर्थिक और शैक्षणिक रूप से आत्मनिर्भर बने। भाजपा आदिवासियों का और उनकी संस्कृति का हमेशा से दमन करना चाहती है। भाजपा यदि आदिवासियों का हित चाहती तो अभी तक आदिवासी समाज का आरक्षण बिल 10 माह से ज्यादा समय से राजभवन में अटका हुआ नहीं होता। कोर्ट ने आदिवासी समाज का आरक्षण 32 प्रतिशत से घटाकर 20 कर दिया था। कांग्रेस सरकार ने विधानसभा का विशेष सत्र बुलाकर आदिवासी समाज का आरक्षण फिर से 32 प्रतिशत किया, ओबीसी का आरक्षण 27 प्रतिशत, एससी का 13 प्रतिशत तथा ईडब्ल्यूएस का 4 प्रतिशत आरक्षण किया। यह आरक्षण संशोधन विधेयक भाजपा की साजिश एवं षड़यंत्र के कारण पिछले 10 माह से राजभवन में रोका गया है। पूर्व के रमन सरकार के 15 साल के दौरान सबसे ज्यादा पीड़ित, प्रताड़ित और शोषित आदिवासी वर्ग ही था। आदिवासियों के जल, जंगल, जमीन पर कब्जा करने के लिए उनके कानूनी अधिकारों का हनन करने का काम भाजपा सरकार करती रही। 15 सालों में रमन सरकार ने आदिवासियों की 90000 एकड़ से अधिक जमीन पूंजीपतियों को सौंप दी।

जिन्होंने लूट लूटकर काला धन रखा है, वे ही ईडी से डरते हैंः लेखी

रायपुर। विदेश राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि ईडी, आईटी के नाम से कौन डरेगा? जिसने चोरी की, उसे तो पुलिस से डरना ही चाहिए। जिसने लूट लूटकर अपार धन दौलत, काला धन जमा किया है तो उसे ईडी आईटी से डरना चाहिए। हम तो हमेशा कांग्रेस की खिलाफत करते रहे हैं। हमारे पूर्वज भी विरोध करते रहे। न हमारे पूर्वज कभी कांग्रेस से डरे और न हम डरते।

जो काला धन रखे हैं, उन्हें पकड़े जाने का डर है। जिन्होंने कुछ गलत तरीके से धन नहीं जमा किया है, उन्हें ईडी आईटी का डरने की जरूरत नहीं है। लेकिन वे लोग ही जांच एजेंसियों के खिलाफ बोल रहे हैं, जिन्हें इनकी कार्रवाई से डर लगता है। यह डर क्यों है?गौरतलब है कि कांग्रेस के केंद्रीय नेताओं से लेकर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री तक ईडी आईटी के खिलाफ लगातार आरोप लगा रहे हैं। जब दिल्ली में राहुल गांधी, सोनिया गांधी से नेशनल हेराल्ड मामले में पूछताछ की गई तो छत्तीसगढ़ में भूपेश बघेल के नेतृत्व में कांग्रेस ने ईडी दफ्तर के सामने प्रदर्शन किया था और जब कांग्रेस के स्थानीय नेताओं को पूछताछ के लिए बुलाया गया, तब तब कांग्रेस ने ईडी दफ्तर के सामने ढोल नगाड़े बजाए। हाल ही में 175 करोड़ का कस्टम मिलिंग घोटाला उजागर होने पर मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने फिर ईडी का विरोध किया है। आज विदेश राज्यमंत्री मीनाक्षी लेखी ने जमकर जवाब देते हुए कह दिया कि जो काला धन रखे हुए हैं, वे ईडी आईटी से डर रहे हैं।

छत्तीसगढ़ में ईडी कुत्ता-बिल्ली के जैसे ही घूम रहीः शुक्ला

रायपुर। ''छत्तीसगढ़ में ईडी कुत्ते-बिल्ली के जैसे घूम रही है'' इस बात से रमन सिंह की बौखलाहट बताती है तीर निशाने पर लगा है। प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि रमन सिंह की बौखलाहट स्वाभाविक है ईडी जो पटकथा लिखती है रमन सिंह उसको पढ़ते है। रमन सिंह ईडी के प्रवक्ता हैं और ईडी रमन सिंह की संरक्षक, यही कारण है कि ईडी रमन सिंह के नान घोटाले और चिटफंड घोटाले की जांच नहीं कर रही है। छत्तीसगढ़ में ईडी की जब छापेमारी होती है तो ईडी के छापे में क्या मिलने वाला है यह रमन सिंह दो दिन पहले ही प्रेसनोट जारी करके बता देते है। ईडी भाजपा नेताओं की सलाह पर पटकथा लिखती है तथा भाजपा के नेता रट्टू तोते की भांति उसको पढ़ते है।प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि रमन के 15 सालों के कार्यकाल में 1 लाख करोड़ का घोटाला हुआ था। रमन सिंह देश के भ्रष्टतम मुख्यमंत्रियों में गिने जाते थे। रमन सिंह का बेटा उनके भ्रष्टाचार के पैसे को जमा करने के लिये विदेशों में खाता खुलवाता है और काले धन वालों की सूची पनामा पेपर में अभिषेक सिंह का नाम आता है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने प्रधानमंत्री और इन्फोर्समेंट डायरेक्टर को पत्र लिखकर नान और चिटफंड घोटाले की जांच कराने का अनुरोध किया था।

मार्च में हो सकती है सीजी बोर्ड की 10-12वीं की परीक्षाएं

रायपुर। अगले वर्ष 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव को देखते हुए छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा बोर्ड दसवीं और बारहवीं की परीक्षाएं मार्च में आयोजित करने की मंशा बना ली है। अगले वर्ष लोकसभा चुनाव मई में होने हैं और इसके चलते सभी कक्षाओं की वार्षिक परीक्षाएं भी मार्च में संपन्न हो जायेंगी। बताया जाता है कि छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा बोर्ड दसवीं और बारहवीं के परीक्षाओं की तिथी दीपावली के बाद घोषित कर सकता है। परीक्षा के आयोजन को लेकर छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने कोई अधिकृत जानकारी या सूचना जारी नहीं की है। मई में संभावित लोकसभा चुनावों में शाला भवनों का मतदान केंद्र के लिये उपयोग स्कूल बसों के अलावा शिक्षकों की ड्यूटी भी चुनाव में लगाने के कारण मार्च में सभी परीक्षाएं संपन्न कराने के प्रयास किये जा रहें हैं।सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार निजी स्कूलों में इसकी प्रारंभिक तैयारियां भी शुरू हो गई है। दीपावली अवकाश के बाद छात्रों पर पढ़ाई का दबाव होगा और शिक्षकों पर पाठ्यक्रम पूरा कराने का।दिसंबर माह में स्कूलों में होने वाले वार्षिक खेलकूद और वार्षिकोत्सव का स्वरूप या तो छोटा हो सकता है अथवा इसे स्थगित भी किया जा सकता है।

टिकट कटने से कांग्रेस के सामने विकट स्थितिः चोपड़ा

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता और पूर्व विधायक डॉ. विमल चोपड़ा ने कहा है कि टिकट वितरण के बाद मचे घमासान के चलते कांग्रेस के लिए विकट परिस्थिति बन गई है। कांग्रेस में विद्रोह की जो चिंगारी सुलगी है, वह अब प्रदेश के चारों कोनों में फैल रही है। डॉ. चोपड़ा ने भारी अंतर के साथ पिछले चुनाव में जीतकर पहुँचे 22 विधायकों के टिकट कांग्रेस

द्वारा काटे जाने पर कहा कि कांग्रेस ने टिकट काटकर यह संदेश दिया है कि इन विधायकों ने जनता का विश्वास खो दिया है। फिर भी कांग्रेसी अपनी सरकार को भरोसे की सरकार बता रहे हैं, जो पूरी तरह जनता का विश्वास खो चुकी है और यह आगामी 3 दिसम्बर को आईने की तरह साफ होने जा रहा है। जब कांग्रेस भरोसे की सरकार के जुमले पर इठला रही है तो फिर 22 विधायकों की टिकट क्यों काटी गई? डॉ. चोपड़ा ने कहा कि कांग्रेस को जवाब देना चाहिए कि यह विधायक टारगेट पूरा नहीं कर पाए, क्या इसलिए टिकट कटी? या फिर, कांग्रेस मानकर चल रही है इतना प्रचंड बहुमत मिलने के बावजूद न तो प्रदेश सरकार जनता की उम्मीद पर खरी उतरी, न ही कांग्रेस के विधायक। कांग्रेस के ही विधायक कह रहे हैं की रिपोर्ट कार्ड तो औरों का ही खराब था, फिर हमारी टिकट क्यों काटी? स्थिति यह हो चली है कि अब तो कांग्रेसी भी चाहने लगे हैं कि भाजपा प्रदेश में चुनाव जीतकर पूर्ण बहुमत की सरकार बनाए।

ईडी आईटी छापे को लेकर सीएम बघेल के आरोप लगाने के बाद डॉ. रमन सिंह का करारा जवाब

जनता का आक्रोश देख मानसिक संतुलन खो बैठी है कांग्रेस

रायपुर। ईडी आईटी के छापे को लेकर मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के भाजपा पर आरोप लगाने के बाद पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने करारा जवाब दिया है, उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ में पिछले 5 साल में भ्रष्टाचार के नए-नए कीर्तिमान स्थापित करने के बाद अब सबसे ज्यादा कोई कांग्रेसी डरा हुआ है तो वो मुख्यमंत्री भूपेश बघेल हैं, कोई भ्रष्टाचार करेगा तो श्रेष्ठ नहीं आएगी तो भारत रत्न के लिए निमंत्रण आएगा क्या? इस भ्रष्ट कांग्रेस सरकार के कई अधिकारी, कर्मचारी, कलेक्टर महीनों से जेल में बंद हैं, जमानत तक नहीं हो पा रही है तो यह तो कल ये भी कह देंगे कि न्यायालय को भी भाजपा कंट्रोल कर रही है,दरअसल प्रदेशवासियों का भारी आक्रोश और आगामी विधानसभा चुनाव में अपनी हार देखकर कांग्रेस अपना मानसिक संतुलन खो बैठी है।

ईडीऔर आईटी यह संवैधानिक संस्थाएं हैं यह किसी व्यक्ति विशेष या सरकार के दबाव में काम नहीं करती हैं।पिछले 5 साल में कांग्रेस सरकार ने इतने घोटाले कर दिए कि गिनना मुश्किल है, भविष्य में भूपेश बघेल सत्ता में तो नहीं आयेंगे लेकिन जब भी हिंदुस्तान के बड़े लुटेरों की चर्चा चलेगी तो उसमें जरुर भूपेश बघेल का नाम आएगा।

इन्होंने 700 करोड़ के धान मिलिंग घोटाले के साथ जितने क्षेत्र छत्तीसगढ़ के स्वाभिमान और विकास से जुड़े हैं उन सभी में लूट की है-धान का कटोरा कहलाता है हमारा छत्तीसगढ़ यहाँ धान की मिलिंग में 700 करोड़ का घोटाला किया।

हमने प्रदेश के 58 लाख गरीब परिवारों 1 रूपए किलों चावल देकर प्रदेश से भुखमरी समाप्त की इन्होंने गरीबों के मुँह का निवाला छीन लिया, 600 करोड़ का पीडीएस घोटाला और पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना में 5 हजार करोड़ का घोटाला किया। ईश्वर ने हमारे छत्तीसगढ़ को संसाधनों से समृद्ध किया है यहाँ कोयले में 540 करोड़ का घोटाला किया। प्रदेश की लाखों माताओं-बहनों को शराबबंदी का वादा करके शराब में 2 हजार करोड़ से ज्यादा का घोटाला किया।छत्तीसगढ़ के युवाओं से सीजीपीएससी में धोखा करके कांग्रेसी नेताओं और बड़े अधिकारीयों के बच्चों को नौकरी दे दिए।हम गौ माता को पूजते हैं, इन्होंने गौठान के नाम पर 1300 करोड़ और तो और गोबर तक में 229 करोड़ का घोटाला किया और जो थोड़े बहुत गौठान बनाये उनमें गायें व्यवस्था के आभाव में मरती रहीं। इन सब काले कारनामों के बाद भी इस तरह कुत्ते, बिल्ली जैसे शब्दों के साथ अभद्र भाषा का प्रयोग करना शायद आज के समय में स्वयं को सच्चा कांग्रेसी साबित करना है।

राजभवन कर्मियों ने जाना आग के प्रकार

- अधिकारियों और कर्मचारियों को दिया गया अग्नि दुर्घटना से बचाव का प्रशिक्षण

रायपुर। कार्यालय एवं घरों में आकस्मिक अग्नि दुर्घटना होने पर रोकथाम एवं बचाव के लिए आज राजभवन के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अग्निशमन विभाग की टीम द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

प्रशिक्षण में बताया गया कि आग कितने प्रकार की होती है। किस प्रकार की आग से बचाव के लिए कौनसा अग्निशमन यंत्रो का प्रयोग किया जाता है। बिजली से लगने वाली आग से कैसे बचें, कार्यालय में आग लगने की दशा में कैसे बचाव करें और इसकी रोकथाम के उपाय बताए गये। वाहनों में किस प्रकार अग्निशमन यंत्र रखा जाए यह बताया गया। घर में एल.पी.जी. गैस सिलेंडर, कढाई में तेल से आग लगने की दशा में बाल्टी, कम्बल से आग बुझाने के तरीके प्रदर्शन के माध्यम से बताएं गये। खुद पर एवं अन्य व्यक्ति पर लगे आग को कैसे बुझाएं इसका भी प्रशिक्षण दिया गया।

राजभवन परिसर में आयोजित इस प्रशिक्षण में जिला सेनानी दुर्ग श्री नागेंद्र सिंह, फायर स्टेशन टिकरापारा रायपुर के सहायक उपनिरिक्षक श्री दीपक कौशिक, श्री अनिल साहू, श्री रोशन सिंह, फायर मैन श्री जितेंद्र भट्ट, श्री विजय चौरागढ़े और श्री हरीश पाल द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.